इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गाँधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

BES-121
बाल्यावस्था और वृद्धि

खण्ड

1

बाल्यावस्था और किशोरावस्था को समझना

इकाई 1

बाल्यावस्था और किशोरावस्था की अवधारणा 7

इकाई 2

सामाजीकरण एवं विविध परिस्थितियों में वृद्धि 25

इकाई 3

सामाजीकरण के अभिकरण 47

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विशेषज्ञ समिति

प्रो. आई. के. बंसल (अध्यक्ष)
पूर्व अध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

प्रो. श्रीधर वसिष्ठ
पूर्व कुलपति
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

प्रो. परवीन सिंक्लेयर
पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. ऐजाज मसीह
शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

प्रो. प्रत्यूष कुमार मंडल
डी.ई.एस.एस.एच.
राष्ट्रीय अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

प्रो. अंजू सहगल गुप्ता
मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,नई दिल्ली

प्रो. एन.के. दाश (निदेशक)
शिक्षा विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रो. एम.सी. शर्मा
(कार्यक्रम समन्वयक बी.एड)
शिक्षा विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह
(कार्यक्रम सहसमन्वयक बी.एड)
शिक्षा विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित (शिक्षा विद्यापीठ संकाय)

प्रो. वेंकटेश्वरलू
प्रो. अमिताभ मिश्रा
प्रो. पूनम भूषण
प्रो. आयशा कन्नड़ी
डॉ. एम.वी. लक्ष्मी रेड्डी
डॉ. भारती डोगरा
डॉ. वन्दना सिंह
डॉ. एलिजाबेथ कुरूविला
डॉ. निराधार डे
डॉ. अंजुली सुहाने

पाठ्यक्रम समन्वयक : डॉ. एलिजाबेथ कुरूविला, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

पाठ्यक्रम निर्माण दल

इकाई 1
डॉ. एलिजाबेथ कुरूविला
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

इकाई 2
डॉ. अमिता पुरी
एसोसिएट प्रोफेसर
एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियर ऐंड एलाइड साइंसेज, एमिटी विश्वविद्यालय
हरियाणा

इकाई 3
डॉ. लेथा राम मोहन
सीनियर प्रोजेक्ट एसोसिएट
एजूकेशन ऐंड चाईल्ड
अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विषयवस्तु संपादन
प्रो. जेसी अब्राहम
आई.ए.एस.ई. शिक्षा संकाय
जामिया मिलिया इस्लामिया
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संरचना एवं प्रारूप संपादन
डॉ. एलिजाबेथ कुरूविला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

अनुवादक दल

अनुवादक
डॉ. दयाशंकर मिश्रा
प्रवक्ता
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय
होज़रानी, नई दिल्ली

डॉ. सत्यवीर सिंह
प्रधानाचार्य
एस.एन.आई. कॉलेज
पिल्लाना, उत्तर प्रदेश

हिन्दी पुनरीक्षण
डॉ. अभिषेक तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली

प्रूफ रीडिंग
डॉ. दयाशंकर मिश्रा
प्रवक्ता
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय
होज़रानी, नई दिल्ली

सचिवालयीय सहायक
मोहम्मद इमरान राइनी
जे.ए.टी. शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

ईशा कुमारी
डाटा ऐंट्री ऑपरेटर
शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री उत्पादन

प्रो. सरोज पाण्डेय (निदेशक)
शिक्षा विद्यापीठ
इं.गां.रा.मु.वि.
नई दिल्ली

श्री एस. एस. वेंकटचलम
सहायक सचिव(प्रकाशन),
शिक्षा विद्यापीठ
इं.गां.रा.मु.वि.
नई दिल्ली

सितम्बर, 2016
© : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2016
ISBN :
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बगैर किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।
लेजर टाइप सैट– ग्राफिक प्रिंटर्स, 204, पंकज टॉवर, मयूर विहार फेस 1, दिल्ली – 110091
मुद्रण – चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क्स (प्रा.) लिमिटेड, सी–40, सेक्टर 8, नोएडा 201301

BES-121: बाल्यावस्था और वृद्धि

खण्ड 1: बाल्यावस्था और किशोरावस्था को समझना

इकाई 1 **बाल्यावस्था और किशोरावस्था की अवधारणा**

इकाई 2 **सामाजीकरण एवं विविध परिस्थितियों में वृद्धि**

इकाई 3 **सामाजीकरण के अभिकरण**

खण्ड 2: वृद्धि : शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था

इकाई 4 वृद्धि और विकास की समझ

इकाई 5 बाल विकास में विभिन्न परिप्रेक्ष्य

इकाई 6 बाल विकास के आयाम

इकाई 7 बच्चों और किशोरों के अध्ययन की विधियाँ

खण्ड 3: बाल्यावस्था और किशोरावस्था में क्रांतिक वाद—विवाद

इकाई 8 संचार माध्यमों के साथ विकास

इकाई 9 किशोरों को प्रभावित करने वाले समकालीन मुद्दे

इकाई 10 किशोरों के लिए जीवन कौशल शिक्षा

इकाई 11 बालकों के अधिकार और कानून—व्यवस्था

पाठ्यक्रम परिचय

यह पाठ्यक्रम बाल्यावस्था, बाल विकास और किशोरावस्था के अध्ययन का परिचय प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य आपको बच्चे की विकासात्मक प्रक्रिया और बाल विकास में निर्धनता, वर्ग तथा लिंग के अन्तर्सम्बन्ध के प्रति चिन्तन कराना है। आप जानते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में बच्चे बिल्कुल भिन्न तरीके से विकसित होते हैं और विकास को किस प्रकार संस्कृति और बच्चे के निकटस्थ पर्यावरण द्वारा आकार प्रदान किया जाता है। यह बाल्यावस्था, किशोरावस्था और वृद्धि की प्रक्रिया की संकल्पना का परीक्षण करने का प्रयत्न करता है। पाठ्यक्रम का मुख्य ध्यान आपको एक समझ पर पहुँचने के योग्य बनाना होगा कि, किस प्रकार विभिन्न सामाजिक – राजनीतिक तथ्य जीवन–परिस्थितियों में विभिन्न बाल्यावस्थाओं का निर्माण करते हैं और बच्चे के सामाजीकरण के विविध अभिकरणों का पता लगाना है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य विषय अलग–अलग परिस्थितयों में वृद्धि (बढ़ने) की प्रक्रिया को समझना है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :–

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् आप :

- बाल्यावस्था और किशोरावस्था की अवधारणाओं में अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे;
- विविध परिस्थितियों में बच्चों की वृद्वि की प्रक्रिया की समझ को विकसित कर सकेंगे;
- बाल विकास में विभिन्न परिप्रेक्ष्यों की जाँच कर सकेंगे;
- बच्चों के विकास पर पारिवारिक जीवन, विद्यालयी शिक्षा, सहपाठी और मीडिया (संचार माध्यम) जैसे विकासात्मक सन्दर्भों के प्रभाव पर विश्लेषण एवं चिन्तन कर सकेंगे;
- बच्चों एवं किशोरों के मुद्दों और जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रमों (Life Skills Education Programme) के विकास की आवश्यकता पर चर्चा कर सकेंगे।

यह पाठ्यक्रम मानव विकास को व्यापक परिप्रेक्ष्य में रेखांकित करता है। जब हम मानव विकास के सिद्धान्तों का परीक्षण व्यावहारिक दृष्टि से करते हैं तो हम विविध प्रकार के प्रश्नों का सामना करते हैं : वृद्धि किस प्रकार घटित होती है? विभिन्न प्रकार की संस्कृतियाँ वृद्धि को किस प्रकार प्रभावित करती हैं? इसी तरह के और भी बहुत सारे प्रश्न हो सकते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों की चर्चा इस पाठ्यक्रम में की जायेगी। इस पाठ्यक्रम में की गई चर्चा जैविक, जीवन–अवधि, जैव–पारिस्थतिक, संज्ञानात्मक एवं सामाजिक– सांस्कृतिक जैसे विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में विकासात्मक प्रक्रिया पर विचार करने में आप की सहायता करेगी।

आप किशोरों द्वारा सामना की जा रही विविध समस्याओं को और बाल्यावस्था तथा वयस्कावस्था के बीच संक्रमण काल को भी समझेंगें जिनकी विशेषताएं शारीरिक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों द्वारा बताई जाती हैं। अधिकांश सामाजिक, आर्थिक व वैयक्तिक कारकों का सरोकार अभिभावकों, अध्यापकों और समुदायों से होता है। इन विभिन्न कारकों में संतुलन स्थापित करने के लिए बच्चों की मदद करने से ऐसी स्थितियाँ कम हो सकती हैं जो समस्यात्मक हो सकती हैं। इस पाठ्यक्रम में आप बच्चो को जीवन–कौशल शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता को भी समझेंगे।

इस पाठ्यक्रम में तीन खण्ड हैं जिन्हें विषयानुसार सुव्यवस्थित किया गया है। प्रत्येक खण्ड को इकाईयों में विभाजित किया गया है। **खण्ड एक** में तीन इकाईयाँ हैं जिनमें

'बाल्यावस्था और किशोरावस्था को समझना' विषय पर प्रकाश डाला है। इकाई एक में हमने बाल्यावस्था और किशोरावस्था के विभिन्न अर्थो का विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में चर्चा की है। इकाई दो में विविध परिस्थितियों में बच्चों के सामाजीकरण और वृद्धि के अनुभवों पर बल दिया गया है। इकाई तीन में सामाजीकरण की अवधारणा और सूक्ष्म, मध्य और वृहत स्तरों पर सामाजीकरण के विविध अभिकरणों का पुनरावलोकन किया गया है।

खण्ड दो को **'वृद्धिः शैशवावस्था और प्रौढ़ावस्था'** विषय पर केन्द्रित चार इकाइयों में समाविष्ट किया गया है। इकाई चार में वृद्धि और विकास की आधारभूत अवधारणाओं पर विचार किया गया है। इसके बाद हमने कुछ मूलभूत मुद्दों पर चर्चा की है कि किस प्रकार विकास घटित होता है। इकाई पाँच में हमने कुछ प्रमुख परिप्रेक्ष्यों की चर्चा की है जिसने हमारी बाल विकास की समझ को प्रभावित किया है। इकाई 6 में शारीरिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, नैतिक और मनोवैज्ञानिक विकासों के सन्दर्भ में बाल विकास के आयामों पर बल दिया गया है। इकाई 7 बच्चों और किशोरों के अध्ययन के लिए प्रयुक्त विधियों को समझाने के लिए समर्पित है।

खण्ड तीन को **'बाल्यावस्था और किशोरावस्था में क्रांतिक वाद–विवाद'** विषय पर केन्द्रित करते हुए उसे चार इकाईयों में बाँटा गया है। इकाई 8 में बच्चों के जीवन पर मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डाला गया है। इकाई 9 में आप का परिचय विद्यालय और शिक्षकों की भूमिका सहित किशोरों द्वारा महसूस की जा रही कुछ सामान्य समस्याओं के संक्षिप्त वर्णन के माध्यम से कराया गया है। इकाई 10 में जीवन में सामना कर सकने योग्य आवश्यक विविध जीवन कौशलों और विद्यालयों में जीवन–कौशल शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। इकाई 11 में बाल अधिकारों की रक्षा करने में शिक्षकों की भूमिका से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के विधिक प्रावधानों को सम्मिलित किया गया है।

शिक्षकों/भावी शिक्षकों के रूप में यह पाठ्यक्रम बाल विकास के बारे में आप के ज्ञान को बढ़ाने में, बाल्यावस्था और किशोरावस्था के बारे में विचार करने और विद्यालय स्तर पर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में बाल्यावस्था और किशोरावस्था को समझने के महत्त्व के बारे में और अधिक जानने के लिए प्रेरित करेगा।

खण्ड का परिचय

इस प्रथम खण्ड में हम यह चर्चा करेंगे कि किस प्रकार बाल्यावास्था और किशोरावस्था का निर्माण विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में होता है। आप जानते हैं कि बाल्यावस्था और किशोरावस्था मानव विकास के आधारभूत चरण हैं। 'बच्चा कौन है? और 'किशोर कौन है?' आदि प्रश्नों के उत्तर आयु मानदण्ड के आधार पर नहीं दिये जा सकते। यह विशेष समाज की प्रकृति और उन तरीकों पर निर्भर करता है कि किस प्रकार समाज ने बच्चों का पालन–पोषण किया है। पूरे खण्ड में आप सामाजीकरण की प्रक्रिया और सामाजीकरण के विविध अभिकरणों के बारे में भी पढ़ेंगे। इस खण्ड में तीन इकाईयाँ हैं।

इकाई 1 में हमने आपका परिचय बाल्यावस्था और किशोरावस्था से कराया है। यह इकाई आपको यह समझने में सहायक होगा कि बच्चा व्यस्क से किस प्रकार भिन्न है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप विभिन्न संस्कृतियों में बाल्यावस्था और किशोरावस्था के विविध परिप्रेक्ष्यों को समझ सकेंगें। विविध संस्कृतियों में बाल्यावस्था और किशोरावस्था की अवधारणा को समझकर आप इस निष्कर्ष पर पहुँच सकेंगे कि बाल्यावस्था और किशोरावस्था का निर्माण आधारभूत ढंग से हुआ है। बच्चों को किस प्रकार देखा जाता है यह बहुत सारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के अनुसार भिन्न होता है जिनका अस्तित्व उस समय और उस स्थान पर होता है।

इकाई 2 सामाजीकरण की अवधारणा और विविध परिस्थितियों में बच्चों के वृद्धि के अनुभवों को समझने में आप की मदद करेगी। आप जानते हैं कि सामाजीकरण सामाजिक जीवन में मुख्य प्रक्रिया को आत्मसात करता है। इस इकाई में आप बच्चों के बढ़ने के विविध अनुभवों को समझने में शिक्षकों के लिए निहितार्थों को भी जान सकेंगे।

इकाई 3 में सामाजीकरण की अवधारणा का पुनरावलोकन किया गया है। वृद्धि की प्रक्रिया में बच्चा विविध अभिकरणों से सम्बन्धित होता है जैसे सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, धर्म, समुदाय, मीडिया और सामाजिक तंत्र (social networking) इत्यादि से। इस इकाई में परिवार और सहपाठी (peer group) में लिंग सामाजीकरण पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा आप सामाजीकरण के अभिकर्त्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका को भी समझ सकते हैं।

इस प्रकार यह खण्ड विभिन्न समाजों और संस्कृतियों में बाल्यावस्था और किशोरावस्था को और अधिक पढ़ने और समझने की आप की जिज्ञासा को जागृत करेगा।

इकाई 1 बाल्यावस्था और किशोरावस्था की अवधारणा

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 बाल्यावस्था की अवधारणा

1.3.1 बाल्यावस्था के मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

1.3.2 बाल्यावस्था के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

1.3.3 बाल्यावस्था के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1.3.4 बाल्यावस्था के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

1.4 विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में बच्चे की परिभाषा

1.5 किशोरावस्था की अवधारणा

1.5.1 विभिन्न संस्कृतियों में किशोरावस्था

1.6 बच्चा, किशोर और व्यस्क में भिन्नताएँ

1.7 सारांश

1.8 इकाई अंत्य अभ्यास

1.9 आपकी प्रगति जाँच के उत्तर

1.10 सन्दर्भ एवं उपयोगी सामग्री

1.1 प्रस्तावना

जैसा कि पाठ्यक्रम 'बाल्यावस्था और वृद्धि' की पहली इकाई 'बाल्यावस्था और किशोरावस्था' है; विभिन्न संस्कृतियों एवं समाजों में बाल्यावस्था और किशोरावस्था के विभिन्न अर्थों को जानना उपयुक्त है। हम सभी यह सोचते हैं कि हम बाल्यावस्था और किशोरावस्था के प्रति सजग हैं जैसा कि हम इन चरणों को अनुभव करते हैं या हमारे पास इन चरणों के बच्चे हैं। हालाँकि हम बाल्यावस्था और किशोरावस्था के इन चरणों से गुजर चुके हैं, फिर भी हमें कुछ समस्याओं को सम्बोधित करना होता है जैसे – क्या विभिन्न संस्कृतियों में बच्चे बाल्यावस्था और किशोरावस्था को एक जैसा अनुभव करते हैं? नगरीकरण और आर्थिक परिवर्तन बाल्यावस्था और किशोरावस्था के निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करेगी।

यह इकाई आपको यह समझने में मदद करेगी कि बच्चा किस प्रकार प्रौढ़ से भिन्न है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप विभिन्न संस्कृतियों में बाल्यावस्था और किशोरावस्था के विविध परिप्रेक्ष्यों को समझ पायेंगे। विविध संस्कृतियों में बाल्यावस्था और किशोरावस्था की अवधारणा को समझकर आप इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि बाल्यावस्था और किशोरावस्था का निर्माण मूल रूप से विविध परिस्थितियों की सामाजिक–राजनैतिक यथार्थताओं पर आधारित है। शिक्षक या भावी शिक्षक के रूप में यह इकाई आपको अपने कक्षा–कक्ष में विविध परिस्थितियों से आने वाले बच्चों को समझने में मदद करेगी।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि:

- बाल्यावस्था और किशोरावस्था में अन्तर स्पष्ट कर सकें;
- 'बाल्यावस्था का सामाजिक निर्माण' की समझ को विकसित कर सकें;

- बाल्यावस्था के विविध परिप्रेक्ष्यों की पहचान कर सकें;
- किशोरावस्था की अवधारण की व्याख्या कर सकें;
- विभिन्न संस्कृतियाँ बाल्यावस्था और किशोरावस्था को किस प्रकार अनुभूत करती हैं, इसका विश्लेषण कर सकें और इस पर विचार कर सकें; और
- बच्चा, किशोर और प्रौढ़ में अन्तर स्पष्ट कर सकें।

1.3 बाल्यावस्था की अवधारणा

बच्चा और बाल्यावस्था शब्दों से हम सभी परिचित हैं। हम सभी उस उम्र से गुजर चुकें हैं जब हम **बच्चे** कहलाते थे और **'बाल्यावस्था'** कहलाने वाली स्थिति को अनुभव कर चुके हैं। केवल बाल्यावस्था ही नहीं बल्कि हम विविध अनुभवों सहित किशोरावस्था की स्थिति से भी गुजर चुके हैं। बाल्यावस्था शब्द का अर्थ है बच्चा होने की स्थिति। बीसवीं शताब्दी के अन्त तक पृथक् सामाजिक श्रेणी के रूप में बाल्यावस्था के विचार पर बहुत कम ध्यान दिया गया था। सांस्कृतिक मानदण्डों और अपेक्षाओं के अनुसार बाल्यावस्था की परिभाषा भी भिन्न होती है।

प्रौढ़ों के रूप में हम बच्चों को उसी ढंग से देखते हैं, न कि अद्वितीय व्यक्तियों के रूप में जिनके पास विविध प्रकार के अनुभव,रूचियाँ, सीखने के तरीके और ज्ञान हैं। हम अक्सर उन्हें बाध्य करते हैं कि वे वैसे हों जैसा हम चाहें जो बच्चों के विकास को गहराई से प्रभावित करता है। शिक्षक या भावी शिक्षक के रूप में हमें बच्चों के अनुभवों के साथ घनिष्ठता विकसित करने की आवश्यकता है ताकि 'जिन बच्चों को हम पढ़ाते हैं' उनके बारे में अपने स्वयं के प्रत्यक्ष ज्ञान पर प्रश्न कर सकें। इस इकाई में यह प्रयास किया गया है कि हम बच्चों के बारे में अपनी स्वयं की समझ की सीमाओं के प्रति सजग रहें। विभिन्न प्रकार के अनुभवों को समझने के लिए यह उचित है कि हम बाल्यावस्था के विविध परिप्रेक्ष्यों पर विचार करें। हम पहले बाल्यावस्था के मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों की जाँच करते हैं।

1.3.1 बाल्यावस्था के मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

मानवशास्त्रीय दृष्टि से जाँच करते समय आप यह देख सकतें हैं कि बाल्यावस्था की कोई कालानुक्रमिक सीमायें अथवा जैविक सीमायें तो नहीं हैं। मानवशास्त्रीय दृष्टि से, बाल्यावस्था को पाँच कोणों से समझा जा सकता हैं। पहला, बच्चों को बहुत सारे मानदण्डों और परम्पराओं को समझने और बनाये रखने के लिए सामाजीकृत किया जाता है। इस विचार के अनुसार, हम समुदाय में समाज की संस्कृति को जीवित रखने के लिए अभिभावकों और प्रौढ़ों के द्वारा साँचे में ढालकर बच्चों का **लघु प्रौढ़ों की तरह** प्रयोग करते हैं। दूसरा, बच्चों के व्यक्तित्व, उत्सुकताओं और सांस्कृतिक पहलुओं की स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं के रूप में समझे जाते हैं जिसमें उनकी वृद्धि होती है। बल इस बात पर दिया जाता है कि किस प्रकार सांस्कृतिक ढाँचों को आभ्यांतरित किया जाता है और बदले में समाज में पुनरूत्पादन किया जाता है। तीसरा, बाल्यावस्था का सामाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानदण्ड, अभिवृत्तियाँ, सोचने के तरीके और समाज के मूल्य विकास के दूसरे चरण में प्रवेश के लिए बच्चों द्वारा प्राप्त किये जाते हैं। यह विचार यह बताता है कि बच्चों के पालन पोषण के व्यवहार भूगोल, इतिहास और समुदाय की पारिस्थितिकी द्वारा प्रभावित होते हैं जो बच्चे के व्यक्तित्व को आकार प्रदान करते हैं। चौथा, किशोरावस्था को विकासात्मक स्थान (developmental niche) के रूप में देखा जाता है। 'विकासात्मक स्थान' का अर्थ है बच्चे के सूक्ष्म–पर्यावरण के सांस्कृतिक ढाँचे की जांच

के लिए ढांचा। यह बच्चे के विचार बिन्दु के शब्दों में पर्यावरण की व्याख्या करने और विकास और संस्कृति के अधिग्रहण की प्रक्रिया को भी समझने का प्रयास करता है। बच्चे को उसके स्वयं के स्वभाव के साथ–साथ प्रगति–विशिष्ट क्षमताओं को उसकी संस्कृति द्वारा प्रदत्त विकासात्मक वातावरण के निर्माण करने के रूप में देखा जाता है। विकासात्मक स्थान (niche) को तीन घटको में विभाजित किया गया है जैसा कि नीचे दिया गया हैः

i) भौतिक और सामाजिक पर्यावरण जिसमें बच्चा रहता है (उदाहरण के लिए घर का प्रकार अथवा रहने का स्थान जो बच्चे के पास है)।

ii) बच्चे की देखभाल और पालन–पोषण के तरीके (उदाहरण के लिए उनके क्रियाकलापों की सूची तैयार करना जैसे बच्चों को खेलने या स्कूल के लिए भेजना अथवा उन्हें टेलीविजन के कार्यक्रमों को दिखाना)।

iii) देखभाल करने वालों (केयरटेकर) का मनोविज्ञान (उदाहरण के लिए, क्या देखभाल करने वाले इस बात में विश्वास करते हैं कि स्वस्थ विकास के लिए नियमित नींद आवश्यक है)।

विशाल संस्कृति के अन्तर्गत ये तीन घटक बच्चों के विकासात्मक अनुभव को आकार प्रदान करने के लिए साथ– साथ कार्य करते हैं। अन्ततः कुछ मानवशास्त्री बाल्यावस्था को स्वयं, आन्तरिक तथा बाह्य एकल सांस्कृतिक समुदाय की शक्तियों द्वारा आकार प्रदान किये गये सांस्कृतिक निर्माण के रूप में देखते हैं। बच्चे संस्कृति को परिवार के अन्तर्गत अपने जीवन की दिनचर्या के माध्यम से अनुभूत करते हैं। यहाँ दिनचर्या में शामिल है विद्यालय जाना, धार्मिक क्रियाकलाप, खेलना, भोजन का समय और परिवार से मिलना। सामान्यतया संस्कृति बच्चे के दिमाग में विविध प्रकार के बढ़ते हुए अनुभवों के माध्यम से प्रवेश करती है। जो अनुभव बच्चों के पास अपनी बाल्यावस्था में थे निश्चित ही वे उनके प्रौढ़ जीवन को प्रभावित करेंगे। यहाँ हमें याद रखना होगा कि बच्चों के पालन– पोषण की आदतें एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में भिन्न होती हैं और विभिन्न पर्यावरणों के अनुकूलन का प्रतिनिधित्व करती हैं। आप इस खण्ड की इकाई दो जिसका शीर्षक है 'विविध परिस्थितियों में सामाजीकरण और वृद्धि', में विविध परिस्थितियों में बच्चों के बढ़ने के अनुभवों के बारे में विस्तार से पढेंगे जैसे– विभिन्न प्रकार के पारिवारिक ढाँचों , असुविधाजनक क्षेत्रों और एक लड़की के रूप में बढ़ने में। वे साधन बच्चों के जीवन को आकार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं जिनमें बच्चे अपने प्रतिदिन के पर्यावरण का अर्थ निर्धारित करते हैं चाहे वे नगरीय, ग्रामीण, उपनगरीय अथवा असुविधाजनक क्षेत्र हों और वे इस प्रकार के पर्यावरण में किस प्रकार अपने को सम्मिलित करते हैं। इसके बाद के अनुच्छेदों में हम **बाल्यावस्था के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य** की चर्चा करने जा रहे हैं।

1.3.2 बाल्यावस्था के समाजशास्त्रीय प्ररिप्रेक्ष्य

हमने यह समझा कि सभी कालों और समाजों में बच्चों के अनुभवों में अनेकरूपता और विविधता विद्यमान है। इसके अलावा समय, समाज और परिस्थितियों के अनुसार बच्चे और बाल्यावस्था के बारे में विभिन्न प्रकार की अवधारणायें हैं। ये इतनी भिन्न हैं कि बच्चे अथवा बाल्यावस्था के लिए एक विचार रखना मुश्किल है फिर भी सामान्यतया प्रौढ़ों के रूप में, हम बाल्यावस्था को एक श्रेणी के रूप में देखते हैं। इस प्रकार की दृष्टि सृजन अथवा निर्माण के अधिक समीप है जो बच्चों के अनुभवों की **समानुभूतिक** समझ पर आधारित नहीं है। इसे समाज की एकरूप व संकुचित दृष्टि द्वारा आकार प्रदान किया जाता है जिसका बच्चों के जीवन पर गहन निहितार्थ हो सकता है। बच्चों को इस प्रकार देखना प्रौढ़ों के **बाल्यावस्था के निर्माण** जैसा प्रतीत होता है। हम मयाल (Mayall)

(1991) के इस तर्क से सहमत हो सकते हैं कि 'बच्चों का जीवन प्रौढ़ों की बाल्यावस्था की समझ और बच्चे क्या हैं और क्या होने चाहिए द्वारा उनके लिए बनाये गये बाल्यावस्था के माध्यम से जिया जाता है'।

सामाजिक निर्माण के रूप में बाल्यावस्था : सामाजिक निर्माण को 'सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो उन साधनों की खोज करता है जिसमें 'वास्तविकता' का प्रतिदिन के जीवन में लोगों की प्रतिक्रियाओं और भाषणों के समूहों के माध्यम से मोल–तोल किया जाता है।' (जेम्स एवं जेम्स, 2008, पृ0 122), यह समझने में कि समाज में क्या घटित होता है और उन समझों पर आधारित ज्ञान के निर्माण में संस्कृति और परिस्थितियों पर बल देता है। जब हम सामाजिक निर्माण के विचार की जाँच करते हैं तो हमें निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष बल देना होता हैः

- समझ के सभी साधन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से सापेक्ष हैं;
- विश्व के बारे में हमारे ज्ञान का निर्माण हमारी प्रतिदिन की अन्तः क्रियाओं के द्वारा होता है, और
- विश्व के बहुत से संभावित निर्माण हैं।

आप देख सकते हैं कि विकासात्मक मनोवैज्ञानिक जब बच्चों को प्रौढ़ों से बहुत से क्षेत्रों में योग्यता के आधार पर अलग करते हैं तो सामाजिक संरचनावादी इसे कैसे परिभाषित किया जाए इस पर तर्क करते हैं कि सामाजिक निर्माण करते हुए बाल्यावस्था को बहुत कुछ करना है। बाल्यावस्था की ओर हमारी अभिवृत्ति समाज की उन प्रमुख विचार पद्धतियों से प्रभावित है जिसमें हम रहते हैं, और इस प्रकार यह समय और संस्कृति के अनुसार भिन्न हो सकती है। हम अपने बाल्यावस्था के विचारों को केवल तभी समझना आरंभ कर सकते हैं जब हम विशेष सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थिति में अपनी स्वयं की स्थिति का निरीक्षण करते हैं। बाल्यावस्था की निर्मित प्रकृति अधिक स्पष्ट हो जाती है जब हम बाल्यावस्था की संकल्पनाओं में वैषम्य स्थापित करते हैं जोकि विभिन्न **ऐतिहासिक कालों** अथवा **संस्कृतियों** में प्रचलित थीं। अब हम बाल्यावस्था के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों की चर्चा करते है।

1.3.3 बाल्यावस्था के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

जब हम विभिन्न समाजों में बच्चे के अर्थ को जानने का प्रयास करते हैं तो बाल्यावस्था के विचार के इतिहास का निरीक्षण करना बेहतर होता है। यदि इतिहास का विश्लेषण करें तो यह महसूस होगा कि बच्चे का अर्थ एवं वर्णन इतिहास में समयानुसार भिन्न होता है। फिलिप एरिस (Philippe Aries) नामक एक फ्रांसीसी इतिहासकार ने यह विश्लेषण किया कि इतिहास में बच्चों को किस प्रकार चित्रित किया गया था। कला, पत्रों और बहुत से अन्य स्रोतों का प्रयोग करते हुए उन्होंने यह पता लगाया कि बाल्यावस्था का अर्थ मध्यकाल से आगे वर्तमान काल तक किस प्रकार विकसित किया गया। निम्नलिखित को पढ़ें।

> फिलिप एरिस (Philippe Aries) ने लिखा कि बाल्यावस्था बहुत नवीन अवधारणा है। यह मध्य काल में बिल्कुल नहीं थी। उन्होंने यह देखा कि उस युग की चित्रकलाओं में बच्चों का कोई चित्रण नहीं मिलता। उस समय केवल छोटे बच्चे अथवा प्रौढ़ थे। वे सभी जो बच्चे नहीं थे, उन्हें प्रौढ़ों की शरीर– भाषा और प्रौढ़ों जैसे हाव–भाव सहित प्रौढ़ों की वेशभूषा में चित्रित किया जाता था। बहुत से जवान लोगों को प्रशिक्षु बनाया जाता था जो खेतो में काम करने वाले हो गये और बहुत कम उम्र के लोगों को प्रौढ़ों के रूप में देखा गया, यहाँ तक कि लगभग सात वर्ष तक के 'लोगों' को भी लघु व्यस्कों के रूप में देखा गया, न कि बच्चों के रूप में।

मध्यकालीन संस्कृतियों में बाल्यावस्था की संकल्पना का अभाव मिलता है। बाल्यावस्था परवर्ती ऐतिहासिक सर्जन है। यह 16वीं तथा 17 वीं शताब्दियों में धनी लोगों (उच्च वर्ग) में विकसित हुई आगे यह 18वीं शताब्दी में उच्च वर्ग के मध्य विकसित हुई और अन्ततः यह 20 वीं शताब्दी में उच्च और निम्न दोनों वर्गों के परिदृश्य पर प्रकट हुई। एक बार बाल्यावस्था की सस्था के प्रकट होते ही समाज में जवान व्यक्तियों की स्थिति परिवर्तित होने लगी। पहले उनका नाम बच्चा रखा गया। बच्चे के निर्दोष होने के सिद्धान्त का आविर्भाव हुआ। बच्चों को प्रौढ़ वास्तविकता से संरक्षित किया गया। जन्म, मृत्यु, लिंग, दुखद घटना और प्रौढ़–समाज की घटनाओं के तथ्यों को बच्चों से छिपाया जाता था। बच्चों को उम्र द्वारा अलग किया जाता था।

फिलिप एरिस (Philippe Aries) (1962) , सेंचुरीज ऑफ चाइल्डहुड

दूसरे विचारक जॉन हॉल्ट ने आधुनिक समाज में जवान लोगों और उनके स्थान, अथवा स्थान के अभाव के बारे में लिखा। उन्होंने बाल्यावस्था की आधुनिक संस्था, अभिवृत्ति, परम्पराओं और उन नियमों के बारे में चर्चा किया जो बच्चों को आधुनिक जीवन में परिभाषित व उनका स्थान निर्धारित करते थे और वृहद् स्तर पर यह निर्धारित करते थे कि उनका जीवन किस तरह का था और हम सभी और उनके बड़े लोग उनके साथ किस प्रकार का व्यवहार करते थे। उन्होंने आगे उन बहुत सी स्थितियों के बारे में बातचीत की जिनमें आधुनिक बाल्यावस्था अधिकतर उन लोगों के लिए जिन्हें खराब प्रतीत होती थी, जो उसके अन्तर्गत रहते थे और यह किस प्रकार बदली जा सकती थी। – जॉन हॉल्ट (1974), एस्केप फ्राम चाइल्डहुड

अब आपने जाना कि कैसे सभ्यता के इतिहास में बाल्यावस्था को कई तरीकों से देखा जाता है। उदाहरण के लिए गैर औद्योगिक समाज के बच्चे औद्योगिक समाज के बच्चों से अलग प्रकार से देखे जातें हैं जोकि विस्तृत में खण्ड 1.5 'किशोरावस्था की अवधारणा में चर्चित होगा। अतः बाल्यावस्था एक दिया हुआ विचार नहीं है; यह ऐसा विचार है जो प्रोढ़ों के आइने से देखा जाता है कि वे समाज में बच्चों को कैसे देखते हैं।

1.3.4 बाल्यावस्था के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

बाल्यावस्था की हमारी धारणाओं में विभिन्नताएं केवल अतीत में ही नहीं पायी जातीं बल्कि विश्व में विभिन्न संस्कृतियों का भ्रमण करने पर भी। विभिन्न संस्कृतियों में बच्चों की सामाजिक स्थिति और उनकी भूमिका में विभिन्नता है। ये विभिन्नताएं **ग्रामीण** और **नगरी** क्षेत्रों में, **विभिन्न समुदायों** और **विभिन्न देशों** में देखी जाती हैं। हम कुछ उदाहरणों में देखतें हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में बच्चों का पालन–पोषण कैसे होता है।

अपनी गोद में लिए हुए अपने शिशु सहित एक **भारतीय माँ** को देखिये। माँ छाती से लगाकर, मुस्कराहट से और बातचीत कर भावनात्मक सम्बन्ध को पुष्ट करने का उत्कृष्ट प्रयास करती है और इस प्रकार यह सुनिश्चित करती है कि वह बच्चे के ध्यान पर सर्वाधिक बल देती है। **कालुली माताओं (Kaluli mothers)** और उनके शिशुओं की ओर देखने पर हम एक भिन्न प्रकार की तस्वीर पायेंगे। कालुली लोग एक छोटा समाज हैं जो पपुआ न्यु गुनिया (Papua New Guniea) (आस्ट्रेलिया के निकट) के उष्णकटिबन्धीय वर्षा वनों में रहते हैं, और उनकी मातृ–शिशु अन्तः क्रिया बिल्कुल भिन्न तरह की है। मातायें अपने शिशुओं को बाहर रखती हैं ताकि वे दूसरों को देख सकें जो कि उनके सामाजिक समूह का हिस्सा हैं। मातायें बिरले ही प्रत्यक्ष रूप से अपने शिशुओं से बात करती हैं; बजाय उनके दूसरे लोग शिशु से बात करते हैं। यह ऐसा क्यों है?

> जैसा कि कालुली लोग एक बड़े और लम्बे घर में रह रहे हैं जिसमें आन्तरिक दीवारें नहीं हैं, माँ–बच्चे का बन्धन कम महत्त्वपूर्ण है और बच्चों को सम्पूर्ण रूप में सामाजिक समुदाय के प्रति सजग रहना होता है। इसलिए उन्होंने बच्चे में बाहर का सामना करने की आदत को डलवाया और माँ की तरफ नहीं।

(**स्रोत**ः स्कैफर, एच. रूडोल्फ. (2004), इन्ट्रोड्यूसिंग चाइल्ड साइकोलॉजी, यूनाइटेड किंगडमः ब्लैकवेल पब्लिशिंग लिमिटेड।)

दो समाजो में माँ–बच्चे के खेल सत्र का एक उदाहरण नीचे दिया गया हैः

> बाल्यावस्था की प्रक्रिया के दौरान, पश्चिमी समाज में माँ, बच्चों को ऐसी स्थितियाँ प्रदान कर उनमें स्वतंत्र प्रकृति का विकास करने का प्रयत्न करती है जिससे वे स्वयं अपनी खोज कर सकें। इसके विपरीत, जापानी माँ समूह के अन्य सदस्यों पर निर्भर होकर बच्चे का सामाजीकरण करती है। उदाहरण के लिए खेल सत्र के दौरान कार के सामने रखने पर, पश्चिमी माँ कह सकती हैः 'यह कार है। इसके सुन्दर पहिये हैं। आप इससे खेल सकते हैं।
>
> एक जापानी माँ कहेगीः 'हेलो चैन (Hello Chan) यह एक ब्रूम ब्रूम है। मैं इसे आप को देती हूँ। अब इसे मुझे दो। हाँ धन्यवाद।'
>
> इन दो माँ–बच्चों के खेल सत्र के बीच आप क्या अन्तर देखते हैं?
>
> पश्चिमी समाज में माँ बच्चे को वस्तु के नाम और उसके गुणों को सिखाने में अधिक महत्व देती है जबकि दूसरे मामले में, माँ बच्चे को विनम्रतापूर्वक बोलने और अन्तर्वैयक्तिक पहलुओं पर जोर देने के लिए सांस्कृतिक मानदण्डों की शिक्षा देती है। दूसरा बिन्दु जो आप देख सकते हैं वह यह है कि पश्चिमी समाज में माँ अपने बच्चों को उनके संज्ञानात्मक और शैक्षिक कौशलों को पुष्ट करने के लिए खेल में लगाती है जब कि जापानी समाज में खेल, बच्चे को सामाजिक अनुष्ठान में लगाने का एक साधन मात्र है जो कि माँ–बच्चे के सम्बन्ध को विकसित करेगा।
>
> (**स्रोत**ः स्कैफर, एच.रूडोल्फ. (2004), इन्ट्रोड्यूसिंग चाइल्ड साइकोलॉजी यूनाइटेड किंगडमः ब्लैकवेल पब्लिशिंग लिमिटेड)

उपर्युक्त उदाहरणों से आप ने निश्चित ही यह अनुमान किया होगा कि बच्चों का पालन पोषण उनके व्यक्तित्व को बनाने के कार्य में महत्वपूर्ण है। यहाँ तक कि आज भी बाल्यावस्था की हमारी धारणाओं में विभिन्नतायें हैं जब हम संसार के विभिन्न भागों की विभिन्न सांस्कृतिक–परम्पराओं से तुलना करते हैं। एक समाज में जो बात सामान्य है वह दूसरे में स्वीकार करने योग्य नहीं हो सकती। ये अन्तर पालन–पोषण कार्यों के कारण हैं जैसे बच्चों से कैसे बात की जाती है, उन्हें कैसे पकड़ा जाता या उनके साथ कैसे खेला जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्येक समाज अपने स्वयं के मूल्यों में उपयुक्त होने वाली व्यक्तित्व की विशेषताओं वाले बच्चों को उत्पन्न करने में लगा रहता है। सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ जिनमें बच्चों की वृद्धि होती है, बच्चे के सामाजिक संसार के भाव की रचना करने में प्रभाव डालने का प्रयास करती हैं। इस प्रकार आप यह कह सकते हैं कि बाल्यावस्था की कोई एक सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है। बाल्यावस्था में समय, स्थान और सस्कृति के अनुसार अन्तर होता है। अगले अनुभाग में हम 'बाल' अवधारणा के अर्थ की चर्चा करेंगे।

अपनी प्रगति जाँचें – 1

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) 'बाल्यावस्था एक सामाजिक निर्माण है' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? क्यों?

....

....

....

....

1.4 विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में बच्चे की परिभाषा

शिक्षक विद्यालयों में विविध पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखने वाले बच्चों का सामना करते हैं । कुछ शिक्षक बच्चों पर चिल्लाते हैं, कुछ उनसे मामले का समाधान करने के लिए बात करने की कोशिश करते हैं और कुछ ध्यान नहीं देते हैं। हालाँकि, विविध पृष्ठभूमि के बच्चों को सँभालना इतना सरल नहीं है। यह हमारे लिए इस वास्तविकता को अभिव्यक्त करता है कि हम, प्रौढ़ों या शिक्षकों के रूप में कक्षा–कक्ष की परिस्थितियों को समझने के लिए अच्छी तरह से सज्जित नहीं हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हम विविध परिस्थितियों में बच्चों के साथ नहीं लग पाते हैं। क्या आप यह सोचते हैं कि इन परिस्थितियों में बच्चों को समाज में कैसे रखा जाता है? स्पष्ट रूप से, ऐसा नहीं हो सकता। आगे के अनुच्छेदों में, हम इस प्रश्न की खोज शुरू करेंगे।

प्रौढों के रूप से हम यह महसूस करते हैं कि हम बाल्यावस्था और बच्चों के अनुभवों को ठीक तरह से समझते हैं। हम स्वयं से कुछ प्रश्न पूछते हैं। क्या हम बाल्यावस्था को 'परिभाषित' कर सकते हैं? हम सभी ने बाल्यावस्था का अनुभव किया है। क्या हम सभी के लिए यह संभव होगा कि हम 'बच्चा' शब्द को **'परिभाषित'** कर सकें? यदि आप लोगों से इन प्रश्नों को पूछते हैं तो अधिकतर लोग बच्चों का वर्णन करने के लिए निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग कर सकते हैं।

बच्चे हैं :–

निर्दोष, भगवान के उपहार, शुद्ध और सच्चे, मधुर, मनोहर,

आनन्दित करने वाले, बचकाने, विनोदशील, जड़मति, नटखट,

सुकुमार, संरक्षित, कुम्हार की चिकनी मिट्टी की तरह मुलायम और भयाक्रान्त

ये कुछ सामान्य अवबोधन हैं जिनका ध्यान हम लोग बच्चों के बारे में रखते हैं। यदि हम इन अवबोधनों का ध्यानपूर्वक परीक्षण करें तो हम यह महसूस करेंगे कि ये सभी बच्चों के अनुभवों की व्याख्या नहीं करते। कुछ बच्चे वंचित परिस्थितियों से आते हैं और इसलिए विभिन्न अनुभवों वाले लगते हैं। क्या आप सोचते हैं कि अच्छे परिवारों से आने वाले सभी बच्चों के अनुभव एक जैसे होते हैं। हम कह सकते हैं कि ऐसा कम होता है, लेकिन हम कोई भी बात निश्चित तौर पर नहीं कह सकते। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रत्येक बच्चे की रहने की दशाएं भिन्न–भिन्न हैं। चूँकि बच्चों के अनुभव भिन्न हैं इसलिए यह कि सभी बच्चे एक श्रेणी के हैं और बाल्यावस्था की एकल 'परिभाषा' देना सही नहीं होगा। हममें से कुछ के लिए यह थोड़ा असामान्य लग सकता है लेकिन बच्चों के अर्थ के बारे में विभिन्न और परस्पर विरोधी परिप्रेक्ष्य हैं।

अंग्रेजी भाषा का शब्द 'चाइल्ड' (child) ट्यूटोनिक मूल और गॉथिक शब्द 'वूम्ब' (गर्भाशय) से निकला है। अंग्रेजी शब्द 'बेबी' (Baby) का उदय एक शिशु द्वारा उच्चरित ध्वनि 'बे–बे' अथवा 'बा–बा' से हुआ है। अंग्रेजी में शिशु को एक बच्चे (infant) के रूप में भी माना गया है जिसका मूल एक व्यक्ति को इस रूप में परिभाषित करने से है जो बोल नहीं सकता (इन (in) =नहीं, फैन्स (fans) = बोलता)।

जापानी में नवजात शिशु को अका–चैन "aka-chan" (अका aka = लाल, और chan = बच्चे को दी जाने वाली उपाधि) कहते हैं। सामान्य रूप से ऐसा इसलिए है क्योंकि बच्चे की त्वचा लाल रंग की प्रतीत होती है। दूसरे अनुच्छेद में हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि आयु मानदंड, वैधानिक दृष्टिकोण से, एक श्रमिक के रूप में और सामाजिक नीति के आधार पर बच्चे को किस प्रकार परिभाषित किया जाता है।

अ) आयु मानदण्ड :

अधिकांशतः बच्चे को परिभाषित करने के लिए 'उम्र' मानदण्ड है। सामान्यतया, बच्चे को उम्र के आधार पर परिभाषित किया जाता है। मानव को जन्म से यौवनारम्भ तक अर्थात् जन्म से 13 वर्ष तक की आयु तक को बच्चा माना जाता है। इस आयु अवधि में बाल्यावस्था जन्म से यौवनारम्भ तक मानी जाती है।

आयु के इस निर्धारण के बारे में वाद–विवाद है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि जैसे ही बच्चा अस्तित्व में आता है, बाल्यावस्था शुरू हो जाती है, यहाँ तक कि बच्चे के जन्म लेने से पूर्व भी। अर्थात् इसके भ्रूणावस्था में ही। इसके अलावा कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि बाल्यावस्था उस समय तक होती है जब तक कि कोई प्रौढ़ के रूप में सभी वैधानिक अधिकार न प्राप्त करे। भारत में, इसका मतलब होगा कि 18 वर्ष की उम्र तक हर कोई एक बच्चा है।

ब) वैधानिक दृष्टिः बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन

यह सम्मेलन बच्चे को 18 साल से नीचे के मानव के रूप में परिभाषित करता है। **राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एन.सी.पी.सी.आरः)** 0 से 8 आयु वर्ग के बच्चे को एक व्यक्ति के रूप में मान्यता देता है। जबकि भारत में **बाल न्याय अधिनियम** (the Juvenile Justice Act) 14 वर्ष से कम उम्र के व्यक्तियों को बच्चों के रूप में मान्यता देता है। **शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009** (the Right of Education Act, 2009) 6 से 14 साल के व्यक्तियों के बीच की इस परिभाषा को संकुचित कर देता है। भारतीय संविधान के विभिन्न अनुच्छेद एवं अधिनियम बच्चे के लिए विविध उम्र सीमायें प्रस्तुत करते हैं। भारत के संविधान का **अनुच्छेद 21अ** कहता है कि राज्य 6 से 14 आयु वर्ग के अन्तर्गत आने वाले सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा। संविधान का **अनुच्छेद 45** विशेष रूप से उल्लेख करता है कि राज्य सभी बच्चों के लिए **प्रांरम्भिक बाल्यावस्था अनुरक्षण (early children care)** और शिक्षा प्रदान करने का प्रयत्न करेगा जब तक कि वे 6 वर्ष के न हो जायें। **बाल श्रम निषेध एवं विनियमन अधिनियम,1986 (the Child Labour Prohibition and Regulation Act, 1986)** के अधीन बच्चा एक व्यक्ति है जिसने 14 वर्ष की उम्र पूर्ण नहीं की है। **भारतीय खान अधिनियम (the Indian Mines Act)** 18 वर्ष से नीचे के लोगों को बच्चे के रूप में परिभाषित करता है। इन सभी अधिनियमों अथवा अनुच्छेदों का अनुशीलन करते हुए एक समान आयु वर्ग नहीं देखा जा सकता।

यह उल्लेख करना रोचक होगा कि पूरे विश्व में वैधानिक प्रौढ़ता के लिए आयु में विभिन्नतायें हैं। भारत में यह 18 वर्ष है, ईरान में यह 15 वर्ष है, स्काटलैंड में 16 वर्ष है, जापान में 20 वर्ष है और मिस्र में यह 21 वर्ष है। जीवन पर वैधानिक उम्र के क्या

निहितार्थ हैं, इसके बारे में आप क्या सोचते हैं? जब तक कोई वैधानिक प्रौढ़ता नहीं प्राप्त कर लेता है, वह एक संरक्षित नागरिक है। अतः बच्चे, किशोर अथवा अवयस्क अपने संरक्षकों और सरकार के उत्तरदायित्व हैं। उनके भोजन, स्वास्थ्य, कपड़े, आश्रय, शिक्षा और अच्छे जीवन का उत्तरदायित्व संरक्षकों और सरकार का है। प्रौढ़ की उम्र प्राप्त करने के पश्चात् कोई भी रोजगार प्राप्त कर सकता है, मतदान कर सकता है, चुनाव लड़ सकता है, शादी कर सकंता है। हालाँकि, इस वैधानिक मानदण्ड के अन्तर्गत बहुत से अन्तर्विरोध हैं। उदाहरण के लिए, भारत में कार्य करने के लिए वैधानिक उम्र 14 वर्ष है। इस उम्र में 'बच्चा' मतदान नहीं कर सकता और अन्य वयस्क अधिकारों का उपभोग नहीं कर सकता। जिस व्यक्ति ने वयस्क के रूप में अधिकारों को नहीं प्राप्त किया है वह रोजगार में अधिक असुरक्षित रहेगा। क्या आप यह सोचते हैं कि 14 वर्ष के व्यक्ति को श्रम में लगाना शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वास्थ्यकर होगा?

स) श्रमिक के रूप में बच्चा :

बावजूद इस तथ्य के कि बाल श्रम गैरकानूनी है, बहुत बड़ी संख्या में बच्चे कारखानों में (कालीन बुनने, बीड़ी बनाने, चूड़ियाँ बनाने, पटाखों आदि के कारखानों में), छोटी दुकानों पर, घरेलू काम–काज (सफाई, खाना बनाना, छोटे बच्चों की देखभाल करना, आदि) करते हैं। बहुत से ऐसी स्थितियों में हैं जहाँ उन्हें भीख माँगना पड़ता है। गरीबी में बचपन और कंगाल परिस्थितियों में बच्चों के अनुभव बेहतर स्थितियों की तुलना में बहुत भिन्न हैं। ऐसे मामलों में बच्चे परिवार के जीवन निर्वाह में मददगार समझे जाते हैं। ज्यादातर, ऐसी स्थितियों में बच्चे प्रौढ़ों की अपेक्षा अलग तरीके से नहीं रहते।

द) सामाजिक नीति में बच्चा :

शैक्षिक नीतियों में बच्चों को शिक्षार्थियों और राष्ट्र के भावी नागरिकों के रूप में चित्रित किया गया है। बच्चों को शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व प्रौढ़ों पर है। अभिभावक बच्चों की शिक्षा के लिए बहुत बड़ी मात्रा में धन खर्च करते हैं। **शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009** यह सुनिश्चित करता है कि 8 वर्ष तक (कक्षा पहली से आठवीं) की विद्यालयी शिक्षा के लिए सभी खर्च राज्य द्वारा वहन किया जायेगा। समाज कल्याण नीतियों में, बच्चों को अति संवेदनशील समूह के रूप में माना गया है जिन्हें आसानी से शारीरिक दण्ड, लैंगिक दुर्व्यवहार और संवेगात्मक दुर्व्यवहार का शिकार बनाया जाता है। मीडिया में बच्चों को विज्ञापनों में विक्रय–प्रोत्साहकों के रूप में चि़त्रित किया गया है।

बहुत से समाजों में, 'बच्चा' शब्द का प्रयोग परिचित (kin) सम्बन्ध को इंगित करने के लिए ही नहीं किया जाता है बल्कि दासता की स्थिति को भी इंगित करने के लिए। बाल्यावस्था को दर्शाते समय, जैविक निर्धारकों को हमेशा ध्यान में नहीं रखा गया। मध्यकालीन यूरोप में, शैशवावस्था को सामान्य रूप से जन्म के समय होना माना जाता था अथवा स्तनपान के अन्त में जो कि तीन वर्ष के आस–पास था। बाल्यावस्था के चरण का अन्त लगभग 7 वर्ष पर माना जाता था जब कोई व्यक्ति कुछ निश्चित घरेलू अथवा औद्योगिक कार्यों को करने की दक्षता प्राप्त कर लेता था। अठारहवीं शताब्दी के दार्शनिक जीन जैक्स रूसो (Jean Jacques Rousseau) ने बाल्यावस्था को जन्म और बारह वर्ष के बीच होना माना है। अतः बच्चे और बाल्यावस्था की कोई सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है।

नोटः विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में बच्चे की परिभाषा के अधीन अंश पाठ्यक्रम BES-001: प्रारम्भिक विद्यालयी बच्चे को समझना की इकाई 9: 'बाल्यावस्था' से लघु परिवर्तन सहित लिया गया है।

अपनी प्रगति जाँचें – 2

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) बच्चे की सार्वभौमिक परिभाषा देना संभव क्यों नहीं है?

....

....

....

....

1.5 किशोरावस्था की अवधारणा

जैसा कि हम जानते हैं कि आज किशोरावस्था में बाल्यावस्था की तरह बड़े सामाजिक और विकासात्मक परिवर्तन हुए हैं। आप जान सकते हैं कि 'किशोरावस्था' की अवधारणा का आरंभ 19वीं शताब्दी के अन्त में और 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक भाग में हुआ था। इस काल से पूर्व, किशोरावस्था को बाल्यावस्था से अलग नहीं किया जाता था। इस इकाई के परिचयात्मक भाग में आप इस प्रकार पढ़ चुके हैंः नगरीकरण और आर्थिक परिवर्तन बाल्यावस्था के निर्माण और अनुभव को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? किशोरावस्था की अवधारणा समाज में औद्योगिक क्रांति द्वारा लाये गये द्रुत परिवर्तनों का परिणाम है। आप इन परिवर्तनों को औद्योगीकरण, नगरीकरण, संस्थाकरण और अप्रवासन के रूप में श्रेणीकृत कर सकते हैं। हालाँकि हम प्रत्येक श्रेणी के विस्तार में नहीं जा रहें। आइए हम औद्योगीकरण द्वारा लाये गये परिवर्तनों और यह इस अवधारणा को जिसे कि हम **किशोरावस्था** कहते हैं किस प्रकार प्रभावित करता है, इस बात की जाँच करें।

औद्योगिक समाजों में बच्चों और किशोरों की स्थिति को विस्तार से जानने से पूर्व हमें कुछ रूचिकर प्रश्न सम्बोधित करना है––''गैर–औद्योगिक समाजों में बाल्यावस्था और किशोरावस्था को किस प्रकार समझा जाता है?'' आगे के अनुच्छेद में इस प्रश्न पर विचार करते हैं। रूथ बैनेडिक्ट (Ruth Benedict) तर्क देते हैं कि गैर–औद्योगिक समाजों में बच्चों को सामान्यतया उन बच्चों से निम्नलिखित तरीके में अलग समझा जाता है जो औद्योगिक समाजों में रहते हैं :

- गैर औद्योगिक समाजों में बच्चों ने प्रारंभिक अवस्था में जिम्मेदारी ली;
- वे बच्चे जो प्रौढ़ सत्ता के प्रति आज्ञापालक दिखे, उन्हें निम्न मूल्य में रखा गया; और
- बच्चों का लैंगिक व्यवहार प्रायः अलग तरह से देखा जाता है।

औद्योगिक क्रांति से पूर्व, बच्चों और किशोरों को केवल लघु प्रौढ़ माना जाता था। उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे पारिवारिक व घरेलू कार्यों को करें जैसे– कृषि क्षेत्र, बढ़ईगीरी अथवा घर में किसी अन्य कार्य में लगे रहना। बच्चे और किशोर आर्थिक दायित्व के रूप में अधिक देखे जाते थे और सम्पत्ति के रूप में कम। ग्रामीण क्षेत्रो में वे पशुपालन और फसल काटने में मदद करते थे; लेकिन शहर में वे अक्सर काम नहीं करते थे। बढ़ती यांत्रिकी के साथ, कुशल कर्मी बढ़ गये थे और श्रम के विशिष्ट वर्ग की माँग की गई। इसके कारण कर्मियों के रूप में बच्चों और किशोरों दोनों की उपयोगिता कम हो गई। उससे भी अधिक, बालश्रम निषेध और शिक्षा को अनिवार्य बनाने के कानून पारित किये गये। बाल्यावस्था और किशोरावस्था को एक पृथक् जीवन अवस्था के रूप में बनाने के लिए समाज में क्या परिवर्तन आये हैं? आप कह सकते हैं कि शिक्षा, बालश्रम निषेध और बाल संरक्षण कानूनों ने बच्चों को बाल्यावस्था और किशोरावस्था के चरण प्रदान किये।

20 वीं शताब्दी के मध्य तक, किशोरों को प्रौढ़ों से अलग किया जाता था और वे अपना अधिकतर समय सम समूहों (peers) के साथ बिताते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, किशोरों का नामांकन जो विद्यालय जाते थे, बढ़ गया और वे प्रौढ़ जगत् में अपना प्रवेश देर से करते थे। इस प्रकार आप समझ गये होंगे कि किस प्रकार नगरीकरण और आर्थिक परिवर्तन किशोरावस्था के निर्माण और अनुभव को प्रभावित करते हैं।

जब हम **'किशोरावस्था'** शब्द की व्युत्पत्ति को देखते हैं तो हम यह देख सकते हैं कि यह शब्द लैटिन क्रिया **'एडोल्सेरे'** (adolescere) से निकला है जिसका अर्थ है 'बढ़ना' (to grow up) अथवा 'प्रौढ़ता की और बढ़ना' (to grow to maturity)। मनोवविज्ञान में किशोरावस्था को बाल्यावस्था और प्रौढावस्था के बीच के चरण के रूप में व्यवह्रत किया जाता है। इस चरण में, व्यक्ति को बाल्यावस्था के व्यवहारों को अपनी संस्कृति में मान्य प्रौढ़ मानकों के अनुसार अनूकुल बनाना और समायोजित करना होता है। यहाँ हम किशोरावस्था को केवल जैविक वर्ग में ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक ढाँचे के अन्तर्गत सामाजिक वृद्धि में भी रख सकते हैं। कुछ लोग यौवनारम्भ को किशोरावस्था के चरण में पहुंचने के संकेत रूप में मान सकते हैं। हम **यौवनारम्भ** (Puberty) को उस समय को द्योतित करने के लिए प्रयोग करते हैं जब बच्चा शारीरिक और लैंगिक परिपक्वता को प्राप्त करता है। दो वर्ष का समय जो यौवनारम्भ से पहले आता है, **तारूण्य (Pubescence)** के रूप में जाना जाता है। यह वह समय है जब शारीरिक परिवर्तन गौण यौन लक्षणों की ओर ले जाते हैं। यौवनारम्भ से जुड़े होने के कारण किशोरावस्था, बच्चे से किशोरावस्था तक के संक्रमण काल से सम्बन्ध रखती है और समाज के प्रभाव के कारण एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में भिन्न है। सामान्य रूप से, हम किशोरावस्था के चरणों को निम्नलिखित रूप में विभाजित कर सकते हैं:

तालिका 1.1: किशोरावस्था के चरण

किशोरावस्था के तीन मुख्य चरणों को इस प्रकार देखा जा सकता है:

प्रारंभिक किशोरावस्था (10-13 वर्ष) – इस चरण में गौण लैंगिक लक्षणों की वृद्धि और विकास की तेज चाल होती है।

मध्य किशोरावस्था (14-15 वर्ष) – यह चरण विपरीत लिंग और समसमूहों के साथ नये संबन्ध बनाने और अभिभावकों से एक अलग पहचान के विकास के लक्षणों का दर्शाता है।

परवर्ती किशोरावस्था (16-18 वर्ष) – इस अवस्था में किशोर, प्रौढ़ों जैसा व्यवहार करते हैं और एक पृथक् पहचान बना चुके होते हैं और उनकी अपनी राय और विचार होते हैं।

उपरोक्त अनुच्छेदों से आप अवश्य सोच चुके होंगे कि केवल परिपक्वता को अत्यधिक स्पष्ट कारण के रूप में मानते हुए किशोरावस्था का सम्बन्ध शारीरिक परिवर्तनों से है। सामान्यतया परिपक्वता जीवन की उस उम्र अथवा अवस्था की ओर संकेत करती है जब व्यक्ति शारीरिक, सांवेगिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास को पूर्णतया प्राप्त करता है। इसके विपरीत , आप आश्चर्य कर सकते हैं कि हमने किशोरावस्था की आयु–श्रेणीकृत परिभाषा क्यों नहीं ली है। दूसरा, उम्र को मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य के रूप में नहीं माना जा सकता; यह अनुभवों का केवल प्रारम्भिक सूचकांक है जिसमें व्यक्ति मनोवैज्ञानिक विकास की प्रक्रिया के माध्यम से जाता है। अंततः हम किशोरावस्था को किशोर आयु तक सीमित नहीं कर सकते क्योंकि बहुत से बच्चे अपने प्रारंभिक 20 वर्षो में किशोरों की भूमिका में होते हैं। उदाहरण के लिए 18 वर्ष के कुछ व्यक्ति वित्तीय रूप से स्वतंत्र होते है और अपने अभिभावकों से अलग रह रहे होते हैं (इसलिए प्रौढ़ माने जाते हैं), जबकि दूसरे लोग अभिभावकों से जुड़े होकर भी वित्तीय और सांवेगिक रूप से अभिभावकों पर निर्भर

हो सकते हैं (इसलिए किशोर माने जाते हैं)। हालाँकि किशोरावस्था को परिभाषित करने में अन्य सामाजिक और सांस्कृतिक निर्धारक हैं। बाल्यावस्था की तरह जैविक तथ्य अथवा आयु वर्ग की बजाय, किशोरावस्था भी **सांस्कृतिक निर्माण** है। आइए हम विभिन्न संस्कृतियों में किशोरावस्था की अवधारणा की चर्चा करते हैं।

1.5.1 विभिन्न संस्कृतियों में किशोरावस्था

आप अवश्य सोच रहे होंगें कि किशोरावस्था का निर्माण सांस्कृतिक रूप से किस प्रकार हो सकता है? किशोरावस्था का निर्माण इस अर्थ में होता है कि किस प्रकार विविध संस्कृतियाँ प्रौढ़ स्थिति को परिभाषित करती हैं और किशोरों द्वारा प्रौढ़ों की भूमिका और उत्तरदायित्वों को सीखने की शर्तो पर किशोरावस्था सांस्कृतिक परिस्थिति के अन्तर्गत होती है। इसके अलावा यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशेष समयावधि के अन्तर्गत घटित होती है। आप की किशोरावस्था, आप के अभिभावकों और आप के बच्चों की किशोरावस्था में कुछ निश्चित समानता होंगी, जैसे जैविक वृद्धि, लेकिन कुछ निश्चित विषयों जैसे खेल और संगीत को वरीयता प्रदान करने में अद्वितीय होगी। अब आप सहमत हो सकते हैं कि किशोरावस्था सभी संस्कृतियों में मौजूद है लेकिन भोगे गये अनुभव संस्कृति के मध्य वृहत रूप से भिन्न होते हैं। किशोरावस्था विविध संस्कृतियों में विभिन्न रूपों में देखी जाती है। निम्नलिखित बॉक्स में दिए गए विषय को पढ़िये :

> मध्यवर्गीय अमेरिका में किशोरावस्था को 'प्रघाण किशोरावस्था' (vestibule adolescence) नाम से जाना जाता है जो इसे 18–20 वर्ष की उम्र का समय बताता है। अरब में किशोरों को विवाह तक पारिवारिक व्यवस्था के अन्तर्गत रहना चाहिए ऐसा माना जाता है; जो परिवार की अभिरूचियों और विचारों के प्रभाव को प्रकट करता है। अमेरिका की मैक्सिको संस्कृति में किशोरों को घर छोड़ने से हतोत्साहित किया जाता है।

क्या आप जानते है कि कुछ संस्कृतियों में किशोरावस्था नहीं होती? उदाहरण के लिए, किशोरावस्था को एक चरण के रूप में मानने की बजाय, वे यौवनारम्भ को एक धार्मिक समारोह या गमन समारोह के रूप में संचाालित करेंगे। यह बाल्यावस्था के अंत और प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ को संकेतित करता है। क्या आप की संस्कृति बाल्यावस्था से किशोरावस्था के प्रवेश को संकेतित करने के लिए कोई समारोह करती है? **यौवनारम्भ अनुष्ठानों** के बहुत से उदाहरण हैं जिनका विकास बहुत संस्कृतियों में बाल्यावस्था से किशोरावस्था में गमन को संकेतित करने के लिए हुआ है। यौवनारम्भ अनुष्ठान विविध समाजों और परंम्परागत संस्कृतियों में विशेष रूप से सामान्य है।

निम्नलिखित बॉक्स को पढ़िये :–

> न्यूजीलैंड के पास प्रशान्त महासागर में **समोआ** नामक द्वीप में पुरूष और महिला दोनों ही यौवनारम्भ अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। किशोरावस्था में गमन के पारम्परिक समारोह में 14 और 16 की उम्र के बीच कुछ समय गोदना गोदाने के लिए होता है। लड़कों के लिए यह प्रक्रिया 2 से 3 महीने के लिए होती है जब कि लड़कियों के लिए इसमें 5 से 6 दिन लगते हैं।
>
> (https://www.pearsonhighered.com/assets/hip/us/hip_us_pearsonhighered/samplechapter/020559526x.pdf से प्राप्त)
>
> **नवाजो अमरीकियों** (एक अमेरिकी मूल की जनजाति) में महिलाओं में प्रथम रजोदर्शन के प्रारंभ से सम्बन्धित एक धार्मिक अनुष्ठान होता है। यह बच्चों में किशोरावस्था के चरण में प्रवेश का संकेत करता है।

(http://www.academia.edu/3011605/Adolescent_Identity_Formation_and_Rites_of_Passage_The Navajo_Kinaalda_Ceremony_for_Girls से लिया गया।)

यहूदी धर्म में, तेरह साल की उम्र में लड़कों को 'बार मिट्ज़वाह' (bar mitzvah) जिसका अर्थ है धर्मादेश का पुत्र' ("son of commandment") और बारह साल की उम्र में लड़कियों को 'बैट मिट्ज़वाह' (bat mitzvah) के रूप में माना जाता है। इन अनुष्ठानों से, वे प्रौढ़ों के रूप में समझे जाते हैं और यहूदी धर्मादेश और कानूनों का पालन करने के लिए बाध्य होते हैं।

तमिलनाडु के बहुत से हिस्सों में जब लड़की यौवनारम्भ को प्राप्त करती है तो शानदार प्रीतिभोज किया जाता है। वह हल्दी में स्नान करती है और दुल्हन जैसे कपड़े पहनती है और बड़े समुदाय के बीच घोषित की जाती है कि अब वह परिपक्व हो चुकी है।

नायर समुदाय (केरल में हिन्दू जातियों में से एक) में जब लड़कियाँ यौवनारम्भ को प्राप्त करती हैं तो वे शानदार तरीके से 'थिरन्दुकल्यानम्' ('thirandukalyanam") मनाती हैं। 'थिरन्दुमंगल्यम्' और 'थिरूअन्दुकुली' इस समारोह के लिए प्रयोग किये जाने वाले दूसरे शब्द हैं।

उड़ीसा में आदिम जनजाति समूह के 'चुक्तिया भुंजिया' (Chuktia Bhunjiya) लड़कियों के लिए दो प्रकार के धार्मिक समारोह करते हैं — i) पूर्व यौवनारम्भ समारोह और ii) यौवनारम्भ समारोह। पूर्व– यौवनारम्भ समारोह में लड़की की शादी एक बाण (कण) अथवा उसके प्रतीक पति के रूप में माहुल वृक्ष की शाखा से की जाती है। यदि वह इस समारोह से पूर्व यौवनारम्भ को प्राप्त करती है तो उसे चरित्रहीन (अभेदा abheda) के रूप में जाना जाता है और वह सामाजिक नापसन्दगी का सामना करती है। यह समारोह शादी समारोह की तरह ही है। यौवनारम्भ के दौरान, लड़की को एक माह के लिए दूसरों से अलग रखा जाता है। उसे किसी पुरूष के पास जाने और रसोई में घुसने से मना किया जाता है। एक महीने के बाद उसे तेल मिश्रित हल्दी से स्नान करने के लिए उसकी मामी द्वारा नदी की धारा पर ले जाया जाता है। नये कपड़े पहनने के बाद उसे अपने चाचा के घर ले जाया जाता है जहाँ पर उसे अपने घर ले जाने के लिए जल से भरा पीतल का पात्र दिया जाता है। सीधे रसोई में प्रवेश कर वह अपनी शुद्धता प्रकट करने के लिए नये बर्तनों में खाना बनाना शुरू करती है।

(**स्रोतः** www.Antrocom.net/upload/sub/antrocom/100114/11_Antrocom.pdf से लिया गया)।

उपरोक्त विवरणों से आप बच्चों की आगे आने वाली उम्र (यौवनारम्भ) से सम्बन्धित विविध समारोहों के बारे में जान गये होंगे। आप ने यह देखा कि उनमें से कुछ धार्मिक उत्तरदायित्व की उम्र से सम्बन्धित हैं और कुछ यौन परिपक्वता की उम्र से। किशोरावस्था निश्चित नहीं है। यह समय, स्थान और संस्कृति में भिन्न– भिन्न होती है। कुछ शोधकर्त्ता कहते हैं कि भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में नगरीय बने स्थानों की तुलना में बच्चों और प्रौढ़ों के मध्य कम भिन्नता है। यह कहा जाता है कि 'किशोरावस्था' बाल्यावस्था में एक अलग चरण के रूप में नहीं देखी जाती है। जैसे ही बच्चा प्रौढ़ों की भूमिका लेने के लिए शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाता है, वह प्रौढों की भूमिका को अपनाना शुरू कर देता है, उदाहरण के लिए, वे धन कमाने में लग जाते हैं, सभी घरेलू कार्य करने लगते हैं; प्रौढों जैसे कपड़े पहनना शुरू कर देते हैं और यहाँ तक कि कम उम्र में ही शादी भी कर लेते हैं। यह भी तर्क देते हैं कि किशोरावस्था की अवधारणा (बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था तक

संक्रमण के एक चरण के रूप में) भारत और दूसरे अन्य देशों में बाद में अस्तित्व में आई है।

अब आप जान गये होंगे कि किशोरावस्था की सीमाओं को परिभाषित करना कोई सरल कार्य नहीं है। सामान्यतया, मनोवैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि किशोरावस्था यौवनारम्भ से शुरू होती है। ठीक उसी समय, किशोरावस्था के अन्त को चिन्हित करना कठिन है जिसे हम ' परिपक्वता' नाम देते हैं। सामान्यतया परिपक्वता जीवन की उस उम्र अथवा चरण की ओर संकेत करती है जब व्यक्ति शारीरिक, सांवेगिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से पूर्णतया विकसित माना जाता है। परिपक्वता प्राप्त करने की दर एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होगी। हम सामान्यतया यह मानते हैं कि परिपक्वता व्यक्ति द्वारा तब प्राप्त की जाती है जब वह समाज में सामाजिक रूप से परिभाषित प्रौढ़ों की भूमिका में लग जाता है जैसे आर्थिक स्वतंत्रता, शादी करना, अभिभावक बनना और अन्य। अतः हम किशोरावस्था को वह काल मान सकते हैं जो यौवनारम्भ और विविध प्रौढावस्था की भूमिकाओं को अपनाने के बीच में निहित होता है। अब तक हम बाल्यावस्था और किशोरावस्था की अवधारणा की चर्चा कर चुके हैं । दूसरे अनुभाग में हम बच्चा, किशोर और व्यस्क में भिन्नताओं का पता लगायेंगे।

क्रियाकलाप 1:

विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले दो किशोरों का साक्षात्कार लीजिए और उनके बढ़ने के अनुभवों पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

1.6 बच्चा, किशोर और व्यस्क में भिन्नताएँ

एक किशोर और एक व्यस्क से एक बच्चे को सीमांकित करने से पूर्व हम प्रत्येक अवधारणा के अर्थ को कुछ मानदण्डों के रूप में समझने का प्रयत्न करते हैं। **व्यस्क** एक मानव प्राणी अथवा सजीव अंगी है जोकि सापेक्षिक रूप से परिवक्व आयु का है, यौन परिपक्वता से प्रारूपिक रूप से सम्बन्धित है और जननीय उम्र को प्राप्त कर चुका है। बच्चा, किशोर और व्यस्क में भिन्नता पर विचार करते समय हम निम्नलिखित मानदण्डों पर विचार कर सकते हैं :

- आयु
- क्षेत्रों के विस्तार में अंतर
  - शारीरिक
  - संज्ञान
  - सामाजिक
  - सांवेगिक
- प्रत्यक्षण

अब हम प्रत्येक मानदण्ड की विस्तार में चर्चा करते हैं :–

➢ **आयु** :– हममें से अधिकतर सोचते हैं कि बच्चा, किशोर और व्यस्क में अन्तर निर्धारित करने के लिए मुख्य कारक आयु है। हम बच्चे की कालानुक्रमिक आयु के बारे में अनुभाग 1.4 में 'आयु मानदण्ड' शीर्षक के अन्तर्गत और किशोर की कालानुक्रमिक आयु के बारे में अनुभाग 1.5 में दी गई तालिका 1.1 के अन्तर्गत पहले ही चर्चा कर चुके हैं। प्रौढ़ावस्था में प्रवेश की वैधानिक परिभाषा सामान्यतया 16–21 की उम्र के बीच अथवा समुदाय और देश जिसके सन्दर्भ में प्रश्न है, अनुसार भिन्न– भिन्न होती है। हमने आयु उपागम को क्यों नहीं लिया है, इसकी चर्चा

'किशोरावस्था' की अवधारणा शीर्षक के अन्तर्गत पहले ही कर चुके है। विविध विकासात्मक चरणों के आधार पर आयु– मानदण्ड निम्नलिखित विशिष्टताओं से बना हैः–

– **पहचान–खोज की आयु :–** बच्चे और किशोर इस बात का पता लगाने के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं कि वे कौन हैं और शिक्षा से क्या चाहते हैं। प्रौढ़ों के मामले में, वे परिवार और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व की दृष्टि से अपनी पहचान बना चुके हैं।

– **अस्थिरता की आयु :–** बच्चे और किशोर समाज के प्रति अपनी भूमिका और उत्तरदायित्त्व के बारे में अस्थिरता महसूस करते हैं। वे प्रौढ़ों द्वारा मार्गदर्शन किये जाते हैं कि वे क्या करें, क्या न करें। इसके विपरीत प्रौढ़ अपनी सामाजिक भूमिका में स्थिरता व्यक्त करते हैं।

➢ **स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करने की आयु :–** बच्चों और किशोरों में अपने निर्णयों में स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करने की कमी होती है। वे प्रौढ़ों के द्वारा मार्गदर्शन की आवश्यकता महसूस करते हैं विशेष रूप से बाल्यावस्था और किशोरावस्था के चरणों में माता–पिता और शिक्षकों के द्वारा। यहाँ तक कि किशोर अपनी उभरती हुई स्व–परिभाषाओं, सहयोग और स्व–स्पष्टीकरण के लिए अपने समसमूहों की राय सहित अपने साथियों का भी सहारा लेते हैं। अपने दिन–प्रतिदिन के क्रिया–कलापों में प्रौढ़ पूर्णतया स्व–केन्द्रित होते हैं।

– **दुविधा महसूस करने की आयु :–** किशोरों से भिन्न, बच्चों और प्रौढ़ों में बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच की भावना की कमी होती है। किशोर स्वयं को उभरते हुए प्रौढ़ों के रूप में मानते हैं लेकिन अब भी पूर्ण रूप से प्रौढ़ की तरह महसूस नहीं करते।

➢ **क्षेत्रों के विस्तार में अन्तर :–** विकास को तीन क्षेत्रों में वर्णित किया जाता है। शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक/संवेगात्मक क्षेत्र। आइए अब हम इन तीन क्षेत्रों के आधार पर बच्चे, किशोर और प्रौढ़ में भिन्नताओं (अन्तर) की जाँच करते हैं।

– **शारीरिक :–** बाल्यावस्था के दौरान शारीरिक वृद्धि एक समान गति से जारी रहती है। बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक के संक्रमण काल में अनेक प्रकार के जैविक परिवर्तन होते हैं जैसे संवृद्धि प्रवेग, (growth spurt), अन्तः स्राविक (हार्मोन सम्बन्धी) (hormonal) परिवर्तन, और लैंगिक परिपक्वन जो कि यौवनारम्भ के साथ आते हैं। जब कि बाल्यावस्था के समय शारीरिक वृद्धि अपनी चरम– सीमा पर पहुँच जाती है।

– **संज्ञान** :– प्रौढ़ों से भिन्न, बच्चे का संज्ञान विचार में नवीनता के द्वारा बताया जाता है। बच्चा संसार को हमेशा नयी आँखों से देखता है और संसार को खोजने और सीखने में रूचि रखता है। किशोर संसार को हमेशा ध्रुवत्व के अर्थों में देखता है जैसे– सही/गलत, अच्छा/ बुरा, जब कि प्रौढ़ इस पूर्णतावादी विचार से दूर भागते हैं क्योंकि वे दूसरों के बहु परिप्रेक्ष्यों से सजग हो जाते हैं।

– **सामाजिक :–** बच्चे और किशोर नये विचारों एवं मूल्यों को ग्रहण करते हुए और नये कौशलों से सामाजिक विकास के मार्ग में होते हैं। उनका लक्ष्य स्व के सकारात्मक भाव का विकास करना है। वे सूक्ष्म तंत्र में इन अधिगम अनुभवों को अपने ध्यान देने वालों से प्राप्त करते हैं। प्रौढ़ों का सामाजिक विकास उनकी उन सामाजिक भूमिकाओं से जुड़ा होता है जो उन्हें समाज में अदा करना होता है। इन

भूमिकाओं को कार्य, विवाह और अभिभावकत्व में वर्गीकृत किया जाता है। एरिक्श्न के प्रौढ़ विकास के सिद्धान्त के सुझावों के अनुसार कार्य का किसी पहचान से, विवाह का आत्मीयता (घनिष्ठता) की खोज से और बच्चों के प्रति अभिभावकत्व का प्रजनन के अर्थो में सम्बन्ध होता है।

– **संवेग** :– प्रौढों से भिन्न, बच्चे और किशोर संवेगों के प्रबन्धन की अपनी क्षमता को विकसित करने की प्रक्रिया में लगे होते हैं। इस क्षमता की कमी कभी–कभी उन्हें जोखिम लेने के व्यवहारों की ओर ले जाती है। इसके विपरीत प्रौढ़ स्व–नियमन और स्वप्रबन्धन की योग्यता को प्राप्त करते हैं।

– **प्रत्यक्षण** :– बच्चे, किशोर और प्रौढ़ संसार के अपने प्रत्यक्षण में एक दूसरे से बहुत भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, एक प्रश्न पूछ कर जैसे 'बादलों को कौन घुमाता है?' आप बच्चों और प्रौढों से बहुत सारे उत्तर प्राप्त करेंगे। इन तीनों जवाबों को देखो :

बच्चा 1: जैसे मैं टहल रहा हूँ, वैसे ही बादल भी टहल रहा हैं।

बच्चा 2: वे स्वयं घूमते हैं क्योंकि वे जीवित हैं।

किशोर : पृथ्वी के घूर्णन के कारण बादल घूमता है।

प्रौढ़ : बादल हवा के कारण घूमते हैं।

उपरोक्त जवाबों से, आप भौगोलिक परिदृश्य के कारण–कार्य–सिद्धान्त को समझने में व्यक्तियों के प्रत्यक्षण में भिन्नताओ का पता लगा सकते हैं। बच्चे अधिकतर बाह्य वास्तविकता के अर्थों में समझते हैं (बच्चा1 और बच्चा 2 के जवाबों को देखिये)। प्रौढों से भिन्न बच्चे अपनी इन्द्रियों से सूचना को अलग रखते हैं और इस लिए दृश्य जगत को अलग तरीके से अनुभव कर सकते हैं। किशोर इस घटना–क्रिया–विज्ञान को अमूर्त रूप में सोचते हैं और प्रौढ़ इसे अनुभवों के आधार पर समझते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें – 3

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) आप किस आधार पर बच्चे को प्रौढ़ से अलग करेंगे?

1.7 सारांश

इस इकाई में हमने विविध परिप्रेक्ष्यों से बाल्यावस्था और किशोरावस्था की अवधारणा की चर्चा की है। मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से जाँच करते समय, आप देख सकते हैं कि बाल्यावस्था की कोई कालानुक्रमिक सीमायें अथवा जैविक सीमायें नहीं हैं। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के अनुसार, बाल्यावस्था एक सामाजिक निर्माण है। सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से बाल्यावस्था के प्रति हमारी अभिवृत्ति समाज की प्रभावी विचार पद्धतियों के द्वारा प्रभावित है जिसमें हम रहते हैं। और इसलिए यह समय और संस्कृति के अनुसार भिन्न

होगी। इसके बाद हमने विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में 'बच्चा' शब्द को परिभाषित किया है। हालाँकि बच्चे की आयु के विचार में एकरूपता नहीं है, सामान्य रूप से हम उस व्यक्ति को बच्चे के रूप में समझेंगे जो 18 वर्ष से नीचे की आयु का है।

हमने किशोरावस्था की अवधारणा की व्याख्या की और विभिन्न संस्कृतियों के सन्दर्भ में इसकी चर्चा किया कि किशोरावस्था निश्चित नहीं है; यह समय और संस्कृति के अनुसार भिन्न होती है। ठीक उसी समय, किशोरावस्था के अन्त को चिन्हित करना कठिन है जिसे हम 'परिपक्वता' नाम देते हैं। एक किशोर और प्रौढ़ से बच्चे को भिन्न करने के साथ ही इकाई समाप्त होती है।

1.8 इकाई अंत्य अभ्यास

1. निम्नलिखित मानदण्डों के आधार पर प्राचीन काल और मध्यकाल में बाल्यावस्था की तुलना कीजिए और वैषम्य दिखाइयेः
   - उत्तरदायित्व
   - दक्षता
2. भारत में किसी एक सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ का चयन कीजिए और यह परीक्षण कीजिए कि उस समाज में बाल्यावस्था और किशोरावस्था को किस प्रकार समझा जाता है?
3. क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि 'किशोरावस्था सांस्कृतिक रूप से निर्मित है'? अपने उत्तर को सिद्ध कीजिए।

1.9 आपकी प्रगति जाँच के उत्तर

1. i) अपना स्वयं का उत्तर लिखिये। अनुभाग 1.3.2 का उल्लेख कीजिए।
2. i) मध्यकालीन यूरोप में, शैशव काल सामान्य रूप से जन्म के समय अथवा स्तनपान के अन्त तक होना माना जाता है जो तीन वर्ष की उम्र तक जारी रहता है। बाल्यावस्था का चरण लगभग सात वर्ष के अन्त तक माना जाता है जब व्यक्ति निश्चित घरेलू अथवा औद्योगिक कार्यों को करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। 18 वीं शताब्दी के दार्शनिक जीन जैक्स रूसो (Jean Jacques Rousseau) ने बाल्यावस्था को जन्म और बारह वर्ष के बीच में होना माना है। बाल्यावस्था में समय, स्थान और संस्कृति के अनुसार अन्तर होता है। इसलिए बच्चे की परिभाषा पर कोई सार्वभौमिक सहमति नहीं है।
3. i) अनुभाग 1.6 का उल्लेख कीजिए।

1.10 सन्दर्भ एवं उपयोगी सामग्री

ऐरीज, पी. (1962). सेंचुरीज ऑफ चाइल्डहुड, हरमंडस्वर्थः पेंगुइन।

डी मौस, एल. (Ed.) (1974). दि हिस्ट्री ऑफ चाइल्डहुड. न्यूयार्कः साइकोहिस्ट्री प्रेस।

एस्मैन, ऐरोन एच. (Ed.) (1975). 'दि साइकोलॉजी ऑफ एडोल्सेंस– एसेंसियल रीडिंग्स'. न्यूयार्कः इन्टरनेशनल युनिवर्सिटीज प्रेस, इंक।

जेम्स, ए. & जेम्स, ए. (2008). की कॉन्सेप्ट्स इन चाइल्डहुड स्टडीज. यू.के. : सेज।

केहिली, मैरी जेन (2004). अन्डरस्टैंडिंग चाइल्डहुडः ऐन इन्ट्रोडक्शन टु सम की थीम्स ऐंड इसूज. इनः केहिली, मैरी जेन ऐन इन्ट्रोडक्शन टु चाइल्डहुड स्टडीज. मेडेनहेडः ओपेन यूनिवसिर्टी प्रेस. http://www.mcgraw-hill.co.uk/html/0335228704.html से 09/02/2016 को लिया गया।

मार्कस्टार्म, कैरोल. ए. & इबोरा, एलेजैंड्रो.(2003). एडोल्सेंट आइडेंटिटी फारमेशन ऐंड राइट्स ऑफ पैसेज; दि नवाजो किनाल्डा सेरेमनी फॉर गर्ल्स, *जर्नल आफ रिसर्च ऑन एडोल्सेंस*, 13 (4), 399–425. http://www.academia.edu/3011605/Adolescent_Identity_formation_and_Rites_of_Passage_The_Navajo_Kinaalda_Ceremony_for_Girls से 11/02/2016 को लिया गया।

मयाल, बी (1991).'चाइल्डकेयर ऐन्ड चाइल्डहुड'. चिन्ड्रेन ऐन्ड सोसाइटी, 4(4), 374–85।

मुंसी, क्रिस्टोफर. (जून,2006). एमर्जिगं एडल्ट्सः द इन बिट्वीन एज. अमेरिकन साइकोलॉजिकल एशोसियेशन, 37(6), पी.68. http://www.apa.org/monitor/jun06/emerging. aspx से 10/02/2016 को लिया गया।

प्राउट, ए. (2005).द फ्युचर ऑफ चाइल्डहुडः टुवर्ड्स द इन्टरडिसिप्लनरी स्टडी ऑफ चिल्ड्रेन. लन्दनः फाल्मर प्रेस।

सबर, भुवनेश्वर, (2014) चुक्तिया भुंजिया–ए निग्लेक्टेड ट्राइब ऑफ उड़ीसा, इन्डिया. ऐन्ट्रोकाम ऑनलाइन जर्नल ऑफ ऐन्थ्रोपोलॉज़ी, 10 (1), 99–109. www. Antrocom.net/upload/sub/antrocom/100114/11- Antrocom.pdf. से 10/02/2016 को लिया गया।

सैन्ट्रोक, जॉन डब्लयू. (2007). ऐडोल्सेंस (11th ed.). नई दिल्लीः टाटा मैक ग्रा– हिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड।

स्कैफर, एच. रूडोल्फ (2004).'इन्ट्रोड्यूसिंग चाइल्ड साइकोलॉजी'. युनाइटेड किंगडमः ब्लैकवेल पब्लिशिंग लिमिटेड।

स्टीफेन्स, एस. (Ed.). (1995). चिल्ड्रेन ऐन्ड द पॉलिटिक्स ऑफ कल्चर. प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस,प्रिन्सटन, एन जे।

स्वैन्सन, देना फिलिप्स, एडवर्ड्स, मलिक चाका ऐन्ड स्पेन्सर, मार्गरेट बील (Eds.). (2010). एडोल्सेंस डेवलपमेंट ड्यूरिंग ए ग्लोबल एरा.यू.एस.ए.ः एल्सेवियर इंक।

इकाई 2 सामाजीकरण एवं विविध परिस्थितियों में वृद्धि

2.1 परिचय

2.2 उद्देश्य

2.3 सामाजीकरण की संकल्पना

2.3.1 सामाजीकरण की विशेषताएं

2.3.2 सामाजीकरण का महत्त्व

2.3.3 सामाजीकरण के प्रकार

2.4 विभिन्न संस्कृतियों में सामाजीकरण का प्रयोग

2.5 विभिन्न संदर्भों में वृद्धि

2.5.1 विभिन्न प्रकार के पारिवारिक ढाँचों में वृद्धि

2.5.1.1 परम्परागत परिवार

2.5.1.2 गैर–परम्परागत परिवार

2.5.1.3 आय पर आधारित पारिवारिक संरचना

2.5.2 अभिभावक व बच्चों के सम्बन्ध

2.5.2.1 पालन–पोषण के विभिन्न तरीकों का बच्चे के विकास पर प्रभाव

2.5.3 विपरीत परिस्थितियों में वृद्धि

2.5.3.1 बच्चे और गरीबी

2.5.3.2 युद्ध क्षेत्र में बच्चे

2.5.3.3 अनाथालयों में बच्चे

2.5.3.4 प्रवासी मजदूरों के बच्चों के रूप में वृद्धि

2.5.3.5 निःशक्तता के साथ वृद्धि

2.5.4 बालिका के रूप में वृद्धि

2.5.4.1 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धि

2.5.4.2 जनजातीय समुदाय में वृद्धि

2.5.4.3 गंदी बस्तियों में वृद्धि

2.6 बच्चों की वृद्धि से सम्बन्धित अनुभवों को समझने में शिक्षकों के लिए निहितार्थ

2.7 सारांश

2.8 इकाई अंत्य अभ्यास

2.9 आपकी प्रगति जाँच के उत्तर

2.10 संदर्भ एवं उपयोगी सामग्री

2.1 परिचय

प्रत्येक समुदाय उसमें पैदा होने वाले प्रत्येक बच्चे को एक जिम्मेदार सदस्य बनाने का प्रयास करता है। समुदाय प्रत्येक सदस्य को जन्म से लेकर मृत्यु–पर्यन्त सामाजिक बनाता है, वस्तुतः सामाजीकरण की प्रक्रिया बच्चे के गर्भ में आने से ही प्रारंभ हो जाती है। यह इसलिए होता है क्योंकि समुदाय इस बात के लिए आश्वस्त होता है कि प्रत्येक सदस्य का व्यवहार सामूहिक रूप से आदर्श के अनुकूल हो। इस प्रकार सामाजीकरण

व्यक्ति विशेष को सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को पहुँचने वाला लगातार प्रवाह है। व्यक्ति विशेष का यह विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है जो लगातार जीवन–पर्यन्त चलती है। व्यक्तिगत छवि का विचार वह कल्पना है जो व्यक्ति दूसरों की सहायता से बनाता है। एक साधारण बच्चा जिसके प्रयासों को सराहा जाता है और पारितोषिक दिया जाता है वह अपने लिए एक गौरवयुक्त अनुभूति करता है जो आने वाले वर्षों में उसके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती है।

इस इकाई में हम सामाजीकरण की संकल्पना एवं बच्चों की वृद्धि के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करेंगे। यह इकाई आपको बच्चों की वृद्धि से जुड़े अनुभवों द्वारा पड़ने वाले प्रभाव को समझने में मदद करेगी। बच्चों की वृद्धि से जुड़े हुए कुछ अनुभव ये अध्यापकों के लिए निहितार्थ हैं भी इस इकाई में दर्शाये गए हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपको इस योग्य होना चाहिए :–

- सामाजीकरण के महत्त्व एवं उनके प्रकार की समझ विकसित करना;
- विभिन्न संस्कृतियों में प्रचलित व्यक्तिगत अंतर के कारण सामाजीकरण की प्रक्रिया के प्रति संवेदनशील होना;
- लिंग के आधार पर लड़कियों में नकारात्मक और लड़कों में सकारात्मक व्यक्तिगत भाव के कारण अन्तर को पहचानना;
- समुदाय में विभिन्न प्रकार के परिवारों की रचना एवं उनमें अनेक प्रकार के पालन–पोषण के तरीकों के प्रति सजग होना;
- वृद्धि की प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार की सन्ततियों की गणना करना;
- बच्चों की वृद्धि से जुड़े अनुभवों को समझने में शिक्षकों के लिए निहितार्थों की चर्चा करना।

2.3 सामाजीकरण की संकल्पना

''सामाजीकरण'' शब्द आपसी व्यवहार की प्रक्रिया को दर्शाता है जिसमें बच्चा अपने समुदाय में पैदा होकर उसके अनुसार श्रद्धा, गुण, दृष्टिकोण और आदतों को धारण करता है। समुदाय के दृष्टिकोण से सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरित होती है और फलती–फूलती है। व्यक्तिगत विचार से सामाजीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति विशेष का विकास एवं सामाजिक व्यवहार का सीखना सन्निहित है। वह व्यक्ति विशेष समाज की आशाओं के अनुसार कार्य करने के लिए सीखता है।

आइए सामाजीकरण की कुछ मूलभूत विशेषताओं पर दृष्टि डालें:

2.3.1 सामाजीकरण की विशेषताएं

1. बुनियादी अनुशासन को मन में स्थित करना

सामाजीकरण व्यक्ति विशेष में बुनियादी अनुशासन स्थापित करता है। प्रत्येक व्यक्ति समाज में अपनी उपस्थिति की स्वीकृति की स्थापना का प्रयास करता है। वह अपनी उत्तेजना पर नियन्त्रण करना सीखता है।

2. व्यवहार पर नियन्त्रण करना

जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक नियमों के अनुरूप कार्य करना सीखता है और सामाजिक आदेशों का पालन करता है। ये नियम और कार्य करने के तरीके व्यक्ति विशेष के जीवन का एक अंग बन जाते हैं और समाज के आदर्शों के अनुरूप उसके व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।

3. सामाजीकरण प्रक्रिया के साधनों के बीच सौहार्द

सामाजीकरण की विभिन्न संस्थाओं जैसे घर, विद्यालय, समान पद और प्रचार साधनों में उत्पन्न विरोध, एक संस्था से दूसरी संस्था को विचार, उदाहरण एवं कौशल प्रदान करने में दुविधापूर्ण स्थिति पैदा करेगा। इसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति का सामाजीकरण मंद गति वाला और निष्प्रभावी होगा।

4. औपचारिक एवं अनौपचारिक सामाजीकरण

औपचारिक सामाजीकरण शिक्षण संस्थाओं के सीधे निर्देशों से होता है और अनौपचारिक सामाजीकरण घर जैसी संस्थाओं से उत्पन्न होता है। वास्तव में परिवार शिक्षा का प्राथमिक एवं सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत है जहाँ बच्चे अपनी भाषा, रीति–रिवाज, संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों को सीखते हैं।

5. एक सतत प्रक्रिया

सामाजीकरण एक लम्बे समय तक चलने वाली सतत प्रक्रिया है जो तब तक नहीं रूकती जब तक बच्चा वयस्क नहीं हो जाता।

2.3.2 सामाजीकरण का महत्त्व

सामाजीकरण किसी समुदाय एवं उसमें रहने वाले व्यक्ति दोनों के लिए ही जरूरी है। यह इस बात की व्याख्या करता है कि व्यक्ति विशेष किस प्रकार समुदाय के अन्य लोगों से जुड़ता है। एक समुदाय लगातार यह ध्यान रखता है कि नये सदस्यों को संस्कृति किस प्रकार सिखाई गई थी। बच्चे के पालन पोषण में सामाजीकरण एक महत्त्वपूर्ण अंग है। खंड दो की पाँचवी इकाई में आप अभिभावक एवं बच्चे के बीच प्रेमयुक्त संबंधों के महत्त्व को पढ़ेंगे। सौहार्दयुक्त प्रेम भविष्य में सकारात्मक सामाजीकरण संबंधों के विकास हेतु केन्द्र बिन्दु होता है। हम सब जानते हैं कि सामाजिक संबंधों को बनाने हेतु अभिभावक पहले अध्यापक होते हैं। सामाजीकरण की प्रक्रिया में अभिभावक, बराबरी वाले एवं बच्चे के आस–पास के अन्य लोग बच्चे के विकास हेतु यह सीखने में मदद करते हैं कि बच्चा समाज के नियमों व तरीकों के अनुसार किस प्रकार सही ढंग से वार्तालाप करे। अधिकांश बच्चों के लिए विद्यालय परिवार द्वारा प्रारंभ किये गए सामाजीकरण को लगातार आगे बढ़ाते हैं। विभिन्न छात्रों के बीच रहकर बच्चे विद्यालयों के कमरों में बैठकर अनेक अध्यापकों के निर्देशों को सुनते हुए लचीलेपन की कला को सीखते हैं।

सामाजीकरण के पाठ्यक्रम में एक नवजात बच्चा संस्कृति, कौशल, भाषा, हस्तकौशल निपुणता सीखता है जो उसे समाज का जिम्मेदार और समाज में भाग लेने वाला सदस्य बनाती है। सामाजीकरण का मुख्य लक्ष्य बच्चे के सामाजिक मूल्यों में वृद्धि एवं बच्चे की स्वीकृति को उन्नति की ओर ले जाना है। यद्यपि बचपन में ही प्रत्येक बच्चा स्वयं की एक आकृति लेना प्रारंभ कर देता है तथापि किशोरावस्था खुलेपन एवं पूर्वानुमान के सामाजीकरण का समय है। प्रचार माध्यमों में किये गए अनेक व्यक्तिगत अभिनयों को देखकर किशोर उन्हें अपना आदर्श मानने लगते हैं, बाहरी दुनिया से जुड़कर अपनी आकांक्षाओं को बढ़ाने लगते हैं। इस प्रकार उचित कर्त्तव्य का निर्वाह जिसे किशोर उस समय करता है

सामाजीकरण का दूसरा मुख्य पहलू है। इस प्रकार पुरूष, स्त्रियाँ, अभिभावक, पति, पत्नियाँ, पुत्र, पुत्रियाँ, पड़ोसी, छात्र एवं अध्यापक सभी व्यक्तिगत रूप से समाज के आदर्शों के अनुरूप अभिनय करते हैं। लेकिन इस बात को याद रखा जाना चाहिए कि मनुष्य केवल सामाजीकरण का ही उत्पादन नहीं है। वंशानुक्रम भी उसमें एक महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। वह प्रायः उत्तराधिकार में कुछ शक्तियाँ प्राप्त करता है जो उसे विभिन्न दशाओं में परिपक्वता प्रदान करती हैं। अगले भाग में आप सामाजीकरण के विभिन्न प्रकारों के बारे में जानेंगे।

2.3.3 सामाजीकरण के प्रकार

सामाजीकरण के अनेक प्रकार हैं जो बच्चे के विकास के समय अनेक स्तरों पर दिखाई पड़ते हैं और उसके परिपक्व एवं प्रौढ़ होने में उसके विचारों, भावों और क्रियाकलापों पर प्रभाव डालते हैं। आइए एक–एक करके उन सभी को जाँचें कि वे बच्चे की सोच एवं उत्तरगामी व्यक्तित्व के विकास पर क्या प्रभाव डालते हैं।

- **प्राथमिक सामाजीकरण** : यह सबसे पहला सामाजीकरण है जिसके द्वारा बच्चों को अपने समुदाय के सन्तोषजनक सदस्य बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई पिता अपने माता–पिता का सम्मान करता है तो बच्चा अपने पिता और समुदाय के अन्य बड़े सदस्यों का सम्मान करना सीखता है।

- **द्वितीयक सामाजीकरण** : यह वह सामाजीकरण है जिसमें व्यक्ति एक छोटे समूह का सदस्य बनता है जो एक बड़े समूह का ही हिस्सा होता है। वह समूह के माध्यम से सामाजिक मूल्य, सोचने का तरीका और आस्था जैसी बातें सीखता है। उदाहरण के लिए कक्षा दस का एक विद्यार्थी कक्षा में जीविकोपार्जन संबंधी परामर्श लेकर भविष्य में एक चिकित्सक बनना चाहता है।

- **विकासात्मक सामाजीकरण** : सामाजीकरण के इस प्रकार में व्यक्ति विशेष की विकास की स्थिति में संस्कृति से जुड़े सामाजिक कौशलों पर जोर दिया जाता है। उदाहरण के लिए उच्चतर माध्यमिक कक्षा का एक शर्मीला छात्र अपने मौखिक वार्तालाप के विकास हेतु ''दैनिक कार्यक्रम के लिए विचार'' में भाग लेना प्रारंभ कर देता है।

- **पूर्वानुमानिक सामाजीकरण** : सामाजीकरण का यह प्रकार इस प्रक्रिया पर बल देता है जिसमें कोई व्यक्ति किसी समुदाय विशेष के नियमों या रीति–रिवाजों को स्वीकार करता है, और जिन्हें वह भविष्य में अपनाना चाहता है।

- **पुनः सामाजीकरण** : सामाजीकरण का यह प्रकार व्यक्ति के पुराने व्यवहार एवं तौर तरीकों को नकारते हुए नये व्यवहार को स्वीकार करता है ताकि वह व्यक्ति अपने जीवन के एक भाग से दूसरे भाग में स्थानान्तरित हो सके। पुनः सामाजीकरण मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन चक्र में चलने वाली प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति अपना कार्य–क्षेत्र/नौकरी बदलता है तो वह अपने नये कार्य के अनुसार अपना रहन–सहन बदल लेता है।

अपनी प्रगति जाँचें – 1

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) कुछ उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए कि सामाजीकरण किस प्रकार हमारी विचार–धारा को प्रभावित करता है?

....

....

....

....

ii) क्या सामाजीकरण एक दैनिक प्रक्रिया है? विस्तार पूर्वक लिखिए।

....

....

....

....

2.4 विभिन्न संस्कृतियों में सामाजीकरण का प्रयोग

आप जानते हैं कि विभिन्न संस्कृतियाँ और उप संस्कृतियाँ कुछ विशेष व्यवहारों के कारण एक दूसरे से भिन्न हैं जो समुदाय में उचित माने जाते हैं। समुदाय के सदस्य उन सामाजिक मूल्यों को सीखते हैं जो धर्मतंत्र के द्वारा नियंत्रित किये जाते हैं। इस संदर्भ में सामाजीकरण को समाज में प्रभावशाली भागीदारी के लिए आवश्यक कौशल एवं गुणों को सीखने के माध्यम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। सांस्कृतिक सामाजीकरण उन तरीकों से संबंध जोड़ता है जिनके द्वारा माता–पिता परिवार के साथ नीतिगत एवं वंशवाद पर चर्चा करते हैं व मुख्य रूप से बच्चे तक सांस्कृतिक गुणों, आस्था, रीतिरिवाजों और व्यवहार को किस प्रकार वार्तालाप द्वारा स्थानान्तरित करते हैं। यह सांस्कृतिक समाज में सक्रिय सदस्य बनने हेतु बच्चे द्वारा अर्जित किये गए कौशलों पर भी निर्भर करता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में सामाजीकरण प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण घटक यह भी है कि वह व्यक्ति सामाजिक गुणों, आस्थाओं और विचारधाराओं को स्वीकारता है या नकारता है। सामाजीकरण तौर–तरीकों, सामाजिक मूल्यों एवं व्यवहारों को मेहनत से अर्जित करने की सतत प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया उसी समय प्रारंभ हो जाती है जब हम बढ़ने लगते हैं, जब हमारा व्यवहार चारों ओर से ग्रहण करने योग्य बातें ग्रहण करता है और निषिद्ध बातें हटाता है। उदाहरण के लिए टैक्सास का निवासी सभी से आदर पूर्वक, उचित सांस्कृतिक तरीके से मिल सकता है। पहले आप अपने सिर से टोपी उतारिये, फिर उसकी आंखों में देखिए, अपना दाँया हाथ आगे बढ़ाइए और कहिए, ''हैलो मैडम, आपसे मिलकर अच्छा लगा।'' अब हम कहते हैं कि कुछ वर्षों बाद इस ग्वाले को जापान में काम मिल जाता है जहाँ पर आँख मिलाना और शरीर छूना उनके अभिवादन में शामिल नहीं है। यहाँ उसे अपने नये कार्य क्षेत्र के वातावरण के अनुसार सामाजीकरण प्रक्रिया को अपनाना पड़ेगा।

हमारे देश के विभिन्न भागों में अभिवादन के अलग–अलग तरीके हैं। सिख परिवार में जन्म लेने वाला बच्चा ''सत श्री अकाल'' बोलना सीख लेता है, एक हिन्दू परिवार में जन्म लेने वाला बच्चा हाथ जोड़कर ''नमस्ते'' कहता है और एक मुस्लिम परिवार का बच्चा ''आदाब'' या ''अस–सलामुलैकुम'' कहेगा। हमारी खाने की आदतें, वस्त्र पहनने के तरीके, विभिन्न त्योहारों का मनाना सब हमारी सामाजीकरण की प्रक्रिया से निश्चित किये जाते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें – 2

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) कुछ उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए कि विभिन्न संस्कृतियों में सामाजीकरण प्रक्रिया किस प्रकार होती है?

....

....

....

....

ii) विभिन्न संस्कृतियों में व्यक्तियों के सामाजिक आदर्श/सिद्धान्त भिन्न–भिन्न क्यों होते हैं?

....

....

....

....

2.5 विभिन्न संदर्भों में वृद्धि

जब बच्चा बढ़ रहा होता है तो उसे अनेक प्रकार की विविधताओं का सामना करना पड़ता है जो उसके व्यक्तित्व के विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। बच्चों के सामने विकास संकट के अनेक प्रकार हैं जिनके परिणामस्वरूप अनेक विविधताएं पैदा होती हैं। वास्तव में इसके कुछ लाभ भी हैं। यह समुदाय का कर्त्तव्य है कि वह यह सुनिश्चित करे कि बच्चे को बोध, व्यावहारिकता, भावात्मकता एवं भाषायी ज्ञान की कमी न रहने पाए।

विविधता एक जोखिम के रूप में

प्रवासी परिवारों के बच्चों में आपराधिक प्रवृत्ति, आक्रामकता, अति सक्रियता, ध्यान में कमी और कमजोर शैक्षिक प्रदर्शन का खतरा अधिक रहता है। वे जाति, वर्ग, कुल, धर्म और रंग पर आधारित अंतर का भी सामना करते हैं। विभिन्न सामाजिक स्तरों पर बहिष्कार के ऐसे अनुभव बच्चों के स्वस्थ भावात्मक, सामाजिक और शारीरिक विकास को अपमानजनक स्थिति में पहुँचाते हैं। आवासीय, आर्थिक, भाषाई, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अलगाववाद न केवल बच्चों के लिए खतरा पैदा करता है बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक धरातलों पर स्थित जनसंख्या के बीच अविश्वास फैलाता है।

निम्न मामले पर विचार करें :

केस 1 : दस वर्षीय प्रवासी रोहित अपने हम उम्र साथियों के साथ पार्क में खेलना चाहता है। यद्यपि उसके हम उम्र उसे प्रत्यक्ष रूप से क्रिकेट के खेल में शामिल नहीं करेंगे फिर भी उसका अतिरिक्त खिलाड़ी के रूप में प्रयोग करेंगे जो मैदान से बाहर जाने वाली गेंद को उठा कर लायेगा। रोहित इस अलगाववाद से आहत होता है परन्तु कुछ नहीं कर सकता।

विविधता एक सम्पत्ति के रूप में

शोधकार्य यह दर्शाते हैं कि प्रवासी परिवारों के बच्चों के विकास पर प्रवास के कुछ सकारात्मक प्रभाव भी पड़े हैं जैसे मजबूत नैतिकता, पारिवारिक एकता के सुदृढ़ भाव, सामाजिक स्तर बढ़ाने हेतु शिक्षा पर अधिक ध्यान देना। मध्य बचपन से ही इन गुणों को प्राप्त करते हुए वे इस बात के लिए विश्वस्त होते हैं कि उपलब्धि प्राप्त करने हेतु आवश्यक मजबूत भावनाएं विकसित हों।

उदाहरण के लिए अनेक परिवार जो उत्तर प्रदेश, बिहार और दक्षिण राज्यों से देश के उत्तरी भागों विशेष रूप से दिल्ली में आकर बसे हैं दो राज्यों की संस्कृति को धारण करते हैं। उनके बढ़ते बच्चे दो संस्कृतियों का भी आनंद उठाते हैं जो एक समय बच्चों के सही सामाजिक, भावात्मक विकास में शक्तिशाली बाधा माना जाता था। वास्तव में अध्ययन दर्शाते हैं कि द्विभाषी होना ज्ञान में वृद्धि करता है और व्यक्ति में अनुकृति कौशलों को बढ़ावा देता है। ऐसे बच्चे जो विविध पृष्ठभूमि से आकर नई संस्कृति में शामिल होते हैं वास्तव में अलग–अलग पृष्ठभूमि से आए लोगों से जल्दी जुड़ जाते हैं जो भविष्य में उनके व्यक्तिगत और व्यवसायिक उन्नति में सहायक होगा।

अपनी प्रगति जाँचें – 3

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) विभिन्न संदर्भों में वृद्धि से जुड़े मुद्दे क्या हैं?

....

....

....

....

2.5.1 विभिन्न प्रकार के पारिवारिक ढाँचों में वृद्धि

परिवार रचना के विभिन्न प्रकारों में विकास को अनेक दिशाओं में देखा जा सकता है जैसे परम्परागत परिवार, गैर परम्परागत परिवार, कम आय वाले परिवार, धनी परिवार। परिवार–रचना और बच्चे का भूतकालिक अभ्यास उसके व्यक्तिगत सामाजीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है और उसी के अनुसार भविष्य में उसके व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

इतिहास को देखते हुए वर्तमान में विश्व में परिवार–रचना में विविधता वास्तव में पहले से बड़ी है। शिशु विभिन्न प्रकार और रचना वाले परिवारों में पैदा होते हैं जिनका अस्तित्व आज से पचास वर्ष पूर्व नहीं था। आज अनेक नये प्रकार के परिवार हैं जिनका अस्तित्व पहले नहीं था जैसे वैज्ञानिक तकनीकी से पैदा बच्चे, तलाक के बाद पुनर्विवाह, एकल माताएँ जिन्होंने कभी शादी नहीं की। संशय को बढ़ाते हुए, अकेली समलैंगिक महिला और अकेला समलैंगिक पुरूष, विवाहित समलैंगिक युवतियाँ और विवाहित समलैंगिक युवक भी बच्चों का पालन–पोषण कर रहे हैं। ऐसे बच्चे भी प्रचुर मात्रा में हैं जो केवल अपने दादा–दादी के साथ रहते हैं और उन्होंने अपने जन्म देने वाले माँ–बाप को कभी देखा ही नहीं है।

पारिवारिक रचना के प्रकारों को प्रायः दो भागों में बाँटा जाता है–

(i) परम्परागत परिवार (ii) गैर–परम्परागत परिवार। अगले भाग में हम इस प्रकार के परिवारों में विकसित होने वाले बच्चों के अनुभवों की चर्चा करेंगे।

2.5.1.1 परम्परागत परिवार

आप जानते हैं कि परम्परागत परिवारों में दो भिन्न लैंगिक अभिभावक होते थे जो एक दूसरे से शादी करते थे, बच्चों को जन्म देते थे, उनका पालन पोषण करते थे। ऐसे परिवारों में पिता काम करता था और माँ घर पर रहकर घर का रख रखाव एवं बच्चे की देखभाल में व्यस्त रहती थी। कभी–कभी माता–पिता दोनों काम करते हैं। और परम्परागत परिवार का यह ढाँचा उन दूसरे परिवारों से अलग है जैसा कि अन्य परिवारों की पृष्ठभूमि में होता है।

फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के अनुसार जो बच्चे जैविक माता–पिता के साथ घर में नहीं रहते मनोवैज्ञानिक परेशानियों के खतरे में रहते हैं। परन्तु आज के युग में परिवारों की रचना में विविधता बढ़ रही है। अब हम गैर–परम्परागत परिवारों के बारे में चर्चा करेंगे।

2.5.1.2 गैर–परम्परागत परिवार

वह परिवार जो परम्परागत परिवारों के प्रत्यय को स्वीकार नहीं करता गैर–परम्परागत परिवार कहलाता है। आजकल परिवार रचना में बड़ी विविधताएं देखने को मिलती हैं जैसे एकल अभिभावक परिवार, तलाकशुदा परिवार, दादा–दादी विहीन परिवार, बिना शादी किए साथ रहने वाले परिवार, बदलते परिवार , समलैंगिक महिला व समलैंगिक पुरूषों द्वारा बनाए गए परिवार, द्विलिंगी एवं किन्नरों द्वारा बनाए गए परिवार। इनमें से प्रत्येक बच्चों को अलग परिणाम मिलते हैं। यद्यपि परम्परागत परिवारों के कुछ भिन्न प्रकार हैं, यहाँ हम कुछ गैर–परम्परागत परिवारों के नमूनों पर चर्चा करेंगे।

एकल अभिभावक परिवार

एकल अभिभावक परिवार एक ऐसी पारिवारिक रचना है जिसमें अभिभावक दूसरे साथी के बिना बच्चों का पालन–पोषण करता है, चाहे वह कारण तलाक हो, जीवन साथी की मृत्यु हो, या फिर कभी शादी न की हो परन्तु एक अकेला बच्चा हो। अकेला अभिभावक ऐसे परिवार में अपने बच्चे के लिए माता–पिता दोनों की भूमिका अदा करता है। वे सभी कार्य जो दोनों अभिभावकों को मिलकर करने होते हैं, एक के द्वारा करने के कारण प्रायः तनाव उत्पन्न होता है। एक अकेला अभिभावक अनेक स्रोतों से तनाव पाता है जिनमें आर्थिक समस्याएँ, विकृत रिश्ते, पालन पोषण की माँग, बच्चों की देखभाल के लिए समय की कमी प्रमुख हैं। इन परिस्थितियों में एक प्रश्न जो उठता है वह भावनात्मक पालन–पोषण है जिसके द्वारा बच्चे अपने अभिभावक से ज्यादा गहरे संबंध बनाते हैं। (मार्टिन और अन्य 2004) ऐसे परिवारों में बच्चों को घरेलू कार्य करने की जिम्मेदारी, भाई–बहनों की देखभाल, घर की साफ–सफाई, खरीददारी आदि कार्य करने पड़ते हैं।

अमातो (2006) के अनुसार तलाक के बाद एकल अभिभावक द्वारा पाले गए बच्चे केवल घर पर ही परेशानियाँ नहीं झेलते बल्कि अपने हम उम्र साथियों द्वारा भी प्रताड़ित किये जाते हैं। वे विद्यालय में आत्म–विश्वास की कमी, शैक्षणिक समस्याएं और तालमेल की कठिनाई का सामना करते हैं। यदि संरक्षक उत्साहयुक्त, प्रभावशाली एवं दृढ़ बना रहता है तो बच्चे के निराश होने के अवसर कम होते हैं।

आवागमन करने वाला परिवार

आवागमन करने वाले परिवारों में एक अभिभावक घर पर रहकर घर की जिम्मेदारियाँ निभाता है और दूसरा अभिभावक बाहर रह कर काम करता है। वह सप्ताह के अन्त में

या छुट्टियों में ही कम समय के लिए घर आता है। ऐसे परिवारों की सफलता दोनों अभिभावकों के तालमेल पर निर्भर करती है। बच्चों को इस विषय में आश्वस्त किया जाना चाहिए कि दूसरा अभिभावक घर से दूर क्यों रहता है? टेलीफोन अथवा ईमेल के द्वारा अभिभावक बच्चों के हाल–चाल और शैक्षणिक उपलब्धि के बारे में पता कर सकते हैं।

सहवास (साथ रहना)

सहवास का अर्थ है– विवाह पूर्व साथ रहना। आजकल ऐसे बच्चों की संख्या बढ़ रही है जो विवाह पूर्व साथ–साथ रहने वाले लोगों से उत्पन्न हैं। ऐसे सहवासीय परिवार एकल परिवारों एवं एकाकी परिवारों की तुलना में कम टिकाऊ होते हैं। सहवासी परिवारों के विषय में दो बातें सामने आती हैं– (i) साथी के संबंधों में अस्थिरता (ii) आर्थिक समस्याओं का उभरना। सहवासीय परिवारों में बच्चे ज्ञान, व्यवहार और शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति नकारात्मक सोच वाले पाये जाते हैं। (वाल्डफोगल ईटी.एल. 2010)।

गैर–परम्परगत परिवारों में रहने वाले बच्चों को सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कभी–कभी जब वे अपनी तुलना परम्परागत परिवारों से करते हैं तो बड़ा विचित्र महसूस करते हैं। अभिभावक को बच्चों को यह समझाने में मदद करना चाहिए कि परिवार की रचना उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना परिवार के लोगों का आपसी बंधन। अभिभावकों व अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने बच्चों में इतना मजबूत बंधन विकसित करें ताकि वे अपने आपको सुरक्षित अनुभव करें। इस चर्चा से आप जान गए हैं कि परिवार संस्कृति और सामाजिक मूल्यों को दर्शाते हैं और एक दूसरे को पहुँचाते हैं। अभिभावक पालन–पोषण के अपने तरीकों का विकास नहीं करते बल्कि यह तो सामाजीकरण की प्रक्रिया के कारण है।

2.5.1.3 आय पर आधारित पारिवारिक संरचना

मानवीय विकास पर सामाजिक विविधता का प्रभाव जानने के लिए सामाजीकरण की प्रक्रिया को मुख्य बिन्दु के रूप में देखना चाहिए। अनेक शोधार्थियों ने एकल अभिभावक परिवारों, सौतेले परिवारों और दोनों कार्यरत अभिभावक वाले परिवारों को अपने अध्ययन का विषय बनाया है और परिणाम बताते हैं कि सफल सामाजीकरण में परिवारों की रचना का उतना महत्त्व नहीं है जितना परिवार के साधनों, उन्नति एवं आपसी संबंधों का है।

- **कम आय वाले परिवार**

गरीब परिवारों के बच्चे धनी परिवारों के बच्चों की तुलना में पर्याप्त पोषण और उचित शारीरिक देखभाल नहीं पाते हैं। गरीब परिवारों में वातावरण से हानि, समुदाय की नासमझी, घरेलू व पारिवारिक हिंसा और शारीरिक शोषण के खतरे अधिक होते हैं।

कम आय के साधनों वाले अभिभावकों में अपने बच्चों के पालन–पोषण के प्रति आत्म विश्वास कम होता है, वे अपने बच्चों के प्रति उदासीनता दिखाते हैं। शोधार्थी बताते हैं कि कम आय वाले अभिभावक अपने बच्चों से मौखिक गाली गलौज करते हैं एवं शारीरिक दंड देते हैं एवं धनी अभिभावकों की तुलना में अपने बच्चों से कम आत्मीयता दिखाते हैं।

- **धनी परिवार**

गरीब परिवारों की तुलना में धनी परिवारों के बच्चे सामाजिक प्रवृत्तियों के विकास हेतु कम खतरे में होते हैं। उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि परिवार व्यक्ति में नैतिक मूल्य स्थापित करने एवं लक्ष्य प्राप्ति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो सामाजीकरण के लिए आवश्यक है।

अपनी प्रगति जाँचें – 4

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि एकल अभिभावक परिवार सामाजीकरण को कैसे प्रभावित करता है?

....

....

....

....

ii) आय पर आधारित पारिवारिक संरचना सामाजीकरण को कैसे प्रभावित करती है?

....

....

....

....

2.5.2 अभिभावक व बच्चों के सम्बन्ध

बच्चे का मानव मात्र से लगाव प्रकट करना एक पारिवारिक जुड़ाव है। वह अपनी माँ और अन्य पारिवारिक सदस्यों के अनुकूल होना सीखता है। इन प्रारंभिक लगावों के गुणों के अनुसार वह आकांक्षाओं या अनिश्चितताओं के साथ घर के बाहर लोगों से संबंध जोड़ता है। यदि घर के सदस्य एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते हैं, एक दूसरे के साथ काम करते हुए अधिक समय बिताते हैं और घर व बाहर एक दूसरे के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाते हैं तो बच्चा भी वैसा ही रवैया अपनाता है।

बातचीत से यदि दैनिक व्यवहार में लगाव नहीं झलकता है या लगाव केवल उस समय दिखाई देता है जब झगड़े की स्थिति पैदा हो जाती है तो बच्चा सकारात्मक दिमाग से दूसरों से लगाव करना नहीं सीखता। संवेदनशील और जिम्मेदारी भरा पालन–पोषण अभिभावक व बच्चों के गुणात्मक रिश्तों पर प्रभाव डालता है।

इस मामले को पढ़े–

केस 2. सोनिया एक दस वर्षीय लड़की है जो सभी पुरूषों से डरती है। वह पुरूष अध्यापकों के सामने बहुत सुस्त हो जाती है लेकिन अपनी सहेलियों और महिला अध्यापिकाओं के सामने बहुत सक्रिय रहती है। एक विस्तृत साक्षात्कार के द्वारा यह बात सामने आई कि उसके पिता शराब पीते हैं और गाली–गलौज करते हैं। वह हर समय उस पर चिल्लाते रहते हैं। वह एक बुज़दिल व्यक्तित्व बन गई जो शायद ही कभी अपने मन की बात कहती हो।

क्रियाकलाप 1

अपने मित्रों से सोनिया के मामले पर विचार विमर्श कीजिए और उसके सामाजिक लगाव को सुधारने हेतु कुछ तरीके सुझाइये।

....

....

....

....

....

2.5.2.1 पालन–पोषण के विभिन्न तरीकों का बच्चे के विकास पर प्रभाव

पालन–पोषण का तरीका उस राह को दिखाता है जिसके द्वारा माता–पिता अपने बच्चों की उन्नति करते हैं। अभिभावकों द्वारा अपनाया गया पालन–पोषण का तरीका बच्चों के विकास और सामाजिक व आर्थिक वृद्धि को प्रभावित करता है। पालन–पोषण के ये तरीके उस अनुशासन के अनुरूप होते हैं जिसे अभिभावक बच्चों के साथ प्रयोग करते हैं।

- **अधिकारपूर्ण**

अधिकांश लोग सोचते हैं कि प्रभावशाली पालन–पोषण अपने संतुलित नियंत्रण और बच्चे की भागीदारी के कारण ज्यादा सफल होता है। ऐसे अभिभावक अपने बच्चों के लिए वास्तविक आकांक्षाएं और लगाव के दृढ़ नमूने स्थापित करते हैं और उन्हें सरल एवं प्राकृतिक भविष्य प्रदान करते हैं।

प्राकृतिक परिणाम बच्चे के उस व्यवहार का प्राकृतिक परिणाम हैं जिसमें उसे किसी की मध्यस्थता की जरूरत नहीं है जैसे– यदि एक बच्चा गर्म स्टोव को छू लेता है और गर्मी से जल जाता है तो जलना एक प्राकृतिक परिणाम है। प्रभावशाली अभिभावक सदैव गर्मजोशी और लगाव व्यक्त करते हैं। वे बच्चे के विचार सुनने के लिए सहनशील होते हैं और बच्चे को पर्याप्त स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। वे बच्चे के परामर्श हेतु व्यवहार के नियम बनाते हैं, इन नियमों को बनाने का कारण समझाते हैं और बच्चा इस बात का अनुभव करता है कि यह उसका अपना निर्णय है और सभी के साथ एकमत होने के लिए लचीलापन अपनाता है।

शोध बताते हैं कि प्रभावशाली पालन–पोषण का तरीका अपनाने वाले अभिभावक अपने बच्चों को इस प्रकार पालते हैं कि उनमें उच्च स्तर का आत्मसम्मान होता है, उनमें दूसरों की तुलना में बेहतर सामाजिक कौशल होते हैं और वे वयस्कों की भांति कहीं अधिक सामाजिक रूप में परिपक्व होते हैं। लेकिन पालन–पोषण के तरीके विभिन्न संस्कृतियों में अलग–अलग होते हैं। प्रभावशाली पालन–पोषण का तरीका अनेक स्थापित संस्कृतियों में नहीं अपनाया जाता है।

- **सत्तावादी**

सत्तावादी तरीके में अभिभावक सख्त होते हैं और वे चाहते हैं कि उनके बच्चे आज्ञाकारी हों। वे बच्चों से इस बात की स्वीकृति चाहते हैं कि बच्चे उनके सामने कोई सवाल–जवाब नहीं करेंगे। ऐसे अभिभावक अपने बच्चों के व्यवहार एवं निर्णयों पर भारी नियंत्रण रखते हैं। वे अपने बच्चों के लिए कड़े नियम बनाते हैं और यदि बच्चे विद्रोह में आवाज उठाने का साहस करते हैं तो उन्हें अलग होने के परिणाम भुगतने पड़ते हैं। ऐसे घरों में पलने वाले बच्चे आत्मविश्वास की कमी से जूझते हैं, जल्दी परेशान हो उठते हैं और प्रायः व्यक्तित्व में पिछड़ जाते हैं। वे अपने अभिभावक की अस्वीकृति के डर से किसी भी असामाजिक कार्य में भाग नहीं लेते।

- **अनुज्ञात्मक**

कहा जाता है कि किसी भी क्षेत्र में अति अच्छी नहीं है और यह आज्ञा देने वाले

अभिभावकों में झलकती है। अनुज्ञात्मक अभिभावक अपने बच्चों के रक्षण, लगाव, झुकाव, प्रेम और भोजन के प्रति अधिक चौकस होते हैं। ऐसे अभिभावकों के बच्चे परिणाम के प्रति अवहेलना रखने वाले और आवेगी होते हैं हालाँकि वे उच्च स्वाभिमान वाले, अति विश्वासी और अच्छे सामाजिक कौशल वाले हो सकते हैं।

- **लापरवाह**

ऐसे अभिभावक अपने बच्चों की जरूरतों पर ध्यान नहीं देते और उनकी माँगों को पूरा नहीं करते। हालाँकि यह उनके अपने काम में अति व्यस्त होने के कारण होता है या मद्यपान या अवसाद आदि के कारण होता है। ऐसे अभिभावक प्रायः अपने बच्चों की ओर भावनात्मक मदद हेतु देखते हैं और कभी–कभी उनके बच्चों को ही उनका पालन–पोषण करना पड़ता है। ऐसे अभिभावकों के बच्चे प्रायः डरपोक, क्रोधी, समाज से बहिष्कृत, विद्यालय में पिछड़ेपन और मादक पदार्थों का सेवन करने के खतरे से घिरे होते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें – 5

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) पालन–पोषण का तरीका किसी व्यक्ति का स्व–निर्माण कैसे करता है?

....

....

....

....

2.5.3 विपरीत परिस्थितियों में वृद्धि

समाज में अनेक विपरीत परिस्थितियाँ हैं जहाँ बच्चे कुपोषित वातावरण, युद्ध–क्षेत्र, अनाथालय में पलते हैं और विस्थापित कामगारों के बच्चे के रूप में भी पलते हैं। आइए एक–एक करके उन सभी बिन्दुओं पर चर्चा करें जो बच्चे के सामाजिक और भावनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।

2.5.3.1 बच्चे और गरीबी

चित्र 2.1: बच्चे और गरीबी

अनेक शोध कार्यों ने दिखाया है कि निर्धनता बच्चों के ज्ञानात्मक कौशल को विकृत करती है और उनके अभिभावकों की पहुँच से बाहर उनकी प्रगति को कम करती है। वास्तव में एक खराब वातावरण न केवल बच्चे के जीने के अवसर को बदतर करता है बल्कि उसके भविष्य को भी खराब करता है। ऐसे बच्चे जो अपराधियों के समूह, मार–धाड़ और लूट वाली गलियों, आदर्श विहीन स्थानों, सामाजिक आशाओं से भ्रमित जगहों पर पलते हैं, मनोरोगी अथवा पागल होकर अपना जीवन समाप्त करते हैं।

शोध बताते हैं कि जिस क्षेत्र में 20% या उससे अधिक निर्धन लोग रहते हैं और उनकी अभिभावकीय शिक्षा, आय, स्वास्थ्य आदि एक लम्बे समय से स्थिर है, ऐसे क्षेत्र में रहने

वाले बच्चों की परीक्षा का जाँच स्तर कम होता है। सोचो, वर्तमान वातावरण किस प्रकार बच्चे के विकास को प्रभावित करता है। ध्वनि, वायु, भूमि प्रदूषण और यातायात भी बच्चे के भावात्मक, सामाजिक और बोधात्मक विकास को प्रभावित करते हैं। बच्चे जिस क्षेत्र में रहते हैं, सामुदायिक संसाधन, विद्यालय की उपलब्धता और स्वास्थ्य सेवाएं सब मिलकर बच्चे के विकास और व्यक्तित्व निर्माण में सहयोग प्रदान करते हैं। सामाजिक परिवेश भी बच्चे के विकास में अपनी भूमिका अदा करता है। यह भी देखा गया है कि गन्दी बस्तियों में रहने वाली दो पीढ़ियों के बच्चे उन बच्चों की तुलना में अधिक खराब प्रदर्शन करते हैं जो गंदी बस्ती छोड़कर बाहर चले गए हैं और यह कैसे हुआ? यह भी सामाजीकरण का ही एक परिणाम है। निर्धन बस्ती में पले बच्चे औसतन कम शिक्षा पाते हैं, और कम आय वाली नौकरी पाते हैं और शारीरिक, सामाजिक और भावात्मक समस्याओं से घिरे रहते हैं। इस प्रकार बड़े होकर इन्हीं निर्धन बस्तियों में अपना जीवन गुजार देते हैं। जब वे अभिभावक बन जाते हैं, वे प्रायः अपने व्यक्तिगत दोष अपने बच्चों में पहुँचा देते हैं जो आगे चलकर उन बच्चों के सामाजिक व मानसिक विकास में रूकावट डालते हैं।

2.5.3.2 युद्ध क्षेत्र में बच्चे

प्रत्येक युद्ध/झगड़े में स्त्रियाँ और बच्चे ही समाज के सबसे अधिक असुरक्षित सदस्य होते हैं जो सबसे ज़्यादा कष्ट उठाते हैं। लड़ाई बच्चों के टिकाऊ घर की सुरक्षा को नष्ट करती है, निर्दोष हँसते–खेलते बचपन के सपनों को तोड़ती है, अवसरों को समाप्त करती है और परिवार के सदस्यों के जीवन को दाँव पर लगा देती है।

निम्न मामलों को पढ़िए :

केस 3. एक दस वर्षीय लड़का अम्मार एक निर्माणाधीन भवन में रहता है जो सीरिया में युद्ध–हमले के समय अधूरा छोड़ दिया गया था। हजारों अन्य सीरियाई बच्चों की तरह वह विद्यालय नहीं जाता है और अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए पशु चराने का काम करता है। उसका परिवार सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक काम करता है और 600 सीरियाई पौंड एक दिन में कमाता है जो 2.50 डॉलर से भी कम है।

आस–पास कोई पानी की टंकी नहीं है इसलिए वह महीने में एक बार कपड़े धोता है क्योंकि टंकी मीलों दूर है और वहाँ अपनी बारी आने के लिए घंटों सूरज की धूप में खड़ा होना पड़ता है। दैनिक जरूरत के लिए पीने व खाना बनाने हेतु पानी लाने के लिए टैक्स लिया जाता है और वह एक महीने में कई बार मूर्छित हो जाता है। एक सौ भवनों के लिए केवल 6 टंकियाँ हैं और प्रत्येक भवन में 50 परिवार रहते हैं।

केस 4. एक 9 वर्षीय छोटी लड़की नाहिदा थोड़ी दूर पर उत्सुकता से देखती है, ''मैं विद्यालय जाना चाहती हूँ, यही वह जगह हैं जहाँ हम प्यार करते थे। मेरी माँ हमारे लिए लोरी गायेगी। वह हमारे टिफिन में स्वादिष्ट खाना बन्द करके देगी। मेरे बहुत सारे दोस्त थे....................''

वह शर्माती है,

''अब मेरी माँ मर गई है। मैं अपने पिता और भाई को नहीं खोज पाई हूँ। बमबारी के कारण हमें उस जगह से भागना पड़ा। मेरे सभी दोस्त या तो मारे गए या उस जगह को छोड़कर दूसरी जगह चले गए, मुझे नहीं पता कि कहाँ गये?''

यह एक करूणाजनक स्थिति है परन्तु आज अम्मार और नाहिदा जैसे हजारों बच्चों ने अपने घरों को नष्ट होते हुए, अपने परिवार जनों को मरते हुए देखा है और उनका जीवन

आरामदायक स्थिति से निकृष्ट गरीबी में डूब गया है। जीवन के शुरूआती वर्ष अर्थात बचपन सफलता और स्थिरता के लिए बहुत जरूरी होते हैं।

2.5.3.3 अनाथालयों में बच्चे

आजकल ऐसे बच्चों की संख्या लाखों में है जो अपने परिवार के प्यार और देखभाल से वंचित रहकर अनाथालयों में रह रहे हैं। ''अच्छे'' मामलों में बच्चे खाना, कपड़े, शिक्षा और रहने के लिए स्थान पा लेते हैं। ''खराब'' मामलों में वे भूखे मरते हैं, उन्हें गालियाँ दी जाती हैं, वे अलगाव झेलते हैं और अनेक या तो मर जाते हैं या युवा अपराधी बन जाते हैं। इन सभी मामलों में बच्चों को वह प्यार, मदद और पहचान नहीं मिला जो एक प्यार भरा परिवार दे सकता है।

प्रमाण बताते हैं कि शिक्षण–संस्थाओं की देखरेख में पलने वाले बच्चे अनेक विकास संबंधी अवरोधों एवं भावनात्मक संबंधों में अव्यवस्था का अनुभव करते हैं। परिणामस्वरूप उनमें बुद्धि संबंधी, सामाजिक एवं व्यावहारिक योग्यताएँ कम होती हैं, आपराधिक प्रवृत्ति पनपने का खतरा अधिक होता है। अतः वे अपने जीवन में कुल पर कलंक के समान होते हैं। यह करूणाजनक है कि वे जीवन में अकेलेपन का दंश झेलते हैं, बिना घर के रहते हैं और एक बार जब वे इन हालातों में पलते हैं तो उनके लिए किसी पर विश्वास करना या स्थायी रिश्ते विकसित करना मुश्किल होता है।

ऐसे बच्चे आत्मसमर्पण की भावना से प्रेम करते हैं और समय–समय पर उनसे मिलने आने वाले स्वयं–सेवकों के प्रति मजबूत बंधन विकसित करने हेतु प्राकृतिक रूप से जागरूक रहते हैं। जब स्वयंसेवक उन्हें कुछ सप्ताह या महीनों के बाद छोड़ कर चले जाते हैं तो उनके जख्म हरे हो जाते हैं और जब यह घटना साल दर साल घटती है अनेक बच्चे अपने आपको प्यार और आशाओं से दूर हटाते हुए भावुकता से बचना सीख लेते हैं।

2.5.3.4 प्रवासी मजदूरों के बच्चों के रूप में वृद्धि

इस मामले पर विचार करें :

केस 5. 17 वर्ष की उम्र में सावित्री घरेलू मददगार के रूप में बिहार से हरियाणा के हिसार में आई। वह एक बड़े सदमे में थी। पहले तो उस एजेन्ट ने जो उसे घर से फुसलाकर लाया था अपने दोस्तों के साथ अनेक दिनों तक उसका शारीरिक शोषण किया। एक दिन उसने भाग निकलने का प्रबन्ध किया और थाने में पहुँच गई। उन्होंने उसे नारी निकेतन भेज दिया जहाँ वह अन्ततः स्थिर हो गई और अब एक घरेलू सहायिका के रूप में काम करती है। परन्तु दर्द वहीं का वहीं है। धन की कमी के कारण उसके 4 व 6 वर्षीय बच्चों ने आज तक किसी विद्यालय को नहीं देखा है। जब वह काम पर जाती है तो वे गलियों में मटरगश्ती करते हैं। उसने अपने घरेलू कस्बे से अपनी 12 वर्षीय बहन को बुलाया है जो बच्चों की देखभाल का काम करती है और कभी विद्यालय गई ही नहीं। जब उसकी बहन से पूछा गया कि क्या वह विद्यालय जाना पसंद करेगी तो उसने कंधे उचकाते हुए कहा, ''मैं केवल इसी जीवन को जानती हूँ।''

प्रवासी श्रमिक समाज में प्रत्येक जगह भेदभाव तथा हमले को झेलते हैं। चाहे अपने ही देश में एक राज्य से दूसरे राज्य में जाना या किसी अन्य देश में अन्य कारणों से जाना हो, भेदभाव तथा तकलीफ ये सामान्य बात है।

2.5.3.5 निःशक्तता के साथ वृद्धि

निःशक्त बच्चों का बचपन से किशोरावस्था में परिवर्तन मजबूत हमउम्र बच्चों से भिन्न होगा। ऐसे बच्चे अपने बचपन में अपने हम उम्र साथियों के प्रभाव से अलग महसूस करते

हैं, खतरनाक कार्यों में कम लगते हैं और उनका सामाजिक दायरा छोटा होता है। ऐसे बच्चों की देखभाल करने वाले और अध्यापकों का यह कर्त्तव्य है कि वे कमजोर बच्चों में सीखने के अनुभवों को विकसित करें। ऐसा दृढ़ रवैया कि कमजोर बच्चा अपने आप कुछ नहीं कर सकता एक गलत धारणा है। वे दूसरों की तरह सब कुछ कर सकते हैं परन्तु अलग तरीके से।

अपनी प्रगति जाँचें – 6

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) चर्चा कीजिए कि अनाथालयों में रहने वाले बच्चों का व्यक्तित्व किस प्रकार प्रभावित होता है।

....

....

....

....

ii) युद्ध क्षेत्र में रहने वाले बच्चों द्वारा झेले गये कष्टों का उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

2.5.4 बालिका के रूप में वृद्धि

भारत के स्वाधीनता आंदोलन के नेता और प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने एक बार कहा था, ''किसी राष्ट्र की दशा आप उस राष्ट्र की नारियों की सामाजिक स्थिति देखकर बता सकते हैं।'' इसलिए, आज भारत में नारियों की सामाजिक स्थिति क्या है? यह ठीक है कि समग्र रूप से नारियों के लिए परिस्थितियाँ बदल रही हैं और दैनिक जीवन में उनकी आवाज सुनी जा रही है, व्यापारिक और राजनैतिक क्षेत्र में भी लेकिन सत्य यही है कि भारत आज भी पुरूष प्रधान समाज है और औरतें आज भी पुरूषों की तुलना में निम्न स्तरीय और सहायिका के रूप में देखी जाती हैं। धारणा यह है कि एक लड़की सहनशील, समर्पित और मृदुभाषी जैसे गुणों से सज्जित हो। हालाँकि परिस्थितियाँ स्थान व निवास के अनुसार भिन्न हैं।

आइये विभिन्न घरों में बढ़ने वाली लड़कियों की स्थिति को जाँचे :

2.5.4.1 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धि

शहरों में लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करने के साधन थोड़े या अधिक समान अवसरों द्वारा प्राप्त कर रही हैं। वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे अध्यापिका, स्वागतकर्त्ता, नर्स, डॉक्टर, इंजीनियर, सामूहिक जिम्मेदारी के कार्य करती देखी जाती हैं। यद्यपि वे सामाजिक भेदभाव जैसे यौन शोषण/छेड़छाड़, दहेज के मुद्दे और ''नारियों के सामाजिक आदर्श'' जैसे मुद्दों का भी सामना कर रही हैं। भले ही वह अपने पति के बराबर कमा रही हैं तो

भी सारा घर संभालने और बच्चों के पालन–पोषण की जिम्मेदारी औरत की ही होती है। उनके अभिभावकों का उनकी ससुराल में स्वागत नहीं किया जाता और न ही उन्हें सामूहिक मुद्दों पर पूछा जाता है।

''ह्यूमन डेवलपमेन्ट इन साउथ एशिया 2000 – द जेन्डर क्वेश्चन'' की रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशिया में औरतों को आर्थिक स्तर, न्यायिक हैसियत, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य की देखभाल और राजनैतिक प्रशासन के क्षेत्र में कड़े भेदभाव एवं असमानता का सामना करना पड़ता है। विकासशील देशों में वर्तमान समय में लड़कियों के लिए शिक्षा के अवसरों का हाशिये पर चला जाना एक मुद्दा बन गया है जिस पर चर्चा की जानी चाहिए। विश्व में औरतों की साक्षरता दर 71.4% है जब कि पुरूषों की साक्षरता दर 82.7% है। 960 मिलियन वयस्क निरक्षर हैं जिनमें दो तिहाई औरतें हैं।

ग्रामीण भारत के जिन क्षेत्रों में जागीरदारी प्रथा है वहाँ यौन–शोषण के डर से कम उम्र में ही लड़कियों की शादी कर दी जाती है। लड़कियों की कम उम्र में शादी करना अनेक समुदायों में सामाजिक सम्मान का मामला है। लड़कियों के अपहरण का सामाजिक डर लड़कियों के न्यून साक्षर स्तर का दूसरा कारण है।

2.5.4.2 जनजपतीय समुदाय में वृद्धि

लिंग आधारित पक्षपात भारत में एक गंभीर समस्या के रूप में विद्यमान है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों में औरतों की साक्षरता दर देश की औसत साक्षरता दर से कम है। सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिबंधों के कारण उनका आवागमन सीमित है और प्रायः वे कौशलरहित कार्यों में लगी हुई अधिक मेहनत करते हुए भी कम वेतन प्राप्त करती हैं।

अधिकाँश कबीलों में लड़कियों से यह उम्मीद की जाती है कि वे अपनी माँ द्वारा किये गए कार्यों को ही करें इसीलिए वे बचपन से ही उनके कार्य में भागीदारी प्रारंभ कर देती हैं। सरकार और उनके एन.जी.ओ. लड़कियों की स्थिति में सुधार करने के लिए कार्य कर रही हैं। उदाहरण के लिए उड़ीसा में ''प्रेम'' नामक संगठन कुछ आवासीय परिसर स्थापित करने में मदद कर रहा है ताकि कबीलों की लड़कियाँ इनमें रहकर विद्यालय जा सकें। ऐसी लड़कियों की एक बड़ी संख्या जो पहले विद्यालय नहीं जाती थी अब शिक्षा पा रही हैं। उनमें से अनेक लड़कियाँ अब अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ रही हैं जो उनके लिए एक उपलब्धि है।

2.5.4.3 गन्दी बस्तियों में वृद्धि

गन्दी बस्तियों में सामाजिक प्रगति एवं आदर्श पहचान के चलते लड़कियों की स्थिति आज भी पेचीदा है। वे आज भी अपने आपको किसी से अपने विचार साझा करने की स्थिति में नहीं पाती हैं। जीवन की वे परिस्थितियाँ जिनमें इन लड़कियों का व्यक्तित्व आकार लेता है अधिकतर मानव अधिकारों से रहित होती हैं और इस प्रकार वे अपना जीवन **'जीती तो हैं'** परन्तु उचित रूप में विकसित होकर युवावस्था को प्राप्त नहीं हो पातीं।

अपनी पारिवारिक दबाव युक्त परिस्थितियों के चलते जब ये लड़कियाँ विद्यालयों को जाती हैं तो अपने आपको आरामदायक स्थिति में नहीं पाती। भौतिक अलगाववाद के अलावा अलगाव के अनेक रूपों जैसे उनसे झाड़ू लगवाना, कमरा साफ करवाना, अध्यापकों के लिए चाय बनवाना को अपनाया जाता है। इन लड़कियों के बारे में पहले से ही यह धारणा बना ली जाती है कि ये कम बुद्धि वाली हैं और केवल डाँटने और पीटने से ही सीख सकती हैं। गन्दी बस्तियों में अनेक गैर–सरकारी संस्थाएँ (एन.जी.ओज.) इस

समय ऐसी लड़कियों और उनके परिवारों की शिक्षा हेतु कार्य कर रही हैं जोकि स्पष्ट रूप से पर्याप्त नहीं है। समाज को आगे आकर अपनी विचारधारा को बदलना होगा। आर्थिक प्रतिबंधों के साथ अनेक सांस्कृतिक कारक भी विद्यालय में दाखिले के समय लिंग विषमता को प्रभावित करते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें – 7

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए कि सामाजीकरण कैसे एक लड़की के प्रति हमारे रवैये को प्रभावित करता है?

....

....

....

....

ii) क्या गंदी बस्तियों में लड़कियाँ लिंग पक्षपात को झेलती हैं? विस्तार पूर्वक लिखिए।

....

....

....

....

2.6 बच्चों की वृद्धि से सम्बन्धित अनुभवों को समझने में शिक्षकों के लिए निहितार्थ

छात्रों को सामाजिक–भावात्मक योग्यता जैसे कृतज्ञता, समानुभूति और दयालुता जैसे गुणों को सिखाने हेतु अध्यापकों में सामाजिक–भावनात्मक कौशलों का होना आवश्यक है। प्रायः समाज के सामाजिक–सांस्कृतिक भाव लोगों के चेतन व अचेतन मन में गहराई से जड़ जमाए होते हैं। वे व्यक्ति के कार्य, रूचि और व्यवहार में झलकते हैं। इस प्रकार जाति, वर्ग और लिंग के मुद्दे हमारे सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ों के रूप में विद्यमान हैं। एक परिवर्तन–कार्यकर्त्ता के रूप में अध्यापक अपने छात्रों को समाज में फैली असमानता, पक्षपात और भेदभाव की जड़ों के प्रति संवेदनशील बनने में उनकी मदद कर सकता है।

सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन के स्रोत के रूप में अध्यापक

अध्यापक समाज में परिवर्तन हेतु अपनी भूमिका अदा कर सकता है और उसे करना भी चाहिए। एक विद्वान् व्यक्ति होने के नाते वह आधुनिक समाज के विकास और बदलते चेहरों के प्रति ज्यादा सजग रहता है। एक अध्यापक स्थानीय संसार को वैश्विक संसार से जोड़ने की जिम्मेदारी उठाता है। सामाजिक परिवर्तन का एक कार्यकर्त्ता होने के नाते अध्यापक न केवल बाहरी संसार के नूतन विचारों, आस्थाओं, मूल्यों की व्याख्या करता है बल्कि प्रायः ग्रामीण क्षेत्र के स्थानीय समुदाय और बच्चों की दुनिया तक उन्हें पहुँचाता है।

सामाजिक शुरूआत के रूप में जाति का भारत में एक लम्बा इतिहास रहा है और इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक निहितार्थ रहे हैं। हमारी शिक्षा पद्धति ऐतिहासिक रूप से पारम्परिक ''गुरूकुल'' पद्धति से विकसित हुई है जहाँ केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय ही शिक्षा पा सकते थे। शिक्षा सदैव उच्च जाति एवं उच्च वर्ग का विशेषाधिकार रही है। बाद के समय में जब भारत में समानता का शासन स्थापित हुआ तो सबके लिए शिक्षा की आवश्यकता को मान्यता दी गई। हालाँकि 1947 में देश आजाद होने के बाद भारत सरकार द्वारा शिक्षा के प्रजातांत्रिक रूप हेतु मिलाजुला प्रयास किया गया। शैक्षिक संस्थाओं में पदों को आरक्षित किया गया। सरकार की कल्याणकारी नीतियाँ समाज में बदलाव और सामाजिक गतिशीलता लाने के लिए चलाई गईं थीं। निम्न जाति और पिछड़े वर्गों की मदद के लिए अनेक आयोग बनाये गए। इन सभी का उद्देश्य समाज में बदलाव लाना और घोर असमानताओं को दूर करना था। काका कालेकर (1953), और मंडल आयोग (1989) इन प्रयासों के कुछ उदाहरण हैं।

समाज और शिक्षा व्यवस्था में बड़े पैमाने पर लिंग असमानता के मुद्दे ने मान्यता पा ली है। यह देखा गया है कि पुरूष और नारी के बीच लैंगिक अन्तर एक सामाजिक पहलू है। ये लैंगिक अन्तर जैविक की अपेक्षा सामाजिक सोच के कारण है जहाँ समाज में लैंगिक असमानता की झूठी जड़ें जमी हैं। विद्यालय स्तर पर लिंग–विभाजन और पाठ्य–पुस्तकों व दूसरी निर्देशात्मक सामग्री में दर्शाया गया है कि नारी व पुरूष का व्यवहार ऐसे दो रास्ते हैं जिनके द्वारा लिंग असमानता को फैलाया जाता है। अध्यापक एवं छात्र दोनों ही लिंग–आधारित असमानता के अनुसार लगाव एवं व्यवहार के सीखने हेतु एक आदर्श व्यवस्था की आशा करते हैं जो यह सुनिश्चित करता है कि यह प्रशंसा एवं पुरस्कार हैं। पुरूषों का सकारात्मक, सक्रिय, वैयक्तिक, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी होना उन्हें विद्यालयों में लाभदायक स्थिति में पहुँचाता है। कक्षा–कक्ष की गतिविधियों में वे अधिक भागीदार, दृढ़ और प्रभावी पाये जाते हैं।

जिन औरतों को यह सिखाया गया है कि वे सामाजिक रूप से सबका आदर करने वाली, दूसरों पर आश्रित और अनुग्रही हों वे कक्षा में अपने अध्यापकों एवं साथियों के साथ कम हठधर्मी, कम आत्मविश्वासी एवं कम आग्रही होती हैं।

इस संदर्भ में अध्यापकों को संवेदनशील होना चाहिए कि वे अपने प्रदर्शन, आकांक्षाओं, बातचीत के तरीकों और मूल्यांकन व्यवस्था में छात्रों के लिंग के अनुसार कैसे परिवर्तन करें। ऐसा करके उनके शैक्षणिक प्रयासों और उपलब्धियों में किस प्रकार बदलाव कर सकते हैं? ऐसे परिवर्तनों हेतु प्रशंसा एवं रचनात्मक आलोचना विशिष्ट उपचार है।

समय की माँग है कि अध्यापकों को इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे लिंग समानता हेतु संवेदनशील बनें। वे इस योग्य बन सकें कि लिंग असमानता के लिए जिम्मेदार शैक्षिक व्यवस्था के अनेक पहलुओं का विश्लेषण कर सकें और जिन क्षेत्रों में लिंग निष्पक्षता की जरूरत है, वहाँ परिवर्तन करें। शैक्षणिक व्यवस्था में अध्यापक सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है जो रूढ़िवादी लैंगिक विचारधाराओं को समाप्त करने हेतु समाज में परिवर्तन ला सकता है।

शिक्षण शास्त्र को अद्यतन करना

अध्यापकों को कक्षा–कक्ष में प्रयोग होने वाली शिक्षण विधियों को अद्यतन करने की आवश्यकता है।

संस्कृति के अनुरूप शिक्षण शास्त्र वह शिक्षण शास्त्र है जो विविधता का लेखा–जोखा रखने वाली, आदेशात्मक व्यूह रचना में संशोधन करती है। **पारस्परिक संबंधों द्वारा अध्यापन** और **सहकारी अधिगम** दो ऐसी सबसे प्रभावशाली व्यूह–रचनाएँ हैं जिनसे

छात्रों को संस्कृति से जुड़े क्षेत्र में सीखने के लिए लगाया जा सकता है। **पारस्परिक संबंधों वाला अध्यापन** उस समय दिखाई देता है जब छात्र कक्षा में वाद–विवाद में बढ़ चढ़ कर भाग लेते हैं। यह विधि छात्रों को आदेशात्मक सामग्री को व्यक्त करने हेतु अपने सांस्कृतिक विचारों को उनके अपने शब्दों में प्रकट करने हेतु आमंत्रित करती है।

सहकारी अधिगम विधि उस समय प्रभावशाली होती है जब किसी काम को पूरा करने में सामूहिक जिम्मेदारी के साथ–साथ व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी होती है। सहकारी सीख का परिणाम कार्य के पूरा हो जाने पर ही मिलता है और छात्रों को अपनी व एक दूसरे की संस्कृति को जानने व प्रशंसा करने की शिक्षा मिलती है।

हालाँकि संस्कृति आधारित शिक्षण तभी प्रभावशाली होगा जब अध्यापक इस बात को समझेगा कि उसके छात्र गैर–मौखिक संकेतों को किस दृष्टि से देखते हैं। कुछ संस-कृतियों में छात्र द्वारा अधिकारियों से आँख मिलाकर बात करना अभद्रता, अनादर और सामना करने जैसा व्यवहार माना जाता है। दूसरी संस्कृतियों में विपरीत लिंग के अनजान व्यक्ति से प्रायः हाथ मिलाने को मना किया जाता है।

एक परिवर्तन अभिकर्त्ता के रूप में शिक्षक उन सामाजीकरण प्रक्रिशिओं में ह्रास कर सकता है जो बालक एवं बालिकाओं के लिए पूर्व निर्धारित भूमिकाएँ क्रमशः पुरूषवादी और स्त्रीवादी को प्रायः प्रोत्साहित करता है। यह तभी संभव हो सकता है जब शिक्षक प्राथमिक स्तर से बालक एवं बालिकाओं की अभिवृति में परिवर्तन लाने के विषय में समझाने, सजग तथा सरोकार रखते हैं ताकि विद्यालय प्रक्रियाओं के अन्दर एवं बाहर की सभी अंतःक्रियाओं में लैंगिक सद्‌भाव हो।

अपनी प्रगति जाँचें – 8

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) सामाजिक परिवर्तनों में अध्यापक की प्रभावयुक्त भूमिका की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

2.7 सारांश

सामाजीकरण प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक अति महत्त्वपूर्ण पहलू है जहाँ वह अनेक भूमिकाएं निभाना सीखता है। सभी भूमिकाएं इस आशा के साथ सीखी जाती हैं कि व्यक्ति का व्यवहार नियम–मानकों के अनुसार हो। परिवार में लिंग के अनुसार भूमिकाएँ अभिभावकों, बड़े भाई बहनों और दूसरे सदस्यों से सीखी जाती हैं जो लिंग विशेष के लिए उचित आदर्श भूमिका प्रस्तुत करते हैं। सीखना अनेक उचित संकेतों से सुनिश्चित किया जाता है। बच्चे के पालन–पोषण का अभ्यास उसके आत्म धारणा के विकास पर लक्षित प्रभाव डालता है। औपचारिक और अनौपचारिक विद्यालय, उनका पाठ्‌यक्रम व अध्यापक सीखने के अनुभवों एवं भौतिक साधनों के साथ विकास में एक बड़ी भूमिका अदा करते हैं। यह लड़कों एवं लड़कियों के बचपन में बराबरी और सामंजस्य की भावना पैदा करेंगे और सार्वजनिक भविष्य के लिए बराबर की भागीदारी व मिली–जुली भूमिका अदा करने के लिए तैयार करेंगे। परम्परागत पारिवारिक सामाजीकरण स्वाभाविक जिज्ञासा एवं वार्तालाप कौशल का गला घोंटता है जो उन्हें विद्यालय में प्रवेश के समय शंकालु,

आज्ञाकरी, विनम्र और मूक बना देता है। समय की माँग है कि अध्यापकों में संवेदनशीलता का विकास हो ताकि वे अपने पाठ्यक्रम का शीघ्रता से संपादन करें और कक्षा में गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करते हुए ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करें ताकि लड़के व लड़कियाँ स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचार रख सकें और उनमें आत्म विश्वास व आपसी भरोसा विकसित हो।

2.8 इकाई अंत्य अभ्यास

1. एक बच्चे के जीवन में परिवार का क्या महत्त्व है?
2. चर्चा कीजिए कि सामाजिक परिवर्तन में एक अध्यापक किस प्रकार परिवर्तन अभिकर्त्ता के रूप में कार्य कर सकता है।

2.9 आपकी प्रगति जाँच के उत्तर

1. i) सामाजीकरण अनेक तरीकों से हमारे विचारों को प्रभावित करता है क्योंकि हम अपने चारों ओर उन नियम–कायदों को देखते हुए बड़े होते हैं। हम आँख बन्द करके उनका अनुसरण करने लगते हैं क्योंकि हम बढ़ते–बढ़ते उनके रंग में रंग जाते हैं। उदाहरण के लिए बिहार का रहने वाला एक व्यक्ति अपने यहाँ पैदा होने वाले दाल और चावल को ही अपना भोजन बनायेगा। लेकिन पंजाब के व्यक्ति के लिए भोजन में चावल ठीक नहीं लगेगा यदि उसे गेहूँ से बनी रोटी न मिले।

   ii) हाँ, सामाजीकरण एक दैनिक प्रक्रिया है क्योंकि हम वैसी ही धारणा बना लेते हैं जैसा कि भावनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक रूप से हमारे चारों ओर घट रहा है।

2. i) सामाजीकरण की प्रक्रिया विभिन्न संस्कृतियों में अलग–अलग तरीकों से घटती है। बंगाल से जुड़ी एक महिला, मध्य प्रदेश या उड़ीसा से जुड़ी महिला की अपेक्षा अलग तरह से साड़ी पहनती है।

   ii) भिन्न संस्कृतियों में रहने वाले व्यक्तियों के सामाजिक तौर तरीके अलग–अलग होते हैं क्योंकि वे अलग–अलग सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेशों में रहते हैं।

3. एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करने वाले प्रवासियों के संदर्भ में विकास से जुड़े अनेक मुद्दे हैं। इस मामले में बच्चों को अनके संस्कृतियों के तौर–तरीकों को जबरदस्ती सीखना पड़ता है और चाहे–अनचाहे इस विविधता को धारण करके उसी के अनुसार चलना पड़ता है। यह कुछ बच्चों को मानसिक रूप से डराता है या कुछ बच्चे अपने तरीकों में और ज्यादा लचीलेपन और अनुकूलता से सीखते हैं।

4. i) एकल अभिभावक परिवार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सामाजीकरण प्रक्रिया को बहुत बड़े रूप से प्रभावित करते हैं। कुछ एकल अभिभावक पालन–पोषण प्रक्रिया को बहुत गंभीरता से लेते हैं और इस प्रकार बच्चा उनके कब्जे में रहता है जब कि दूसरे अभिभावक संसाधनों की चाह में अपने बच्चों के साथ गुणवत्ता युक्त समय बिताने के योग्य नहीं होते।

   ii) गरीब परिवारों के बच्चे अपने अभिभावकों से उपेक्षा और लड़ाई–झगड़े के माहौल को झेलते हैं। बच्चों के साथ गुणवत्तायुक्त समय न बिताने के कारण वे बीमार हो सकते हैं और घरेलू हिंसा के शिकार हो सकते हैं जब कि समृद्ध परिवारों के बच्चे सामान्यतया संतुलित व्यक्तित्व के विकास हेतु बेहतर अवसर पाते हैं।

5. i) यदि अभिभावक प्रजातांत्रिक विचारों वाले हैं तो बच्चा अपने व्यक्तित्व में लचीले गुण विकसित कर सकता है जब कि सख्त व सत्तावादी अभिभावकों के बच्चे उनकी तुलना में हर समय अपने अन्दर कुछ कमी का अनुभव करते रहते हैं।

6. i) अनाथालय का जीवन बच्चे में भावात्मक और सामाजिक जीवन हेतु एक जख्म का अहसास कराता है। वे अपने जीवन में विद्रोह का रास्ता अपना लेते हैं, किसी पर भी आसानी से विश्वास करने के लायक नहीं बन पाते और उनके पारिवारिक जीवन में भी अधिक टूटन बनी रहती है।

   ii) युद्ध क्षेत्र में रहने वाले बच्चे बहुत दबाव में रहते हैं, अंतर्मुखी हो जाते हैं और अनिद्रा व दुःस्वप्नों की समस्याओं का सामना करते हैं। वे जीवन भर इस दंश को झेलते हैं और उनका आत्म–विश्वास आसानी से टूट जाता है।

7. i) छोटे बच्चे वैसा ही अनुकरण करते हैं जैसा कि वे अपने बड़ों को करते हुए देखते हैं। यहाँ तक कि जब वे बचपन में ''घर–घर'' का खेल खेलते हैं तो वे कार्यालय से घर आते हुए, अपनी पत्नी व बच्चों को डांटते हुए पिता की भूमिका अदा करने का नियम बनाते हैं। दूरदर्शन देखते समय उसे गर्म चाय परोसी जाती है और जब उसे परिवार में लड़की पैदा होने की सूचना दी जाती है तो वह अपनी चाय फेंक देता है और लड़की पैदा होने के कारण जोर से चिल्लाता है। यह सारा व्यावहारिक नमूना उनकी सामाजीकरण प्रक्रिया का हिस्सा है जिसे बच्चे खेलते समय अपना लेते हैं।

   ii) हाँ, लड़कियाँ गन्दी बस्तियों में भेदभाव/पक्षपात का सामना करती हैं। उनके भाइयों को विद्यालय भेजा जाता है जब कि वे घर में घरेलू कार्यों में अपनी माँ की मदद करती हैं। उनके खेलने पर उनके भाई उनके साथ मार–पीट कर सकते हैं परन्तु वे इसका प्रतिकार भी नहीं कर सकती। परिवार में पुरूषों की अपेक्षा उन्हें कम भोजन दिया जाता है या अंत में दिया जाता है और उनसे बर्तन साफ करने की अपेक्षा की जाती है। वे अधिकांशतः शारीरिक प्रताड़ना का भी सामना करती हैं।

8. i) स्वयं अपना उत्तर लिखें। खण्ड 2.6 देखें।

2.10 संदर्भ एवं उपयोगी सामग्री

अमातो, पी.आर. (2006). मैरिटल डिस्कॉर्ड, डिवोर्स ऐण्ड चिल्ड्रेन्स वेल–बीइंग : रिजल्ट्स फ्रॉम ए 20–इयर लॉगिट्यूडिनल स्टडी ऑफ टू जेनेरेसंस. इन ए. क्लॉर्क–स्टेबर्ट एण्ड जे. डन (Eds.), फेमिलीज काउन्ट : इफेक्ट ऑन चाइल्ड ऐण्ड एडोलसेन्ट डेवेलॉप्मेन्ट. न्यू यॉर्क : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

फिन्च, ए. (2002). द लैन्ग्वेज क्लीनिक : द टीचर ऐज ऐन एजेन्ट ऑफ चेन्ज, www.finchpark.com/arts/clinic.pdf से 11/02/2016 को लिया गया।

गोविन्दा, आर (Ed.) (2002). इंडियन एजूकेशन रिपोर्ट : ए प्रोफाइल ऑफ बेसिक एजूकेशन, एन.आई.ई.पी.ए., नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

ग्रुसेक, जोन ई., और पॉल डी. हेस्टिंग्स (2007), हैन्डबुक ऑफ सोशियलाइजेशनः थियरी ऐण्ड रिसर्च. न्यूयार्कः गिलफोर्ड।

हिल, डी. और कोल, एम. (Ed.) (2001). स्कूलिंग ऐण्ड इक्वेलिटी–फैक्ट, कॉन्सेप्ट ऐण्ड पॉलिसी, लंदन : कॉगेन पेज.

कुमार, के. (1987). सोशल कैरेक्टर ऑफ लर्निंग, न्यू दिल्लीः सेज पब्लिकेशंस.

मार्टिन, एम.टी., एमेरी, आर.ई., और पेरिस, टी.एस. (2004). सिंगल–पैरेन्ट फैमिलीज–रिस्क, रिसीलेन्स ऐण्ड चेन्ज. इन एम. कॉलमैन और एल.एच. गनोंग (Eds.). हैन्डबुक ऑफ कॉन्टेम्परॉरी फैमिलीज (पी.पी. 282–301). थाउजैंड ओक्स, सी.ए. : सेज.

पैटर्सन, सी.जे. ऐंड हेस्टिन्ग्स, पी.डी. (2007). सोसिएलाइजेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ फैमिली डाइवर्सिटी. जे. ई. ग्रुसेक ऐण्ड पी.डी. हैस्टिन्ग्स (एड्स). हैन्डबुक ऑफ सोसिएलाइजेसन : थियरी ऐण्ड रिसर्च : न्यू यॉर्क : गिलफोर्ड.

उडुक, जे. (1994). डेवेलॉपिंग ए जेन्डर पॉलिसी इन सेकेन्डरी स्कूल्स. फिलाडेल्फिया. ओपेन यूनिवर्सिटी प्रेस।

वल्डफोगेल, जे., क्रेजिए, टी.ए., और गुन, जे.बी. (2010). फ्रेजाइल फैमिलीज ऐण्ड चाइल्ड वेल बीइंग. फ्यूचर चाइल्ड, 20 (2) : 87–112. http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/Articles/PMC 3074431 से 12/02/2016 को लिया गया।

इकाई 3 सामाजीकरण के अभिकरण

संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 सामाजीकरण : आधारभूत संकल्पना

3.4 सामाजीकरण के अभिकरण

3.4.1 लघुस्तरीय सामाजीकरण : परिवार, सम–समूह, पड़ोस

3.4.2 मध्य स्तरीय सामाजीकरण : विद्यालय, धर्म, सामाजिक वर्ग

3.4.3 बृहतस्तरीय सामाजीकरण : वैश्विक समुदाय, इलेक्ट्रानिक मीडिया, सामाजिक संजाल

3.5 सारांश

3.6 इकाई के अंत्य अभ्यास

3.7 आपकी प्रगति जाँच के उत्तर

3.8 सन्दर्भ एवं उपयोगी सामग्री

3.1 प्रस्तावना

अब तक आप 'सामाजीकरण' शब्द और व्यक्ति की समाज के साथ सतत अन्तःक्रिया कैसे होती है इस बात से अवश्य ही परिचित हो गये होंगे। आपने यह भी देखा कि किस प्रकार सामाजीकरण की प्रक्रिया सजीव अंगी को एक सामाजिक प्राणी बनने के योग्य बनाती है। जारी रहने वाली प्रक्रिया के रूप में यह 'गर्भ से कब्र' तक और पीढ़ी से पीढ़ी तक जारी रहती है। समाज में व्यक्तियों का विभिन्न अभिकरणों द्वारा पालन–पोषण और आकार प्रदान किये जाते हैं।

इस इकाई का प्रयोजन आप को सामाजीकरण के विभिन्न अभिकरणों से परिचित कराना और यह बताना है कि प्रत्येक अभिकरण व्यक्ति के व्यक्तित्व को गठित करने में किस प्रकार योगदान देता है। हम सभी सहमत हैं कि व्यक्ति एकाकीपन में नहीं रह सकता। उसके पास सामाजिकता के लिए स्वाभाविक नैसर्गिक प्रवृत्ति है। उसकी परिवार के सदस्यों, समसमूहों, अध्यापकों, सहपाठियों, सम्बन्धियों और समुदाय के सदस्यों के साथ सतत अन्तःक्रिया होती है। विज्ञान और तकनीक में प्रगति के आधुनिक समय में हम सामाजिक माध्यम (सोशल मीडिया) और संजाल (नेटवर्किंग) आदि के भी प्रभाव को महसूस कर सकते हैं। समाज के साथ यही वह अन्तःक्रिया है जो उसे मानव बनाती है। इस इकाई में हम सामाजीकरण की संकल्पना और लघु, मध्य और बृहत् स्तरों पर सामाजीकरण के अभिकरणों को पुनः देखेंगे। हम प्रत्येक स्तर पर सामाजीकरण की प्रक्रिया को समझने का भी प्रयास करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप :

- सामाजीकरण के विविध अभिकरणों की पहचान कर सकेंगे;

- लघु, मध्य और बृहत् स्तर पर अभिकरणों का वर्गीकरण कर सकेंगे;
- परिवार में सामाजीकरण की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे;
- लिंग सामाजीकरण में विविध अभिकरणों की भूमिका की चर्चा कर सकेंगे;
- सामाजीकरण के अभिकरण के रूप में विद्यालय की भूमिका की चर्चा कर सकेंगे।
- विद्यालयों में सामाजीकरण की प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका की प्रशंसा कर सकेंगे;
- सामाजीकरण के प्रयोजन की दृष्टि से प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के माध्यमों (मीडिया) के नाम बता सकेंगे, और
- सामाजीकरण पर मीडिया के प्रभाव की चर्चा कर सकेंगे।

3.3 सामाजीकरण : आधारभूत संकल्पना

''अस्तित्व में रहना परिवर्तन करना है, परिवर्तन करना परिपक्व होना है, परिपक्व होना व्यक्ति को अनन्त रूप से सृजित करते रहना है।''

–हेनरी बर्गसन

आप आश्चर्य कर सकते हैं कि किस प्रकार दो विरोधी प्रक्रियाएं, अर्थात् 'अस्तित्व में रहना' और 'परिवर्तन करना' साथ–साथ घटित हो सकती हैं। लेकिन उनमें मानव विकास का अनोखापन निहित है। यह विरोधी प्रक्रियाओं से बना होता है – एक तरफ, यह व्यक्ति में परिवर्तन लाता है, और दूसरी तरफ वह स्वयं वैसे ही रहता है। पिछले अध्याय में हमने यह चर्चा की कि किस प्रकार शिशु बढ़ता है और आवश्यक कौशलों से युक्त और संस्कृति के उन मूल्यों और विश्वासों को बनाये रखते हुए जिनमें कि वह पैदा हुआ/हुई है, एक जिम्मेदार और सुविज्ञ व्यक्ति/स्त्री के रूप में परिपक्व होता/होती है। अब तक यह निश्चित ही स्पष्ट हो गया होगा कि सामाजीकरण किस प्रकार व्यक्ति को समूह के मूल्यों को प्राप्त करने में मदद करता है ताकि उस समूह विशेष से परिचित हो सके। वास्तव में जिस तरह हम सोचते हैं, महसूस करते हैं और कार्य करते हैं उस पर सामाजीकरण का गहरा प्रभाव होता है। ''आदमी मानव के रूप में नहीं पैदा हुआ है बल्कि मानव बनाया जाता है'' (पार्क)। लेकिन उसका यह अर्थ नहीं निकाला जाता कि हम यन्त्रमानव (रोबोट) हैं जो सामाजीकरण के अभिकर्त्ताओं के आदेशानुसार कार्य करते हैं। हम सभी सतत रूप से अपने 'स्व' का निर्माण कर रहे हैं। हमारा दिमाग तर्क–वितर्क कर सकता है और अपनी पसन्द बनाता है। हालांकि समाज के अन्य सदस्यों के साथ अन्तःक्रिया का अभाव अनर्थकारी परिणाम ला सकता है।

आपने बहुत सी दुःखद घटनाओं को सुना अवश्य होगा कि किस प्रकार एकाकीपन और सामाजिक अनुभव से वंचित कर देना, बच्चों के लिए अपूरणीय क्षति का कारण बनता है। इस प्रकार की घटनाओं का विवरण जेनी के मामले की तरह असामान्य बाल मनोविज्ञान के आख्यानों में पाया जा सकता है जिसे शौच की कुर्सी से बाँधकर कमरे में बन्द कर दिया गया था जब वह मुश्किल से 20 महीने की थी। चूँकि वह लगभग बारह वर्ष तक लोगों से पूर्णतया अलग थी और विपरीत स्थितियों में भटकने के लिए छोड़ दी गई थी, वह भाषा और सम्प्रेषण की कला के प्रयोग को प्राप्त करने में विफल हो गई थी और किसी भी चीज के प्रति बहुत कम संवेगात्मक अनुक्रिया दर्शाती थी जो उसके आस–पास होती थी। जेनी का मामला अवरूद्ध सामाजिक विकास का एक उदाहरण है जो कि व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव का कारण बन सकता है।

उपर्युक्त घटना सोदाहरण यह स्पष्ट करती है कि 'मानव' बनने के लिए सामाजीकरण और अन्तःक्रिया मानव प्राणियों के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। अक्सर यह भ्रान्त धारणा रहती है कि सामाजीकरण सभी समाजों में एक जैसा है और एक समाज विशेष के अन्तर्गत अपने सिद्धान्तों को न छोड़ने वाला है। यह जानना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि इस प्रकार की धारणाएं भ्रान्तिपूर्ण हैं और इन्हें छोड़ देना चाहिए। हर किसी को यह भी अवश्य मानना चाहिए कि सामाजीकरण एक समाज से दूसरे समाज और एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में भिन्न होता है। आप सामाजीकरण की प्रक्रिया में भिन्नता को शैशवावस्था से किशोरावस्था, और प्रौढ़ावस्था से वृद्धावस्था तक देख सकते हैं।

आप के लिए इस विचार को स्वीकर करना मुश्किल हो सकता है कि यह सामाजीकरण है जो आप के विचारों को आकार प्रदान करता है जब कि उसी समय आप को यह बताया गया है कि आप एक व्यक्तिगत व्यक्तित्व हो और आप की अपनी अभिरूचियाँ, पसन्द और नापसन्द हैं। हालाँकि हमारी व्यक्तिगत पहचान की अभिव्यक्ति हमेशा हमारी सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में की जाती है, अर्थात हम कौन हैं जो सामाजीकरण के अभिकरणों के द्वारा बहुत अधिक अनुकूलित किये जाते हैं।

बहुत से अभिकरणों तथा संस्थाओं का सामाजीकरण की प्रक्रिया में योगदान होता है जिससे बालक सम्बद्ध होता है जैसे– उसकी/उसका परिवार, विद्यालय, समसमूह, आस–पड़ोस, व्यावसायिक समूह और सामाजिक वर्ग। बाल्यावस्था और किशोरावस्था में, अधिकतर समसमूह का व्यक्ति पर गहरा प्रभाव होता है, जब कि प्रौढ़ावस्था में, व्यावसायिक समूह और विवाह के माध्यम से प्राप्त नये परिवार का जो कि सामाजीकरण में प्रमुख भूमिका निभाता है। ये अभिकर्त्ता बढ़ते हुए बच्चों पर प्रभाव डालते हैं और उसके विकास के प्रत्येक पहलू को आकार प्रदान करने में सामाजिक और सांस्कृतिक आकांक्षाओं और समाज की आवश्यकताओं और माँगों के अनुसार योगदान करते हैं जहाँ वह रहता/रहती है।

मानव व्यवहार को क्या निर्धारित करता है– क्या यह प्रकृति (आनुवंशिकता) अथवा पोषण (पर्यावरण) है? इस मुद्दे पर बहुत वाद–विवाद हुए हैं। बच्चों पर हुए सुविस्तृत अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि आनुवंशिक कारक मानव 'समीकरण' के लिए अत्यावश्यक हैं, लेकिन ठीक उसी समय, व्यक्ति की सामाजिक अन्तःक्रिया उसे 'मानव' बनाती है। इस प्रकार की अन्तःक्रिया प्रेक्षण, सम्प्रेषण के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा और सम्पर्क के अन्य रूपों के माध्यम से सम्भव होती है और इस प्रकार लोग मानव समुदाय का सदस्य बनने के लिए सीखते हैं। इन संकल्पनाओं को चार्ल्स हॉर्टन कूले, जार्ज हर्बर्ट मीड और जीन पियाजे के सैद्धांतिक निवेशों द्वारा पुनर्बलित किया गया है जो यह तर्क देते हैं कि बच्चे तर्क कौशल, नैतिकता, व्यक्तित्व और स्व का भाव सामाजिक प्रेक्षण, सम्पर्क और अन्तःक्रिया के माध्यम से विकसित करते हैं।

जैसा कि हमने पहले कहा है सामाजीकरण की प्रक्रिया आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो जन्म से शुरू होती है और मृत्यु के साथ समाप्त होती है और ऐसा कहा जाता है कि यह दो चरणों में घटित होती है और परवर्ती प्रारंभिक चरण शैशवावस्था और बाल्यावस्था में सामाजीकरण को परिलक्षित करता है जिस काल में बालक सांस्कृतिक अधिगम के सर्वाधिक भावप्रवण रूप को प्राप्त करता है। यह चरण परवर्ती काल में घटित होने वाले सभी तरह के अधिगम के लिए आधारशिला तैयार करने में भाषा और व्यवहार नमूनों के आधारभूत ज्ञान की प्राप्ति को चिन्हित करता है।

माध्यमिक सामाजीकरण उत्तर बाल्यावस्था और किशोरावस्था के काल की योजना बनाता है जब बालक संस्थागत अथवा औपचारिक वातावरण जैसे विद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त करता है। यह स्तर प्रारंभिक सामाजीकरण के समानान्तर चलता है। लेकिन

पारिवारिक वातावरण से भिन्न जहाँ पर बच्चे अभिभावकों द्वारा सहज रूप से मान लिये जाते हैं, विद्यालयों में अधिकृत रूप से प्रशिक्षित किये जाते हैं। वे बड़े समूहों में अन्तःक्रिया करना सीखते हैं। नवीन संस्कृति के प्रति उनका यह प्रदर्शन इस चरण को और अधिक पेचीदा और चुनौतीपूर्ण बना देता है।

कुछ समाजशास्त्रियों ने एक और स्तर–प्रौढ़ सामाजीकरण जोड़ा है। **प्रौढ़ सामाजीकरण** प्रौढ़ावस्था में घटित होता है जब व्यक्ति नवीन भूमिकाओं को अपनी जरूरतों और इच्छाओं के अनुसार अनुकूल बनाते हैं जैसे पति/पत्नी/कर्मचारी आदि।

3.4 सामाजीकरण के अभिकरण

सामाजीकरण शून्य में नहीं हो सकता। व्यक्ति, समूह और संस्थायें सामाजीकरण के लिए सामाजिक स्थिति का सृजन करते हैं। इन्हीं अभिकरणों के माध्यम से हम अपनी संस्कृति के मूल्यों और मानदण्डों को सीखते और संस्थापित करते हैं। वे सामाजिक ढाँचे में वर्ग, प्रजाति और लिंग की दृष्टि से हमारी स्थितियों का भी लेखा प्रस्तुत करते हैं। सामाजीकरण की प्रक्रिया में हमारे द्वारा सीखी जाने वाली आदतें, कौशल, विश्वास और न्याय के मानक हमें समाज के क्रियाशील सदस्य बनने के योग्य बनाते हैं। हालाँकि 'क्रियाशील' शब्द को व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक सन्दर्भ में देखा जाता है। बोर्डीव (Bourdieu) (1990) व्यक्तिगत सामाजीकरण को एक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसके द्वारा व्यक्ति वर्ग सांस्कृतिक वातावरण के द्वारा प्रभावित होते हैं जिसमें वे पाले–पोसे जा रहे होते हैं/होती हैं। विविध प्रकार के अभिकरणों को औपचारिक/अनौपचारिक, सक्रिय/निष्क्रिय या प्रारंभिक/परवर्ती रूप में बाँटा जा सकता है। हालाँकि, कोई स्पष्ट सीमांकन नहीं है क्योंकि उनमें से सभी बहुत अधिक अन्तःसम्बन्धित हैं। हम सभी अभिकरणों की तीन स्तरों–लघु स्तर, मध्य स्तर और बृहत् स्तर–पर जाँच करेंगे।

3.4.1 लघु स्तरीय सामाजीकरण : परिवार, समसमूह, अड़ोस–पड़ोस

लघु स्तर लघु समूह अन्तःक्रिया के लिए आवश्यक होता है। यह स्तर अत्यावश्यक है क्योंकि आमने–सामने, भावप्रवण और अन्तरतम अन्तःक्रिया आधारभूत सूत्रीकरण को बनाती है। लघु स्तरीय सामाजीकरण के अन्तर्गत हम परिवार, समसमूह और पड़ोस द्वारा अदा की गई भूमिका के बारे में चर्चा करेंगे।

परिवार : सामाजीकरण को प्रथम और सर्वप्रथम बने रहने वाले अभिकरण के कारण परिवार के साथ विकास के विविध चरणों में घटित होने वाली प्रक्रियाओं के अनुक्रम के रूप में समझा जा सकता है। अपने परिवार के साथ छोटे बच्चे का सम्बन्ध अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, भाग्यसूचक और बच्चे पर चिरस्थायी प्रभावों में से एक है। परिवार को 'सामाजिक सद्गुणों का पालना' कहा जाता है। यहीं पर बालक के अभ्यन्तर मूल्य जैसे सहयोग, सहिष्णुता, आत्म बलिदान, प्रेम और स्नेह का अनुकूलन घटित होता है। अपने जीवन के परवर्ती काल में जिस तरीके से बच्चा शेष संसार के साथ बेहतर या बदतर के लिए अपने सम्बन्ध स्थापित करता है, उसे बहुत हद तक परिवार में अपने प्रारंभिक सामाजीकरण के द्वारा आकार प्रदान किया जाता है।

एक आधारभूत सामाजिक संस्था के रूप में परिवार को हमेशा व्यक्ति और साथ ही साथ समाज और मानव जाति के विकास के लिए एक अभ्यन्तर घटक के रूप में माना गया है। एक शिशु, जीवन की यात्रा अपने परिवार के प्रेम और देखभाल के साथ प्रारम्भ करता है। पुनः यह परिवार के सन्दर्भ में है कि वह जीवन की प्रारंभिक शिक्षाओं को आत्मसात करता है और अपने परिवार के सदस्यों की आदतों, रीति–रिवाजों और व्यवहार ढाँचों का अनुकरण करने का प्रयास करता है। बोर्डीव (Bourdieu) के अनुसार, हम अपने परिवारों

से सामाजिक स्वभाव (Habitus) को उत्तराधिकार में प्राप्त करते हैं। हैबिटस (Habitus) आदतों के समूह की ओर संकेत करता है जो कि हमें हमारे सामाजिक वर्ग के भाग के रूप में चिन्हित करता है, जैसे– आचरण, बात–चीत का तरीका, शब्दावली और उच्चारण करने का ढंग, शारीरिक व्यवहार और भाव भंगिमा। अन्तःक्रिया विशेष के लिए हमारी प्राथमिकता बहुत हद तक हमारे हैबिटस (Habitus) द्वारा निर्धारित होती है।

सभी मानव समाजों में सामाजीकरण के मुख्य अभिकरण के रूप में परिवार छोटे शिशु को मानव–समुदाय के सदस्य के रूप में बदल देता है और बच्चे में संस्कृति को सम्प्रेषित करने के लिए प्रथम माध्यम के रूप में कार्य करता है। यह परिवार ही है जो स्नेह, संरक्षण और सामाजीकरण प्रदान करता है जो कि निर्णायक वर्षों के दौरान बच्चे के लिए आधारभूत साधन है। यह वह भी समय है जब वह प्रारंभिक व्यावहारिक ढाँचों, आदतो, अभिवृत्तियों, परम्पराओं और रूढ़ियों को सीखता/सीखती है जब परिवार के सदस्यों के साथ अन्तःक्रिया कर रहा/रही होता/होती है। परिवार उसे वांछित सामाजिक अभिवृत्तियों की शिक्षा देता है और इस तरह से साँचे में ढालता है जो परिवार की स्थिति, प्रतिष्ठा और मानस को शोभा देता है। यह ऐसा भी परिवार है जो बहुत हद तक बच्चे की प्रजाति, भाषा, धर्म, वर्ग और राजनीतिक सम्बन्ध का निर्धारण करता है, जो सभी बच्चे की स्व–संकल्पना को बनाते हैं।

सामाजिक संस्था के रूप में परिवार को बहुत से कार्य करने होते हैं। परिवार का कार्य करना व्यक्ति के सामाजीकरण की प्रक्रिया में अद्वितीय महत्त्व रखता है क्योंकि परिवार बच्चे को प्रारंभिक मानव–व्यवहार ढाँचों और प्रारंभिक अन्तःवैयक्तिक सम्बन्धों की ओर अभिमुख कर देता है। इस स्तर पर सामाजीकरण की प्रक्रिया अनौपचारिक रहती है। कुछ समाजशास्त्री परिवार को एक लघु समाज के रूप में मानते हैं जोकि व्यक्ति और समाज के बीच संचरण क्षेत्र के रूप में कार्य करता है। आप ने देखा होगा कि किस प्रकार बच्चों के पालन–पोषण के तरीके एक परिवार से दूसरे परिवार में भिन्न होते हैं। हर बच्चा अद्वितीय है और अपने परिवार की संस्कृति से प्रेरित होता है। लेकिन एक सामान्य मतैक्य है कि माता–पिता और बच्चे का संवेदनशील सम्बन्ध सकारात्मक विकास–परिणाम देता है। एक पोषणीय सम्बन्ध, जहाँ पर माता–पिता अपने बच्चों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील होते हैं, सकारात्मक तरीके से योगदान दे सकता है।

परिवार के सदस्यों द्वारा बच्चे का पालन–पोषण करने से उनमें बड़ों के लिए आदर, सहिष्णुता और अनुकूलनशीलता विकसित होती है। दूसरी तरफ, यदि परिवार में सामाजीकरण अविश्वास के पृष्ठपट, निरंकुशता और द्वन्द्व में किया जाता है तो ऐसे परिवार में बढ़ने वाले बच्चों में असामाजिक व्यवहार का विकास होता है।

हालाँकि यह ध्यान देने योग्य है कि अन्य बहुत से कारक जैसे परिवार का आकार, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, अभिभावकों का व्यवसाय, अति लालन–पालन, माता–पिता की उपेक्षा और दबाव आदि सभी बच्चे के सामाजीकरण को प्रभावित कर सकते हैं। परिवार में प्रौढ़ो के जिस व्यवहार से बच्चे उत्साहित या हतोत्साहित होते हैं और जिस तरह का अनुशासन वे थोपते हैं, ये भी बच्चों के जीवन की स्थिति निर्धारण को प्रभावित करते हैं।

अभिभावकीय कर्तव्य विभिन्न राजनैतिक और ऐतिहासिक सन्दर्भों में बनाये जाते हैं। उदाहरण के लिए जापान में अपने बच्चे के सामाजीकरण में माँ की भूमिका निर्णायक है। जब से बच्चा पैदा हुआ है, वह अपने व्यक्तित्व को गढ़ता है/गढ़ती है ताकि बच्चा बाहरी दुनिया में ठीक बैठ सके। हमारे देश में पितृसत्तात्मक व्यवस्था परिवार के कार्यों का मार्गदर्शन करती है। यह व्यवस्था परिवार में पुरूष और स्त्री आज्ञाकारिता के प्रभाव को चिन्हित करती है। इस विषय में अधिकतर पिता जो कि कमाने वाला होता है अधिकार का उपभोग करता है। महिलाओं को घरेलू कार्यों तक सीमित रखा जाता है। चूँकि

बाल्यावस्था सर्वाधिक प्रभाव्य आयु है, छोटा बच्चा जो कि अपने पिता, माता और अन्य सदस्यों की भूमिका का प्रेक्षण करता है, उनकी भूमिकाओं को समझता है और बाद में उनकी भूमिकायें अदा करता है।

परिवार–सामाजीकरण और किशोर

''मध्य स्तर के विद्यार्थी माता–पिता को नहीं चाहते कि वे हमेशा चारों ओर हों, बल्कि इस तथ्य में आराम महसूस करते हैं कि उनके माता–पिता हमेशा चारों ओर हैं।''– (क्रोस्नो, 2001)

किशोर–सामाजीकरण को किशोरों को उनके सामाजिक संसार की व्याख्या और सामाजिक सम्बन्ध के सन्दर्भ में देखा जाता है। शैशव और बाल्यावस्था के प्रारंभिक चरणों की तुलना में मातृपितृीय सामाजीकरण के लिए सीमित अवसर हैं क्योंकि किशोर उस संसार में प्रवृत्त होना चाहते हैं जहाँ पर वे अपने माता–पिता के कम नियंत्रण में हैं। इस चरण में मित्रता घनिष्ठ और अत्यन्त अन्तरंग हो जाती है; माता–पिता के साथ सम्बन्ध बदलकर समसमूहों के साथ हो जाते हैं।

किशोरों की अधिक स्वायत्तता की माँग माता–पिता के साथ बढ़े हुए विरोध के परिणाम में बदल सकती है। हम उनके विद्रोही स्वभाव के लिए यौवनारम्भ मनोवैज्ञानिक परिवर्तन जैसे कारण को उत्तरदायी ठहराते हैं, लेकिन सच तो यह है कि इस प्रकार के आवेश–विस्फोट और भूमिका–भ्रम सांस्कृतिक असंगति के कारण होते हैं। माता–पिता और किशोरों के बीच बहुत से द्वन्द्व इस कारण होते हैं कि मामलों को किस प्रकार गढ़ा या परिभाषित किया जाता है। ऐसा सामाजिक मानदण्डों और रूढ़ियों की अपेक्षाओं में अन्तर के कारण भी हो सकता है। माता–पिता सामाजिक परम्पराओं के अनुसार क्या सही अथवा गलत है, इस आधार पर मुद्दों की व्याख्या करते हैं। किशोरों के लिए, इस प्रकार के मामले व्यक्तिगत पसन्द से सम्बन्धित हैं। उदाहरण के लिए माता–पिता इसलिए नाराज हो सकते हैं कि किस प्रकार उनका किशोर बेटा/बेटी कमरे को इतना गन्दा रखते हैं लेकिन किशोर के लिए यह उसकी पसन्द का मामला है।

विद्वानों ने किशोरावस्था को स्व–पर्यवेक्षण और स्व–पहचान के समय के रूप में देखा है। किशोर बार–बार स्वयं से यह पूछते हैं कि ''मैं कौन हूँ?'', ''मुझे कौन सी भूमिका प्रदान की गई है?'' इस प्रकार के प्रश्न उनमें पहचान–संकट पैदा करते हैं। एरिक्शन (1968) का सिद्धान्त इस पहचान संकट को सुस्पष्ट रूप से बताता है। किशोर व्यक्तिगत विश्वास बनाना प्रारंभ करते हैं और स्वयं के लिए मानक तय करते हैं। हालाँकि परिवार–सामाजीकरण उनके अवबोधन को प्रभावित करने के लिए जारी रहता है।

पारिवारिक सन्दर्भ में लिंग सामाजीकरण :–

रजिता पटना में आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली एक युवा हँसमुख लड़की है। वह एक उत्साही छात्रा है। हालाँकि, विलम्ब होने के कारण वह कक्षा में नहीं पहुँच पाती है। उसकी माँ बीमार है और उन्हें एक माह के लिए आराम करने की सलाह दी गई है। उसके पिता ने रजिता को कहा कि वह घरेलू काम–काज का ध्यान रखे और अपनी छोटी बहन और भाई की देख भाल करे। रजिता को क्या करना चाहिए? यदि वह कक्षा छोड़ती है तो वह परीक्षा में नहीं उपस्थित हो सकेगी। यदि वह विद्यालय जाती है तो ऐसा उसके पिता की इच्छाओं के विपरीत होगा और उन्हें गुस्सा आयेगा और उसके छोटे भाई–बहन की देखभाल कौन करेगा यदि वह विद्यालय जाती है?

ग्रामीण भारत में रजिता जैसे और भी बहुत से मामले हैं जो असहाय हैं अपनी लिंग भूमिका के कारण। लिंग के सम्बन्ध में हमारे देश की शिक्षा–नीति प्रगतिशील है। महिला सशक्तीकरण को प्रोत्साहन देने वाली शिक्षा की आवश्यकता पर हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति

में बल दिया गया है। फिर भी कटु वास्तविकता यह है कि भेदभाव अब भी प्रचलित है; लिंग अनुपात विद्यमान है, लड़कियों के विद्यालय छोड़ने की दर अब भी उच्च है।

चित्र 3.1

क्रियाकलाप 1

i) यह चित्र क्या दर्शाता है?

....

....

....

....

हम जानते हैं कि मानव विकास में लिंग पहचान मील के प्रमुख पत्थरों में से एक है। यहाँ तक कि प्रारंभिक अवस्था में ही लिंग–बोध बच्चे के मन में स्थापित हो जाता है। लिंग सामाजीकरण का अर्थ होता है लड़के और लड़कियों के सामाजीकरण में अन्तर। परिवार प्रथम और सर्वप्रथम अभिकरण है जहाँ पर लिंग सामाजीकरण होता है। परिवार–सामाजीकरण के दौरान, लिंग–भूमिका निर्धारित हो जाती है– 'लड़के, लड़कियों और पुरूषों और महिलाओं से क्या करने की अपेक्षा की जाती है?'

हमारे देश के अधिकतर हिस्से में पितृसत्तात्मक व्यवस्था प्रचलित है। हमारे समाज में महिलाओं और पुरूषों के बीच असमान अधिकारों का सम्बन्ध भी सुस्पष्ट है जबकि पुरूष अधिक प्रभावी है और महिलायें प्रायः पुरूषों की तुलना में अधीनस्थ और निम्न देखी जाती हैं। लड़कों को इस तरह से पाला–पोसा जाता है कि पुरूष लिंग–भूमिका को निश्चित किया जा सके और लड़कियों को इस तरह कि महिला–लिंग भूमिका को निश्चित किया जा सके। पुरूष–महिला द्विभाजन की प्रथा लोगों को अलग करने के लिए जारी है। वास्तव में ये लिंग–भूमिकायें स्वाभाविक नहीं हैं, बल्कि जैविक लिंग भेदों के सामाजिक प्रक्षेपण हैं। जीवन में शुरू से ही बच्चे अपने जीवन के सभी पहलुओं–लिंग–आधारित विभिन्नताओं को अनुभव करते हैं, चाहे वे स्वास्थ्य–सुरक्षा हों या शिक्षा हों या दूसरों के साथ सम्बन्ध हों। केवल बाल–प्रतिमान अभिभावक व्यवहार ही नहीं, अक्सर उन्हें सिखाया जाता है कि उन्हें क्या करना चाहिए। पुरूष बच्चे के साथ सम्बद्ध विशेष मूल्य भी बहुत स्पष्ट है; चाहे वह मातृपितृीय अनुक्रियाओं के माध्यम से हो, मातृपितृीय व्यवहार से हो, पारिवारिक अनुष्ठानों से हो, रीति–रिवाजों से हो, समारोहों से हो, लोक–साहित्य अथवा गीतों से हो। समस्यायें जिनका सामना लड़कियों को करना पड़ता है, सामान्यतया पुरूष–प्रभाव और महिलाओं के असहाय होने को प्रतिबिम्बित करती हैं।

आप ने देखा होगा कि लड़कियाँ सामान्य रूप से लड़कों की तुलना में ज्यादा घरेलू काम–काज करती हैं और लड़कों के लिए नियत घरेलू कार्य का स्वरूप भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, प्रायः लड़कियों को ही रसोई में मदद करने के लिए कहा जाता है। हम बहुत कम ही ऐसा देखते हैं कि कोई लड़की पीछे के अहाते में अपने पिता की मदद कर रही हो अथवा घर में मशीनी सामानों को निर्धारित कर रही हो।

माता–पिता उनके आचरण और व्यवहार को नियंत्रण में रखते हैं। बदलते समय के साथ अभिवृत्तियाँ भी बदल रही हैं। आज आप देख सकते हैं कि बहुत सी महिलायें अपने पुरूष प्रतिमूर्तियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सभी क्षेत्रों में लगी हुई हैं। उन्होंने पुरूष–प्रभाव को चुनौती देना भी शुरू कर दिया है। जैसा कि आप देख सकते हैं, लिंग भेद हमारे समाज में महिलाओं के विकास के लिए बाधा उत्पन्न करने वाला विष है। समय की आवश्यकता है कि हमारे समाज में लिंगीय समानता के बारे में जागरूकता फैलाई जाय।

सम–समूह

क्या आप कभी इस बात से आश्चर्य में पड़े हैं कि क्यों परिवार के सामाजीकरण की भूमिका बच्चे के बढ़ने के साथ कम हो जाती है? एक कारण यह हो सकता है कि इस अवस्था में सम–समूह अन्तःक्रिया शक्तिशाली प्रभाव बनाने के लिए शुरू हो जाती है। मान लीजिए आप की हमउम्र साथी की पसंद रैप अथवा पॉप संगीत है, तो यह अपरिहार्य है कि आप भी उसी प्रकार का संगीत सुनने को प्राथमिकता देंगे, हालाँकि आप शास्त्रीय अथवा गज़ल के शौकीन हो सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि समसमूह का हमारे सामाजीकरण पर गहरा प्रभाव होता है। समसमूह का निर्माण उन सदस्यों द्वारा होता है जिनमें कुछ सामान्य विशेषतायें होती हैं जैसे कि आयु (विकास और परिपक्वता की एक उम्र) अथवा लिंग आदि। इसमें शामिल हैं– खेल के साथी, परिवार के सदस्य, पड़ोसी अथवा दिन में देखभाल करने वाले केन्द्र (day care centres), विद्यालय के साथी। सामान्य रूप से समसमूहों की अभिरूचि और सामाजिक स्थान भी समान हो सकता है और वे घनिष्ठ सामाजिक सामीप्य रखते हैं। अल्पवयस्क किशोरों के लिए, समसमूहों से स्वीकृति सामाजीकरण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू है। इसलिए वे समसमूह के अनुकूल रहने और निष्ठा विकसित करने के लिए उत्सुकता दिखाते हैं।

समसमूह के प्रभाव का पता उस समय लगाया जा सकता है जब बच्चा तीन वर्ष का होता है अथवा ऐसा कि जब वह निकटस्थ परिवार से बाहर के लोगों के साथ मिलना–जुलना प्रारंभ कर देता है/देती है। इस प्रकार की प्रारंभिक अवस्था से बच्चे अपने समसमूहों के साथ सार्थक सम्बन्ध बनाते हैं, जो उन पर प्रभाव डालने का प्रयास करते हुए से प्रतीत होते है। चूँकि वे अधिकतर उसी आयु वर्ग से सम्बन्धित होते हैं, इसलिए बिना किसी अवरोध के स्वतंत्र रूप से अन्तःक्रिया करते हैं। समसमूह के साथ इस प्रकार का सतत और असंयमित सामाजीकरण व्यक्ति को महत्त्वपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में मदद करता है। समसमूह का हिस्सा होने के कारण बच्चे अपने माता–पिता के प्रभाव से अलग होना शुरू कर देते हैं और मित्र बनाना और अपने स्वयं के निर्णय लेना सीखते हैं। यदि आप खेल के समय बच्चों को ध्यान से देखें तो आप यह देख सकते हैं कि वे किस प्रकार बड़ों के बिना किसी निर्देश के विविध रणनीतियों को समाविष्ट करते हैं जैसे– समझौते की बातचीत, प्रभाविता, नेतृत्व, सहयोग, समझौता करना, आदि। समसमूह–सामाजीकरण उन्हें समूह अन्तःक्रिया के सूक्ष्म भेदों को समझने की योग्यता से युक्त करता है और उसके अनुसार कार्य करता है।

समसमूह का इतना प्रभाव है कि कुछ बच्चे माता–पिता और परिवार की प्रभावी सत्ता को चुनौती देना शुरू कर देते हैं। जैसे ही समय बीतता जाता है यह मातृपितृीय प्रभाव को

निष्प्रभ कर देता है, विशेष रूप से किशोरावस्था में। जब बच्चे यह महसूस करते हैं कि उनके समसमूह के मानक, उनके परिवार के द्वारा अनुमोदित मानक के समान नहीं है तो वे मोहमुक्त महसूस करते हैं। तीव्र गति से बदलते समाजों में माता–पिता अक्सर यह शिकायत सुनते हैं कि उनके बच्चे अधिक से अधिक विद्रोही होते जा रहे हैं। यह अपरिहार्य है क्योंकि बच्चा मातृपितृीय सत्ता की अन्धस्वीकृति को मना कर देता है।

हमउम्र और उसके अनुकूल क्रियायें किशोरावस्था में व्यक्ति के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। हालाँकि परिवार तरूणों की सामाजिक क्रियाओं के केन्द्र के रूप में चलता रहता है, वह स्नेह, सहानुभूति और समझ के लिए समसमूह की तरफ मुड़ती/मुड़ता है। **पहचान** ('मैं कौन हूँ?' इस प्रश्न का उत्तर पाना) के लिए, अपनी खोज में **स्वायत्तता** (स्वयं को दूसरों से अलग और स्वतंत्र अनुभव करना) जैसी स्थिति में समसमूह समर्थन के मुख्य स्रोत के रूप में कार्य करता है।

किशोरावस्था, यौवनारम्भ के आगमन और कामवासना के प्रति सजगता और जीवन में यौन सम्बन्धों की ओर भी संकेत करती है। समसमूह सामाजीकरण उन महत्त्वपूर्ण मील के पत्थरों से जुड़ जाता है। काम और कामवासना के बारे में जिज्ञासा स्वाभाविक है और किशोर बिना किसी झिझक के अपने समसमूह से सम्पर्क करते हैं। इस अवस्था में लिंग भूमिका–सामाजीकरण जो कि परिवार में प्रारंभ की गई थी, और अधिक प्रबल हो जाती है।

तरूणों के जीवन की प्रतिदिन की क्रियाओं जैसे– पहनावे की पसंद, उनके खाने की आदतें, केश–विन्यास, शौक, विशेष प्राकर के संगीत के लिए प्राथमिकता, खेलकूद और ऐसे ही अन्य में प्रतिबिम्बित होने वाले प्रभाव का प्रेक्षण करना दिलचस्प है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि माता–पिता अब भी जीवनवृत्ति और जीवन–साथी के चयन आदि प्रमुख निर्णय लेने में सहायता करने और प्रेरणा के प्रमुख स्रोत हैं।

समसमूहों में लिंग सामाजीकरण

''गुड़िया लड़कियों के लिए है; बन्दूकें लड़कों के लिए हैं।''

''हमारे खेल में लड़कों का आना मना है।''

''भोले मत बनो, आप लड़के हो, आप बार्बी गुड़ियों के साथ नहीं खेल सकते।''

प्रायः बच्चे अपने समसमूहों के साथ खेल के दौरान इस प्रकार के कथन कहते हुए सुने जाते हैं। समसमूहों में इस प्रकार के लिंग–सामाजीकरण पर ध्यान देना दिलचस्प है। बच्चों में लिंग–रूढ़िबद्ध धारणा का एक महत्त्वपूर्ण कारक है समसमूह के साथ उनकी अन्तःक्रिया।

यदि आप अपने रास्ते में किसी विद्यालय के सामने से गुजरें तो थोड़ी देर रूकें और खेल के मैदान में बच्चों को देखें। कौन सी बात आप का ध्यान अधिक आकर्षित करेगी? यह इस बारे में होगी कि बच्चे किस प्रकार समूह का निर्माण करते हैं, किस प्रकार के खेल में लगने के लिए वे उसका चयन करते हैं, और समूहों के अन्तर्गत साहचर्य। बच्चे एक जैसे ही लिंग–समूहों के लिए चिन्हित प्राथमिकता को प्रदर्शित करते हैं। लड़के बड़े समूह बनाते हैं; अधिक शारीरिक क्रियाओं का चयन करते हैं और ऐसे स्थान को खोजते हैं जो प्रौढ़ों से दूर हों, अथवा ऐसे स्थान जहाँ पर प्रौढ़ों का कम हस्तक्षेप हो। जबकि लड़कियाँ छोटे समूहों में खेलने को प्राथमिकता देती हैं; ऐसे खेलों को महत्त्व देती हैं जिनमें कम शारीरिक क्रियाओं की आवश्यकता होती है और प्रौढ़ संवीक्षा से बहुत अधिक दूर न जाने का चयन करती हैं। ये प्रवृत्तियाँ रूढ़िवादी लिंग–भूमिकाओं को प्रतिबिम्बित करती हैं जिन्हें उनके लिए नियत किया गया है।

कभी–कभी हम उम्र प्रभाव इतना अधिक होता है कि समसमूह हमउम्रों के नकारात्मक प्रभाव के मूल में निहित 'खतरनाक प्रभाव के संयुक्त मोर्चें' के रूप में कुख्यात नाम प्राप्त करता है लेकिन हमारे दिमाग में यह होना चाहिए कि विकासशील व्यक्ति सामाजिक परिस्थिति से जुड़ा होता है जहाँ पर वह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभावों को अनुभव करती है/करता है और उसकी/उसका सामाजीकरण से सार्थक सम्बन्ध होता है।

आस–पड़ोस

आस–पड़ोस को एक स्थानीय सामाजिक इकाई कहा जा सकता है जहाँ पर एक ही इलाके के लोग अथवा एक दूसरे के आस–पास रहने वाले लोगों के बीच सतत अन्तःक्रिया होती है। इस प्रकार की स्थानिक इकाइयों में आमने–सामने की अन्तःक्रियायें निरन्तर होती रहती हैं। इस अर्थ में वे स्थानीय सामाजिक इकाइयाँ हैं जहाँ पर बच्चे बढ़ते हैं। आप अपने आस–पड़ोस में विविध वर्ग के लोगों को देख सकते हैं जो जाति, वर्ग, धर्म अथवा पेशे में भिन्न होते हैं। इस प्रकार के विविध वर्ग के लोगों के साथ अन्तःक्रिया के द्वारा आप विविध प्रकार की परम्पराओं और रीति–रिवाजों, विविध प्रकार के व्यवसाय जिन्हें लोग अपनाते हैं, इस प्रकार के व्यवसायों के लिए आवश्यक कौशलों और उन सदस्यों द्वारा धारण किये जाने वाले गुणों को प्रदर्शित कर सकते हैं। बढ़ता हुआ बच्चा अनुशासन के मूल्यों और अनुशासित व्यवहार को भी ग्रहण कर सकता है। अन्तःक्रियायें शारीरिक और सामाजिक दोनों पर्यावरणों में हैं जिनमें बच्चे सहज रूप से प्रभावित होते हैं। यदि बच्चा ऐसे लोगों के आस–पास है जो स्नेही और सहयोगी हैं, यह निश्चित रूप से उसमें संचरित होगा। दूसरी तरफ यदि इलाके में आक्रामक और हिंसक समूह के लोग हैं तो यह सम्भव है कि इस प्रकार के बच्चे असामाजिक अथवा समाजविरोधी व्यवहारों को सीख सकते हैं।

एक ही इलाके के लोगों के बीच अन्तर्निर्भरता को देखना आसान है। वहाँ पर वैयक्तिक भिन्नतायें हो सकती हैं। उसी समय उसी इलाके के ये निवासी सामान्य मूल्यों, सामान्य परम्पराओं, लोक–रीतियों और प्रथाओं का आदान–प्रदान करते हैं, युवाओं को समाजीकृत करते हैं और प्रभावी सामाजिक नियंत्रण को कायम रखते हैं। इस प्रकार आप समझ सकते हैं कि आस–पड़ोस सामाजीकरण की प्रक्रिया में मुख्य भूमिका अदा करता है।

अपनी प्रगति जाँचें – 1

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि सामाजीकरण वृद्धि के लिए अनिवार्य है?

....

....

....

....

क्रियाकलाप 2

अपनी कालोनी में कुछ किशोरों से बात–चीत कीजिए। पता लगाइये कि वे अपना अनुकरणीय व्यक्ति किसे मानते हैं? क्या वे माता–पिता/परिवार के नजदीकी सदस्यों/रिश्तेदारों/अध्यापकों/फिल्म, खेलकूद और कला आदि के यशस्वी व्यक्तियों से प्रेरित हैं? दिये गये स्थान में उनकी राय पर आधारित अपने विमर्श को लिखिये।

....

....

....

....

3.4.2 मध्य स्तरीय सामाजीकरण : विद्यालय, धर्म, सामाजिक वर्ग

मध्य स्तरीय इकाइयाँ मध्यवर्ती आकार की सामाजिक इकाइयाँ हैं जो कि दीर्घ स्तर से कुछ छोटी हैं लेकिन लघु इकाइयों से बड़ी, जैसे परिवार अथवा स्थानीय समुदाय। इसमें विद्यालय, शैक्षिक संस्थायें और राजनीतिक समूह आदि शामिल किये जा सकते हैं। ये संगठन और संस्थायें उतनी बड़ी नहीं हो सकतीं जितनी कि वैश्विक इकाइयाँ लेकिन प्रतिदिन के जीवन में मिलने वाले व्यक्तिगत अनुभवों से परे।

विद्यालय

जैसे ही बच्चा बढ़ता है, वह विद्यालय पहुँचाया जाता है, जहाँ पर उसका दूसरों से सम्पर्क भी बढ़ता है। विद्यालय में बच्चे का पहला दिन मध्यस्तरीय इकाई में प्रवेश के अनुष्ठानों में से एक है। यह स्मरण रखना उचित है कि बच्चों का सामाजीकरण शैशव से किशोरावस्था तक बहुत तीव्र दर से होता है जिसमें परिवार और सहपाठी शैशव के प्रारंभिक स्तर पर अधिकतम प्रभाव डालने का प्रयास करते हैं। अतः यह विद्यालय ही है जो बच्चे के व्यवहार-मानदण्डों को गढ़ता है।

विद्यालय औपचारिक शैक्षिक संस्थानों के सम्पूर्ण प्रकार की ओर संकेत करता है। ब्रूबेकर के शब्दों में ''विद्यालय शिक्षा और सामाजीकरण का सक्रिय, प्रत्यक्ष और औपचारिक अभिकरण है।'' विद्यालय को सामान्यतया ''बाहरी समाज'' के प्रयोजन से समझा गया है। विद्यालय को समाज के मूल्यों को जीवित रखने वाले के रूप में देखा जाना चाहिए जो कि मानवता को बच्चों के माध्यम से नैतिक, बौद्धिक और सौन्दर्यपरक विकास के उच्चतर स्तरों पर ले जाने के लिए सतत प्रयास कर रहा है। विद्यालय विद्यार्थियों को औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं। औपचारिक परिस्थिति कक्षा–कक्ष में प्रदान की जाती है जबकि सामाजीकरण की विषयवस्तु, पाठ्यचर्या और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया द्वारा निर्धारित की जाती है। अनौपचारिक परिस्थिति शिक्षकों और समसमूह के साथ विद्यार्थियों के अन्तःवैयक्तिक सम्बन्धों में देखी जा सकती है।

विद्यालय एक लघु समाज है जहाँ पर विभिन्न परिवारों, विभिन्न धर्मों, विभिन्न जातियों और आर्थिक स्तर के बच्चे साथ–साथ रहते हैं, सामूहिक क्रियाओं में भाग लेते हैं और समाज के साथ समायोजन करना सीखते हैं। विद्यालय में बच्चे ने जो कुछ परिवार, समसमूह अथवा समुदाय के माध्यम से सीखा है, स्थायी हो जाता है।

जैसा कि आप देख सकते हैं कि विद्यालय में बच्चों को इस उद्देश्य के साथ सामाजीकृत किया जाता है कि उन्हें जीवन के लिए तैयार किया जा सके और लघु इकाइयों से परे संसार के लिए वे उपयुक्त भूमिका निभा सकें। विद्यालय नवजवान लोगों को प्रौढ़ों की भूमिका में चुनते हैं, जो उनके लिए उपयुक्त समझे जाते हैं; साथ ही साथ उन्हें आचार–व्यवहार और कौशल सिखाना होता है जो इन विचारों से मेल खाते हैं।

विद्यालय–सामाजीकरण केवल बढ़ते हुए बच्चों को न केवल शैक्षणिक अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद करता है बल्कि बहुत से मूल्यों जैसे–समयनिष्ठा का महत्त्व, अनुशासन, लचीलापन, समूह कार्य और सहयोग आदि को भी। विद्यालयों द्वारा अदा की जाने वाली दूसरी महत्त्वपूर्ण भूमिका लिंग–सामाजीकरण के सम्बन्ध में है। यद्यपि लिंग की पहली शिक्षा परिवार से प्राप्त होती है, फिर भी विद्यालय में बच्चा अपने विविध आयामों को

समझता है। इस स्तर पर विद्यालय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अभिकरण हो जाता है; साथ ही साथ उसे विद्यालय और आस–पड़ोस में सम–समूह से परिचित कराया जाता है।

विद्यालय व्यवस्था समाज के अन्तर्गत कार्य करती है और समाज की माँगों को पूरा करती है। यह उत्प्रेरक के प्रयोजन को पूरा करती है, जब सुधार और गति की आवश्यकता होती है। ठीक उसी समय यह जाँच–पड़ताल करती है ताकि समाज के सांस्कृतिक मूल्य फीके न हो जायँ। जो बच्चे विद्यालयी शिक्षा से वंचित रह जाते हैं उनके पास विद्यालयों में अपने प्रतिपक्ष से भिन्न महती अन्तःक्रिया, प्रदर्शन और व्यापक सामाजीकरण के क्षेत्र वाली केवल संकुचित समाजिकता होगी।

अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या भी विद्यालय में सामाजीकरण के लिए एक वाहन के रूप में प्रयोग की जाती है। अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या का अर्थ है कि बच्चे शैक्षणिक विषयवस्तु के अलावा और क्या सीखते हैं, उसमें से वे क्या करते हैं अथवा उनसे क्या करने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षक और सहपाठी सामाजिक वर्ग और लिंग आदि के विषय में बच्चों की अभिवृत्ति को आकार प्रदान करते हैं जो कि उनके व्यवहार में प्रतिबिम्बित होता है। इस प्रकार एक अभिकर्त्ता के रूप में विद्यालय बच्चों के सामाजीकरण में परिवार से प्राप्त आदतों, मूल्यों और मानदण्डों को पुनर्बलित करते हुए और ठीक उसी समय उन्हें विचारों और कार्यों के नये क्षेत्रों के लिए प्रदर्शित करते हुए निर्णायक भूमिका अदा करता है।

परिवर्तन के अभिकर्त्ता के रूप में अध्यापक

बच्चों के सामाजीकरण में शिक्षा प्रदान करने के लिए अध्यापक निर्णायक हैं। वह प्रेरक वातावरण को बनाने और उसे कायम रखने के लिए कक्षा–कक्ष में मुख्य स्थान रखता/रखती है। वह बच्चों के व्यक्तिव को गढ़ने में बहुविध भूमिका अदा करती/करता है। ज्ञान के संचार, सूचना के प्रसार, मूल्यों की शिक्षा देने, आदर्श व्यवहार को नमूना बनाने, विवादों को सुलझाने, सकारात्मक अपेक्षाओं के सम्प्रेषण आदि में अध्यापक बच्चों के अधिगम में योगदान देता है।

यद्यपि अध्यापक का प्राथमिक उत्तरदायित्व ज्ञान का संचार करना हैं तथापि अध्यापक सामाजीकरण का सक्रिय अभिकर्त्ता है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान सतत अन्तःक्रिया के माध्यम से, कक्षा–कक्ष में विश्वास का वातावरण बनाया जाता है, जहाँ पर बच्चे अपनी आकांक्षाओं को व्यक्त कर सकें, अपने अनुभवों का आदान–प्रदान कर सकें, अपनी आशंकाओं और दुश्चिंताओं को सम्प्रेषित कर सकें और समाधान तक पहुँच सकें। जैसा कि इससे पहले बताया जा चुका है, अध्यापक अधिगम वातावरण और विद्यालय के अन्तर्गत व्यवहार, भूमिकाओं और अभिवृत्तियों को स्वीकार करने के लिए सम्मिलित किया जाता है। रचनात्मक वर्षों में जब बच्चे प्रारम्भिक स्तर पर होते हैं तब बच्चों और अध्यापकों के बीच बन्धन उनके अपने माता–पिता की तरह बड़ा घनिष्ठ होता है। वे अपने अध्यापक को एक आदर्श व्यक्ति के रूप में देखते हैं। किशोरावस्था में भी अध्यापक की भूमिका कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। उनके अशांत वर्षों के दौरान अध्यापकों के साथ सकारात्मक सम्बन्ध आक्रामकता और दुश्चिंता को कम कर सकता है और अग्रलक्ष व्यवहार के प्रति उन्हें मार्गदर्शित कर सकता है। अध्ययन बताते हैं कि संवेगात्मक रूप से सहायक अध्यापक शैक्षणिक अभिरूचि, अभिप्रेरणा और सकारात्मक स्व–संकल्पना को प्रोत्साहित करते हैं और ''तनाव और तूफान'' के समय मार्ग दिखाने में किशोरों की मदद करते हैं।

अध्यापक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों से प्रभाव डालता है। वह बच्चों में सामाजीकरण की प्रक्रिया को, व्यवहार को नमूना बनाकर, अपेक्षाओं को सम्प्रेषित करके और सकारात्मक व्यवहार को पुनर्बलित करके बढ़ा सकता/सकती है। अधिगम वातावरण में विद्यार्थियों के सामाजीकरण के सुगमकर्त्ता के रूप में व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने की अध्यापक

के पास क्षमता होती है। जब वह विद्यार्थियों के सामाजीकरण में लगी होती है/लगा होता है तो उसकी भूमिका शिक्षक से भी ज्यादा बढ़ जाती है।

अध्यापकों की भूमिका परिवर्तन अभिकर्त्ताओं के रूप में विद्यालय वातावरण और उनके शिक्षार्थियों तक ही सीमित नहीं है। यह विद्यालय की चहारदीवारी से परे समुदायों तक बढ़ जाती है। अध्यापक समुदायों तक पहुँचने का प्रयास कर सकते हैं और उन्हें करना भी चाहिए और विविध पहलुओं जैसे स्वस्थ आदतों, बाल अधिकारों, बालिका शिक्षा, महिला सशक्तीकरण, लिंगीय समानता, पर्यावरण रक्षा, प्रौद्योगिकी का प्रयोग, शांति, लोकतंत्र और समाजवाद आदि के बारे में जागरूकता फैलाना चाहिए।

तथापि यह कल्पना करना सहज है कि अध्यापक का सामाजिक सम्बन्ध एक तरह से अथवा कारण–प्रभाव सम्बन्ध के रूप में है क्योंकि दोनों ही एक दूसरे को निरन्तर प्रभावित करते हैं और पारस्परिक सम्बन्ध में सामाजीकृत करते हैं। प्रायः अध्यापकों के लिए यह महान अनुभव है कि जब उनके विद्यार्थी नवीन और नवाचारी विचारों के साथ आते हैं अथवा समाधान तक पहुँचने के लिए अनोखे तरीके पाते हैं।

आजकल ''नयी पीढ़ी के संवेष्टन (पैकेज)'' को सँभालने के लिए अध्यापक को अपने पास में बहुत से कौशलों को रखने की आवश्यकता है। यह निर्णायक है कि अध्यापक निष्पक्ष, लोकतांत्रिक, व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील है और लिंगीय रूढ़िबद्ध धारणाओं को प्रभावहीन करने के योग्य है; समेकित व्यवहारों को अपनाते हैं, भिन्न क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए अवसर प्राप्त करते हैं, कक्षा–कक्ष में एक दूसरे की देखभाल और घर–परिवार की सेवा का दायित्व रखते हैं, अभिभावकों और देखभाल करने वालों से जुड़े रहते हैं और अपने विद्यार्थियों का सहानुभूति और दयालुता के साथ मार्गदर्शन करते हैं।

धर्म

एमिली दुर्खीम (Emile Durkheim) धर्म की परिभाषा ''पवित्र चीजों से सम्बन्धित विश्वासों और व्यवहारों की एकीकृत पद्धति'' के रूप में देते हैं। जिनके पास सामान्य विश्वास और व्यवहार है, वे धर्म के माध्यम से एकल नैतिक समुदाय में संगठित हैं।

मानवशास्त्री और साथ ही साथ समाजशास्त्री दोनों ही धर्म को हमारे सामाजिक अस्तित्व का अभिन्न अंग मानते हैं। धर्म सामूहिक विश्वास को सामूहिक पहचान में बदल देता है। आपने अवश्य देखा होगा कि किस प्रकार धार्मिक अनुष्ठान जैसे– विवाह, शव–संस्कार, जन्म दिन समारोह और त्योहार लोगों को एक साथ करते हैं जिसमें वे अपने समूहों के साथ पूर्ण एकता प्रकट करते हैं। विशेष धार्मिक समूह के सदस्य एक दूसरे से सम्बन्धित होने की भावना का आनन्द लेते हैं। यह स्वाभाविक है कि वे जो समूह के बाहर हैं, परायापन महसूस करते हैं। सामाजीकरण के एक सम्भाव्य अभिकर्त्ता के रूप में धर्म अपने सदस्यों को आध्यात्मिक संसार की दृष्टि प्रदान करता और उन्हें वृहत् समाज में जोखिम उठाने के लिए तैयार करता है।

हमारे देश में धर्म से सम्बन्धित विविधता बहुत आश्चर्यचकित कर देने वाली है। सामाजीकरण की प्रक्रियायें एवं रीतिरिवाज एक धर्म से दूसरे धर्म में भिन्न होती हैं। अधिकतर मामलों में बच्चे अपने माता–पिता का धर्म अपनाते हैं। हर धर्म अपने स्वयं की धार्मिक विधियों, अनुष्ठानों, परम्पराओं, समारोहों, पोशाकों, भाषाओं, विश्वासों और अभिवृत्तियों आदि का पालन करता है जोकि अन्य धर्मों से भिन्न होते हैं। उप व्यवस्था के अन्तर्गत भी प्रतिदिन के व्यवहार में अन्तर है। विविध धर्मों में विवाह समारोहों को देखना क्या मनोरंजक नहीं है जैसा कि सभी अपने धर्म के लिए अद्वितीय हैं? ये सैद्धान्तिक अन्तर विभिन्न सम्प्रदायों के सदस्यों में सामाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से संचरित होते हैं।

यद्यपि बाद के बाहरी प्रतीक जैसे पहनावा अथवा भाषा अधिक या कम एकरूप हो गये हैं फिर भी प्रक्रिया में भिन्नतायें हैं।

धर्म व्यक्ति को अपने समुदाय और समाज के कल्याण हेतु सेवा करने के लिए प्रेरित करता है। चूँकि धर्म का आध्यात्मिक सूत्र व्यक्ति के जीवन ढाँचे के साथ निकट से अन्तर्ग्रथित होता है, उसका अधिकतर व्यवहार इसी के द्वारा नियन्त्रित होता है। उदाहरण के लिए बच्चों को विविध प्रकार के नैतिक सिद्धान्त और मूल्य पढ़ाये जाते हैं जिनका कि उन्हें प्रतिदिन के कार्य सम्पादन में अनुसरण करना होता है। भय का भाव उनके दिमागों में भर दिया जाता है जिससे वे नियमों और सिद्धान्तों का पालन करना अच्छा समझते हैं बजाय इसके कि परिणामों अथवा दण्ड को देखें। धर्म मानव प्राणियों के बीच भक्ति, सत्य, भाईचारा और मैत्री के गुणों पर बल देता है।

दुर्भाग्य से धर्म के नाम पर बहुत से युद्ध लड़े जाते हैं। यद्यपि सभी धर्मों का मूल सन्देश है एक ही परम सत्ता में विश्वास फिर भी संकुचित दिमाग वाले और असामाजिक तत्व अनैतिक और समाजिक रूप से गैर जिम्मेदार क्रियाओं में लग जाते हैं जो मानवता के लिए असंख्य विपत्तियाँ लाते हैं। समाजिक प्राणी होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है कि हम प्रत्येक धर्म के मूल्य, प्रत्येक सदस्य के विशेष धार्मिक सिद्धांतों की प्राथमिकता का आदर करें और ठीक उसी समय धर्मनिरपेक्षता की प्रशंसा करें।

सामाजिक वर्ग

सामाजीकरण में सामाजिक वर्ग की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। सामाजीकरण और सामाजिक वर्ग में घनिष्ठ सम्बंध है। सामाजिक वर्ग को न तो वैधानिक रूप से परिभाषित किया जा सकता है और न ही धार्मिक रूप से स्वीकृत किया जा सकता है। इसे सामान्यतया एक ही प्रकार की स्थिति, धन और आय प्राप्त करने वाले लोगों का स्तर कहा जाता है। हमारा समाज अनेक सामाजिक वर्गों में वर्गीकृत अथवा स्तरीकृत किया गया है। जिस तरीके से समाज के संसाधनों को वितरित किया गया है, वह इन स्तरों (परतों) में असमान है। ऊपरी परतें उन लोगों के द्वारा अध्यसित की गई हैं जिनके पास अधिक संसाधन है और निम्न परतें उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जिनके पास कम संसाधन हैं। सामाजिक वर्ग लोगों के एक ऐसे वर्ग के रूप में चिन्हित किया जाता है जो धन, आय, शिक्षा और पेशे जैसे कारकों से सम्बन्धित एक ही जैसी स्थिति को साझा करते हैं। इनमें से प्रत्येक वर्ग के अपने विश्वास, अभिवृत्तियाँ, राय और विश्व दृष्टि होती/होता है। अतः यह निश्चित रूप से स्वाभाविक है कि एक विशेष वर्ग में पैदा हुआ बच्चा सामाजिक वर्ग के द्वारा बनाये गये मानदण्डों के द्वारा सामाजीकृत किया जायेगा, जो कि बदले में सम्पत्ति के सम्बन्धों द्वारा मार्गदर्शित किये जाते हैं। यहाँ वर्ग की भूमिका उस रूप में प्राथमिक निर्धारक हो जाती है जिसमें सामाजीकरण की प्रक्रिया को कार्यान्वित किया जाता है और व्यक्तियों की रूपरेखा को आकार प्रदान करने में एक अभिकर्त्ता के रूप में। वर्ग व्यवस्था में स्थिति जीवन के प्रत्येक पहलू को वस्तुतः प्रभावित करती है, चाहे वह शिक्षा, राजनीतिक सम्बन्धन, कार्य प्राथमिकता अथवा लिंगीय व्यवहार हो।

सामाजिक वर्ग लक्ष्य निर्धारण के सन्दर्भ में भी प्रासंगिक है। कामकाजी वर्ग अथवा निम्न वर्ग के माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा देते हैं कि सफलता सत्ता के अनुसार चलने पर निर्भर है लेकिन मध्यवर्ग के बच्चों को भविष्य के लक्ष्य की ओर निर्देशित किया जाता है। उनके माता–पिता अध्ययन में सफलता के लिए विद्यालयों के कार्य को सामाजीकरण के अनिवार्य अभिकरणों के रूप में पुनर्बलित करते हैं। एक विशेष सामाजिक वर्ग के अन्तर्गत बच्चों के पालन–पोषण की पद्धति एक जैसी नहीं हो सकती।

कभी–कभी बच्चे परिवार और विद्यालय द्वारा समर्थित मूल्यों में भिन्नताओं के द्वारा प्रभावित

हो सकते हैं। घर पर बच्चे के संज्ञानात्मक विकास को प्राथमिकता नहीं दी जाती जबकि विद्यालय में शैक्षणिक निष्पादन पर जोर दिया जाता है। इस प्रकार के बच्चे निरन्तर भ्रम की स्थिति में होते हैं। पुनः पिता की व्यावसायिक भूमिका और बच्चे की सामाजीकरण–अवस्थितियों में भिन्नता में सम्बन्ध देखा जाता है। उदाहरण के लिए चूँकि एक कामकाजी वर्ग का पिता अपनी कार्य स्थिति में कम स्वतंत्रता और सन्तुष्टि का अनुभव करता है वह अपने परिवार के सदस्यों विशेषरूप से अपने बेटे की तरफ सख्त रहने की ओर अग्रसर रहता है।

अपनी प्रगति जाँचें – 2

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

i) अपने आस–पड़ोस के पार्क में खेलते हुए बच्चों को देखिये। क्या आप इस बात में कोई अन्तर पाते है कि किस प्रकार लड़के और लड़कियाँ समूह बनाते हैं अथवा वे किस प्रकार का खेल खेलते हैं? इस पर एक नोट तैयार कीजिए।

....

....

....

....

3.4.3 बृहत् स्तरीय सामाजीकरण : वैश्विक समुदाय, इलेक्ट्रानिक मीडिया, सामाजिक संजाल

बृहत् स्तर में बड़ी इकाइयाँ शामिल होती हैं। यहाँ पर हम सम्पूर्ण राष्ट्रों, वैश्विक शक्तियों और अन्तर्राष्ट्रीय इकाइयों को देखेंगे।

वैश्विक समुदाय

हम आविष्कारों और नवाचारों के युग में जी रहे हैं। आज हमारे जीवन का प्रत्येक पहलू व्यापक परिवर्तन की तरफ अग्रसर है। हमारे जीवन को बदलने में प्रौद्योगिकी ने आश्चर्यजनक कार्य किए हैं। हमारा भूमण्डल सिकुड़ गया है, भौगोलिक सीमायें गायब हो रही हैं, दूरियाँ घट गयी हैं और सम्प्रेषण संजाल (नेटवर्क) ने सारे संसार के लोगों को जाति, प्रजाति अथवा क्षेत्र के अवरोधों को दूर करते हुए एक साथ कर दिया है। हम सम्प्रेषण गति–विज्ञान को नया रूप दे रहे हैं और एक वैश्विक समुदाय अथवा वैश्विक गाँव की तरफ बढ़ रहे हैं।

इन दिनों यह आसानी से देखा जा सकता है कि सूचना तक बढ़ी हुई पहुँच किस प्रकार मानवता के ''समूह'' के लिए सांस्कृतिक अवसरों में वृद्धि के लिए आगे बढ़ रही है। ऐतिहासिक रूप से सांस्कृतिक अवसरों में वृद्धि के लिए आगे बढ़ रही है। ऐतिहासिक रूप से, सांस्कृतिक अवसर तार्किक रूप से धनी या धनाढ्य लोगों के विशेषाधिकार थे। अब सामाजीकरण के लिए वृहत् कार्य क्षेत्र की ओर अग्रसर होते हुए पूरे संसार में बहुत से अवसरों सहित परिदृश्य व्यापक रूप से खुला है।

आइए हम यह पता लगायें कि किस प्रकार जन संचार माध्यम (मास मीडिया) और सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग) सामाजीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं।

जन संचार माध्यम

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आपका जीवन मुद्रित शब्दों, टेलीविजन, रेडियो और मोबाइल फोन के बिना कैसा होगा? असंभव, क्या ऐसा नहीं है?

यह है संचार माध्यम की शक्ति

अभी तक आपने पढ़ा कि समाज कैसे नवयुवकों को अभिभावकों, विद्यालयों और सहसमूहों द्वारा प्रभावित करता है लेकिन एक अन्य माध्यम जो सामाजीकरण को प्रभावित करता है वह है संचार माध्यम। आज सभी समाजों एवं संस्थाओं में गति को महसूस किया जा सकता है। इसमें जन संचार माध्यम की आवश्यकता विशेष रूप में है। संचार माध्यम एक ऐसा माध्यम है जिससे सूचना को व्यापक स्तर पर व्यापक लोगों के बीच में पहुँचाया जा सकता है। ''मीडिया'' लैटिन के 'मिडिल' से लिया गया है जिसका अर्थ है लोगों से जुड़ना। मीडिया यह परिभाषित करने में यांत्रिक है कि हम क्या सोचते हैं, कैसे समाज में सामाजिक स्थान और मुद्दों को देखते हैं।

संचार माध्यम में ही प्रिंट मीडिया जैसे किताबें, अखबार, पत्रिकाएं आदि आती हैं तथा नान प्रिन्ट मीडिया जैसे रेडियो, टेलीविजन एवं फिल्में। इसका उद्देश्य भेजने वाले और प्राप्त करने वाले के बीच में बिना किसी व्यक्तिगत परिचय के व्यापक लोगों तक पहुँचता है। यह समाज के सभी रूपों को छूता है चाहे वह राजनीतिक, भाषायी, सांस्कृतिक व धार्मिक हो। मीडिया सर्व विद्यमान है; इसका कार्य बड़ा सूक्ष्म है और इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभाव हैं।

इस सहस्राब्दि में मीडिया का विशेष प्रभाव है। हमारा पर्यावरण विविध प्रकार के मीडिया से अतिसंतृप्त है जो कि बहुत से वाद–विवादों और चर्चाओं को जन्म देता है– क्या टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय वस्तु और वीडियो खेल बच्चों को अधिक आक्रामक बनाते हैं? क्या इस प्रकार के प्रदर्शन उन्हें कम संवेदनशील बनाते हैं? क्या टेलीविजन बच्चों को अन्तर्मुखी बना रहा है? क्या मीडिया का तीव्र प्रदर्शन शैक्षणिक सफलता के लिए हानिकारक है? इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते समय हमें इसके लाभों को बढ़ा–चढ़ाकर बताकर अथवा इसके हानिकारक स्वभाव की आलोचना में हमें सावधान रहना है। इसे समझने के लिए हम टेलीविजन के मामले को लेते हैं।

विगत कुछ दशकों में बच्चों को विशेष रूप से केवल एक ही साधन अर्थात् टेलीविजन द्वारा नाटकीय ढंग से सामाजीकृत किया गया है। इस समय, असल में, प्रत्येक घर में कम से कम एक टेलीविजन सेट है। निम्नलिखित अध्ययन को पढ़कर आप सामाजीकरण के शक्तिशाली अभिकर्त्ता के रूप में टेलीविजन के प्रभाव को समझ सकते हैं :

> शिन चान (Shin Chan) पर 4 दिसम्बर 2008 को प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। माता–पिता शिन चान कार्टून शो में दिखाये गये उपद्रवी विवरण और कृत्यों के बारे में चिन्तित हैं। कार्टून श्रृंखला में पाँच साल के एक लड़के द्वारा अपने माता–पिता के जीवन को दयनीय बनाते हुए दिखाया गया है। ''इस श्रृंखला का छोटे बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव था। इसका पात्र ऐसे कार्य करता है जो भारत में निषिद्ध है।,''
>
> एक दो बच्चों की माँ ने कहा। भारतीय अभिभावकों की चिन्ताएं निराधार नहीं हैं।
>
> (**स्रोत** *: सेनगुप्ता, रजित (2008, दिसम्बर 04). इंडिया बैन्स टेलीकास्टिंग ऑफ शिन चान. मेरीन्यूज. http://myshinchan.hpage.co.in shin_chan_was_banned_in_ india_ 41280135, से लिया गया*)

यह केवल टेलीविजन देखने के प्रतिकूल प्रभावों पर विशेष बल देता है विशेष रूप से हिंसा पर। यद्यपि टेलीविजन में ज्यादातर अनुसन्धान टेलीविजन के प्रभाव – असामाजिक व्यवहार, विशेष रूप से हिंसा पर हुए हैं, फिर भी हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि बच्चे मान्य राजनीतिक और सामाजिक सूचना टेलीविजन से प्राप्त करते हैं; उसका

विवेकपूर्ण प्रयोग हितकर लाभांश दे सकता है। पुस्तकें भी अपनी विषय वस्तु के माध्यम से पाठकों को प्रभावित कर सकती हैं। लेकिन कभी–कभी लिंग–रूढ़िबद्ध धारणायें भी कहानियों और उपाख्यानों में नायकों और दृष्टान्तों के माध्यम से चलती रहती हैं।

इस सन्दर्भ में इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका की चर्चा करना उचित होगा।

इलेक्ट्रानिक मीडिया

हमारे जैसे विकासशील देश में टेलीविजन और कम्प्यूटर सामाजीकरण के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अभिकरण हो गये है। हमने नवयुवकों पर टेलीविजन के प्रभाव को पहले ही देख लिया है। इन्टरनेट और सेल फोन संसार के सभी लोगों के बीच तीव्र गति से सामान्यता और सम्बद्धता स्थापित कर रहे हैं। अब बच्चे इस प्रकार की दुनिया से प्रभावित हो रहे हैं जोकि उनके घर और समुदाय से परे वैश्विक समुदाय है और इस तरह से सामाजीकृत हो रहे हैं कि वे वैश्विक दुनिया के अनुरूप हो सकें।

सामाजिक साइट जैसे फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम आदि एक बिल्कुल नयी दुनिया खोलते हैं और बच्चे के दिमाग को विभिन्न संस्कृतियों में प्रस्तुत करते हैं जिसे कि वह नहीं जानता/जानती और नये संसार से परिचित कराये जाते हैं। आर्कुट से फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम, व्हाट्स एप और टम्बलर तक की प्रगति इतनी तीव्र हो गयी है कि समयवश हर कोई इस प्रकार की किसी भी साइट के विवरण सीख जाता है और दूसरे पर आक्रमण करता है। इस प्रकार की साइटों तक पहुँच केवल हमारे कम्प्यूटरों में जन संचार माध्यम के द्वारा ही नहीं है बल्कि हमारे आई–पैड और सेल फोनों पर भी आसानी से उपलब्ध है।

सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग) और अप्रत्यक्ष समुदाय (वर्चुअल कम्युनिटीज)

आस्ट्रेलिया में 2009 में वेबसाइट में 'वन मिलियन' (One Million) नाम का अभियान चलाया गया। इसका उद्देश्य था शक्तिशाली, प्रेरणादायक महिलाओं और लड़कियों का आन्दोलन चलाना जो कम कार्बन वाले जीवन को बढ़ावा देते हुए जलवायु परिवर्तन पर काम कर रही हों। नेटाली इसाक (Natalle Issacs) वेबसाइट के माध्यम से, दस लाख प्रवर्तकों ने महिलाओं से इस अभियान–''मै विश्वास करता हूँ कि दस लाख महिलायें दस लाख और महिलाओं को बतायेंगी और दस लाख समुदायों को आगे बढ़ायेंगी'' (I BELIEVE A MILLION WOMEN WILL TELL A MILLION MORE AND LEAD A MILLION COMMUNITIES) में शामिल होने के लिए महिलाओं से अपील की। इसका प्रभाव चौंका देने वाला था। आस्ट्रेलिया के सबसे बड़े महिलाओं के पर्यावरणी संगठन बनने के लिए एक करोड़ महिलायें बढ़ गई हैं जो कि 1,00,000 टन से भी अधिक कार्बन प्रदूषण कम करने के लिए वचनबद्ध हैं। सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग) और अप्रत्यक्ष समुदायों (वर्चुअल कम्युनिटीज) का इस प्रकार प्रभाव है।

सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग)

सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग) का अर्थ है किसी के परिवार के सदस्यों, मित्रों, सहपाठियों, मुवक्किलों अथवा ग्राहकों के साथ जुड़ने के लिए इन्टरनेट आधारित सामाजिक मीडिया कार्यक्रम का प्रयोग करना। यह लोगों को अपनी सामान्य अभिरूचियों, पसन्द और नापसन्द का आदान प्रदान करने के लिए एक मंच प्रदान करता है और सामाजिक सम्पर्क बनाता है। यह मल्टीमीडिया और नवीन इलेक्ट्रानिक सम्प्रेषण प्रौद्योगिकियों जैसें– ई–मेल और इन्टरनेट द्वारा सुविधाजनक बनाया जाता है।

अप्रत्यक्ष समुदाय (वर्चुअल कम्युनिटीज) ऑनलाइन समुदाय हैं जहाँ पर सारे संसार के लोग सामाजिक मीडिया के माध्यम से एक दूसरे के नजदीक लाये जा सकते हैं। वे इलेक्ट्रानिक संचार सम्बन्धी साइबर स्थान का आदान–प्रदान करने वाले सामान्य विचारों

और अभिरूचियों वाले लोगों के लघु समूह हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि सेल फोन एप्स (Apps), सेल्फीज (Selfies) और इमोजिस (Emojis) से लैस हैं। हालाँकि अनुसन्धान यह दर्शाता है कि नयी संचार प्रौद्योगिकियाँ न केवल हमारे सामाजिक सम्बन्धों को पुनर्बलित करती हैं बल्कि उन्हें और ठीक तरह से और गहरा करती हैं। संचार सेटलाइट, केबल नेटवर्क, संगणक व्यवस्था (कम्प्यूटर सिस्टम) और इनके प्रयोग और विचार आधुनिक जीवन शैली के लिए अपरिहार्य हो गये हैं।

कुछ लोग तर्क कर सकते हैं कि ऑनलाइन समुदाय पारम्परिक समुदायों को प्रतिस्थापित कर रहा है लेकिन ऐसा नहीं है। वास्तव में वे उन्हें केवल पूरा करते हैं। सूचना विस्फोट के इस युग में नयी संचार प्रौद्योगिकियों के समुचित प्रयोग के अन्तर्गत सामाजीकृत होना अनिवार्य हो गया है। सम्बन्धों का व्यक्तिगत संजाल (नेटवर्क) आमने–सामने की अन्तःक्रियाओं के द्वारा और बिना उसके भी बनाया जा सकता है।

बचपन के दोस्तों का पता लगाना, समूह निर्माण, प्रतिक्षण स्वयं अद्यतन होना सभी कुछ सम्भव है, डिजिटल मीडिया नेटवर्क को धन्यवाद।

नयी संचार प्रौद्योगिकियाँ नवीन और विभिन्न प्रकार की सामाजिकता को स्वीकार करती हैं। लड़के परम्परागत की तुलना में इसे अधिक आकर्षक पाते हैं क्योंकि हर कोई अपनी पसन्द और नापसन्द के आधार पर चुनिन्दा हो सकता है। अप्रत्यक्ष समुदायों (वर्चुअल कम्युनिटीज) में लिंग, प्रजाति और अन्य आरोपित स्थितियाँ अप्रासंगिक हैं। हालाँकि ढीठ होने पर हर किसी को इसके अधिक गहराई में जाने के खिलाफ चेतावनी अवश्य दी जानी चाहिए। इन्टरनेट आधारित अश्लील साहित्य की व्यापक उपस्थिति के कारण युवकों में सामाजिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। इसके खिलाफ केन्द्रीय जाँच ब्यूरो ने चेतावनी दी है। इसे हमारे देश में यौन हमलों से सम्बन्धित अपराधों के निरंकुश उद्भव से सह सम्बन्धित किया जा सकता है। (द टाइम्स ऑफ इंडिया, अक्तूबर 11, 2015)। नकारात्मक प्रभावों के बावजूद वैश्विक इकाइयाँ जैसे जनसंचार, इलेक्ट्रानिक मीडिया और अप्रत्यक्ष समुदाय (वर्चुअल कम्युनिटीज) सामाजीकरण की प्रक्रिया में लगातार योगदान दे रही हैं।

अपनी प्रगति जाँचें – 3

नोट : (क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ख) अपने उत्तरों की तुलना इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से करें।

1) रिक्त स्थान भरिये।

अ) मास मीडिया में .... और .... शामिल हैं।

ब) अप्रत्यक्ष समुदायों (वर्चुअल कम्युनिटीज) को .... समुदायों (कम्युनिटीज) के रूप में भी जाना जाता है।

स) अप्रत्यक्ष समुदायों (वर्चुअल कम्युनिटीज) के उदाहरण ______ ,_______और .... हैं।

2) व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार नयी संचार प्रौद्योगिकियाँ सामाजिकता के नये और विभिन्न रूपों को स्वीकार करती हैं।

....

....

....

....

3.5 सारांश

इस इकाई में हमने आजीवन प्रक्रिया के रूप में सामाजीकरण की आधारभूत संकल्पना और किस प्रकार यह विविध अभिकर्त्ताओं द्वारा कार्यान्वित की जाती है, की चर्चा की है। हमने आपको सामाजीकरण के विविध अभिकरणों से अवगत कराया और यह स्पष्ट किया कि प्रत्येक अभिकरण किस प्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्व को गठित करने में योगदान देता है। सामाजीकरण के अभिकर्त्ताओं को लघु, मध्य और वृहत् स्तरों में वर्गीकृत किया गया है और प्रत्येक स्तर पर प्रक्रिया को क्रम से बताया गया है। लघु स्तर पर परिवार, समसमूह और आस–पड़ोस सामाजीकरण के मुख्य अभिकरण हैं। परिवार सामाजीकरण में निर्णायक भूमिका अदा करता है। हमने परिवार में किशोरों के सामाजीकरण की भी विस्तार से चर्चा की है। मध्य स्तर पर अन्य अभिकरणों की भूमिका जैसे विद्यालय, धर्म और सामाजिक वर्ग महत्त्वपूर्ण हो जाती है। विद्यालय एक समाज है जहाँ पर विभिन्न परिवारों, धर्मों, जातियों और आर्थिक स्थिति के बच्चे साथ–साथ आते हैं, सामूहिक क्रियाओं में भाग लेते हैं और समाज में समायोजित होना सीखते हैं। यहाँ सामाजीकरण के एक अभिकर्त्ता के रूप में अध्यापक का महत्त्व माना गया है। हमने प्रत्येक स्तर पर लिंग सामाजीकरण की भी चर्चा की है। धर्म की भूमिका बहुत शक्तिशाली है; ऐसे ही सामाजिक वर्ग के साथ अन्तःक्रिया है। वृहत् स्तर पर लाभों के साथ–साथ जनसंचार मीडिया के नकारात्मक प्रभाव और इलेक्ट्रानिक मीडिया की भी सोदाहरण व्याख्या की गई है। सामाजिक संजाल (सोशल नेटवर्किंग) केवल सामाजीकरण को ही सहज नहीं बनाता अपितु दूसरों को बेहतर ढंग से समझने की योग्यता को भी बढ़ाता है।

3.6 इकाई अंत्य अभ्यास

1. सामाजीकरण क्या है? सामाजीकरण के चरण क्या हैं?
2. परिवार को सामाजीकरण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अभिकर्त्ता क्यों कहा जाता है?
3. सामाजीकरण के अभिकरण के रूप में विद्यालय की भूमिका की चर्चा कीजिए।
4. विविध प्रकार के जनमाध्यमों (मास मीडिया) का उल्लेख कीजिए।

3.7 आपकी प्रगति जाँच के उत्तर

1. i) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेले नहीं रह सकता। वह दूसरों के साथ विविध अभिकरणों के माध्यम से सतत अन्तःक्रिया करती/करता है। इस तरह सामाजीकरण हर किसी के व्यक्तित्व को गठित करने में योगदान देता है। सामाजीकरण का अभाव वृद्धि और विकास में बाधक होगा। अतः सामाजीकरण अनिवार्य है।

2. i) अपनी स्वयं की टिप्पणी लिखिये।

3. i) (अ) प्रिन्ट माध्यम (प्रिन्ट मीडिया) और गैर प्रिन्ट माध्यम (नान प्रिन्ट मीडिया)

   (ब) ऑनलाइन समुदाय (ऑनलाइन कम्युनिटी)

   (स) फेसबुक, ट्विटर

   ii) नयी संचार प्रौद्योगिकियाँ सामाजिकता के नये और विभिन्न रूपों को स्वीकार करती हैं। संचार की परम्परागत विधियों से भिन्न सम्बन्धों के व्यक्तिगत संजाल (नेटवर्क) आमने–सामने की अन्तःक्रियाओं के द्वारा और (नहीं अथवा) बिना आमने–सामने की अन्तःक्रियाओं के द्वारा बनाये जा सकते हैं। इसके अलावा संचार प्रौद्योगिकी में प्रगति ने लोगों को नजदीक किया है। अब बचपन के

दोस्तों का पता लगाना, समूह बनाना, मिनट दर मिनट अद्यतन रहना सभी डिजिटल मीडिया नेटवर्क के कारण सम्भव हैं। पुनः व्यक्ति अपनी चयन प्रवृत्ति को काम में ला सकते हैं। इसके अलावा अप्रत्यक्ष (वर्चुअल) समुदायों (कम्युनिटीज) में लिंग, प्रजाति और अन्य आरोपित स्थितियाँ अप्रासंगिक हैं।

3.8 सन्दर्भ एवं उपयोगी सामग्री

अरनाट, जे.जे. (1995). ब्रॉड ऐन्ड नैरो सोशियलाइजेशन : द फेमिली इन द कान्टेक्स्ट ऑफ ए कल्चरल थियरी, जर्नल ऑफ मैरिज ऐंड द फेमिली, वाल्युम. 57 न. 3 (अगस्त, 1995), पी.पी. 617–628.

बैलेन्टाइन. जे0, एच. & स्पेड, जे. जेड. (2015). स्कूल्स ऐन्ड सोसायटीः ए सोशियोलॉजिकल अप्रोच टु एजूकेशन. नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन्स, इंक.

बौमरिन्ड, डी. (1991). पैरेन्टिंग स्टाइल्स ऐन्ड एडोल्सेंट डेवलपमेंट. इन जे ब्रुक्सगन, आर लर्नर & ए.सी पेटर्सम (Eds.), दि इन्साइक्लोपीडिया ऑफ ऐडोल्सेंस, न्यूयार्क : गारलैंड पब्लिशिंग.

बोर्डियो, पी. (1990). द लॉजिक ऑफ प्रैक्टिस. स्टैनफोर्ड, सी.ए. : स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

ब्रूबेकर, जे.एस. (1939). माडर्न फिलॉसफीस ऑफ एजूकेशन, न्यूयार्कः मैकग्राहिल.

कर्टिस, सुसन. (1977) ए साइकोलिंगुइस्टिक स्टडी ऑफ ए माडर्न–डे – ''वाइल्ड चाइल्ड'' न्यूयार्क : एकैडिमिक प्रेस, इंक.

डेवीस, मार्क ऐंड कन्डेल, डी.बी. (1981). 'पैरेंटल ऐन्ड पीयर इन्फ्लूएंसेज ऑन एडोल्सेंट्स' एजूकेशनल प्लान्सः सम फर्दर एविडेन्स. अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी 87 : 363–87,

हैन्डिल, जी. काहिल ऐंड इलिन, एफ. (2007) चिल्ड्रेन ऐण्ड सोसाइटी : दि सोशियोलॉजी ऑफ चिल्ड्रेन ऐण्ड चाइल्डहुड सोसियालाइजेशन. लंदन : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

कोन, एम. (1965). सोशल क्लास ऐंड पेरेंट–चाइल्ड रिलेशनशिप्स : ऐन इन्टरप्रिटेशन. अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलाजी, 68,471–480

महापात्र, डी. (2015, अक्टूबर 11), यूबिक्विटी ऑफ पोर्न लीडिंग इंडिया टु सोशल क्राइसिसः सी बी आई. टाइम्स ऑफ इंडिया. http://timesofindia.indiatimes.com.india/Ubiquity-of-porn-leading-India-to social-crisis-CBI/articleshow/49306899.cms से लिया गया.

न्यूमैन, डी.एम., (2014). सोशियोलॉजी : एक्सप्लोरिंग द आर्किटेक्चर ऑफ इव्रीडे लाइफ, नयू दिल्लीः सेज पब्लिकेशन्श

पाई, ल्यूसियन. (Ed.). (1963). कम्यूनिकेशन्स ऐंड पोलिटिकल डेवलपमेंट, प्रिन्सटन, एन. जे : प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस

सलीम, सहीम. (2011, अप्रैल 14). हॅन्टिंग टेल ऑफ टू सिस्टर्स हू लाक्ड द वर्ल्ड आउट. http://www.rediff.com/news/report/haunting-tale-of-the-two-sisters-who-locked-the-world-out/201102414.htm से लिया गया.

सेनगुप्ता, राजित. (2008, दिसम्बर 04). इंडिया बैन्स टेलीकास्टिंग ऑफ शिन चान. मेरिन्यूज. http://myshinchan.hpage.co.in/shin-chan-was-banned-in-india-41280135.html से लिया गया.

स्टेनबर्ग, एल. (2001). वी नो समथिंग्स पेरेंट ऐडोल्सेंट रिलेशनशिप्स इन रिट्रास्पेक्ट ऐंड प्रास्पेक्ट. जर्नल ऑफ रिफ्लेक्शन आन एडोल्सेंस, 11 (1).